सीनियर हायर सैकण्डरी

गद्य पद्य संग्रह

(सीनियर हायर सैकण्डरी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित अनिवार्य हिन्दी की पाठ्य पुस्तक का नोट्स)

दीपिका

महत्त्वपूर्ण व्याख्याओं एवं प्रश्नोत्तर सहित

☆

संजीव प्रकाशन

चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

(मूल्यः रु. 16.00

प्रकाशक:
संजीव प्रकाशन
चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3

मुख्य वितरक :
आदर्श प्रकाशन
चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
फोन : 61771

मूल्य : रु. 16.00

कम्पोजिंग : **मित्तल कम्प्यूटर प्रिन्टर्स,**
गंगा माता की गली, गोपाल जी का रास्ता, जयपुर

मुद्रक : जे. के. ऑफसैट, दिल्ली

विषय सूची

गद्य खण्ड

पद्य खण्ड

गद्य खण्ड

1. 'मानस' की धर्म-भूमि

निबन्ध सार—प्रस्तुत निबन्ध आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित और उनके 'चिन्तामणि भाग-1' नामक ग्रन्थ से संकलित है। इस निबन्ध में शुक्लजी ने धर्म के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डालकर 'रामचरितमानस' में चित्रित धर्मभूमि का विवेचन किया है।

आचार्य शुक्ल के कथनानुसार धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति है। ब्रह्म के सत्स्वरूप की प्रवृत्ति का नाम धर्म है और इस प्रवृत्ति का साक्षात्कार परिवार और समाज के छोटे क्षेत्र से लेकर समस्त विश्व के बीच किया जा सकता है। इसके लिए हम जिस प्रकार की भावना अपनाते हैं, उतनी ही विस्तृत हमारी सत्स्वरूप की प्रवृत्ति हो जाती है और तब सच्चे भक्त की भावना अपने भीतर के चित्त से बाहर स्थित 'सत्' का साक्षात्कार कर 'आनन्द' की अनुभूति करता है। सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति, जिसे हम धर्म कहते हैं, उसकी ऊँची-नीची कई भूमियाँ लक्षित होती हैं, जैसे गृहधर्म, कुलधर्म, समाजधर्म, लोकधर्म और विश्वधर्म या पूर्णधर्म। किसी सीमित वर्ग के कल्याण से सम्बन्धित धर्म की अपेक्षा विस्तृत जनसमूह के कल्याण से सम्बन्ध रखने वाले धर्म को उच्च कोटि का माना जाता है। धर्म की इन सभी भूमियों में पूर्ण धर्म ही अखिल विश्व की स्थिति का रक्षक है और यह पुरषोत्तम स्वरूप होने से इसकी अनुभूति सच्चे भक्तों में होती है।

गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-पद्धति ब्रह्म के सत्स्वरूप की अभिव्यक्ति और प्रवृत्ति को लेकर चली है। उनके राम पूर्ण धर्म-स्वरूप हैं। उन्होंने राम की लीलाओं में धर्म के विविध स्वरूपों का प्रकाश देखा है और उनकी व्यक्त कलाओं में ही अपना हृदय रमाया है। इस कारण तुलसी का भक्ति-मार्ग ब्रह्म का सत्स्वरूप पकड़कर धर्म की नाना भूमियों पर से होता हुआ जाता है। इस सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल का मत है कि हमारे शास्त्रों में जो मोक्ष-मार्ग बतलाया गया है, वह धर्म-मार्ग से अलग नहीं है। धर्म का विकास इसी लौकिक जीवन में हमारे परस्पर व्यवहार से होता है और हमारे व्यवहारों का प्रेरक हमारा भावात्मक हृदय होता है। तुलसीदास की भक्ति में धर्म और ज्ञान का भी समन्वय रहा है, फिर भी उसमें धर्म का योग पूर्ण परिमाण में है।

'रामचरितमानस' में धर्म की ऊँची-नीची सभी भूमियों के दर्शन हो जाते हैं। उदाहरण के लिये अत्यन्त पावन चरित्र वाले भरत ने कुलधर्म या गृहधर्म की नीची भूमि का उल्लंघन करके लोकधर्म और विश्वधर्म का पालन किया और उन्होंने राम का विरोध करने वाले को धर्म का विरोधी बताया। भरत की दृष्टि में राम पूर्ण धर्म-स्वरूप हैं, इसी कारण वे राम से सच्ची भक्ति और प्रेम रखते हैं। इसी प्रकार विभीषण भी कुलधर्म की अपेक्षा विश्वधर्म का आचरण करता है और परिवार की क्षुद्र सीमा का परित्याग कर धर्मस्वरूप राम की शरण में आ जाता है। वस्तुतः विभीषण के हृदय में उच्च धर्म भावना है, इसीलिए वह रावण के अत्याचारों का विरोध करके धर्म को विश्व कल्याण के व्यापक लक्ष्य की ओर प्रेरित करता है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या-स्थल

(1) धर्म की रसात्मक - - - - - - - दर्शन होते हैं। (पृ. 9-10)

प्रसंग—'मानस की धर्मभूमि' शीर्षक निबन्ध में आचार्य रामचन्द्र शु
धर्म के महत्त्व एवं स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए भक्ति से उसके सम्बन्ध को
किया है। इस अवतरण में शुक्लजी ने धर्म की प्रवृत्ति और स्वरूप की व्याख्
है।

व्याख्या—आचार्य शुक्ल कहते हैं कि भक्ति धर्म की रसात्मक अनु
अर्थात् व्यक्ति जब धर्म के स्वरूप को समझता है, तो उसे पता चल जाता
यह धर्म ही ब्रह्म का सत्स्वरूप है, अतः उसके साक्षात्कार के लिए तब व
समर्पणशीलता का परिचय देता है, वही सात्त्विक अनुभूति धर्म कहलाता
तरह ब्रह्म या इस संसार के नियन्ता परमात्मा के सत्स्वरूप की व्यक्त अर्थात्
दिखाई देने वाली प्रवृत्ति ही धर्म है, जो कि अत्यधिक विस्तृत और असीम
व्यक्त प्रवृत्ति की असीमता का पता हमें सारे विश्व की स्थिति में मिलता
प्रवृत्ति का साक्षात्कार हमें अपने परिवार और अपने सीमित समाज की तु
छोटी-सी सीमा में भी हो जाता है तथा सारे भूमण्डल और अखिल वि
व्यापक-असीम स्थिति में भी इसका साक्षात्कार हो जाता है। इस तरह
सत्स्वरूप की व्याप्ति छोटी-सी भूमि से लेकर उच्च से उच्च विस्तृत क्षेत्र
प्रत्येक व्यक्ति जब अपने घर-परिवार की रक्षा या भरण-पोषण क
लोक-समाज की रक्षा या कल्याण कार्य में प्रवृत्त होता है, सारे भूमण्डल या
रूप में सारे विश्व का हित-साधन करना चाहता है, तब उस शाश्वत
ब्रह्म के सत्स्वरूप की इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

आशय है कि धर्म का अर्थ सीमित या संकुचित नहीं है, यह तो
कल्याण की भावना पर आधारित ऐसा कर्म है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति परम
ब्रह्म का साक्षात्कार करता है और उसके प्रति अपने हृदय में भक्ति
अनुभूति का आनन्द पाता है। सारे विश्व में ब्रह्म के सत्स्वरूप की यह
प्रवृत्ति हमें दिखाई देती है।

विशेष—(i) भक्ति और धर्म का विवेचन किया गया है। ब्रह्म के
की व्यक्ति प्रवृत्ति असीम है और इसके आदि-अन्त का पता भी नहीं है।
इसे शाश्वत कहा जाता है। शुक्लजी ने धर्म का भावात्मक विवेचन किया

(ii) भाषा तत्सम-प्रधान और शैली सूत्रात्मक-विवेचानात्मक है।

(2) किसी परिमित - - - - - - - - - - - - -करती है।

प्रसंग—'मानस की धर्मभूमि' शीर्षक निबन्ध में आचार्य शुक्ल
ऊँची-नीची कई भूमियों की ओर संकेत किया है और उनमें कौन श्रेष्ठ
है तथा कौन निम्न, यह भी स्पष्ट समझाया है। इस अवतरण में पूर्ण धर्म
कोटि का धर्म बतलाकर सच्चे भक्त की अनुभूति पर प्रकाश डाला गया

मधुर

व्याख्या—आचार्य शुक्ल के कथनानुसार धर्म की ऊँची-नीची कई भूमियाँ लक्षित होती हैं, जैसे गृहधर्म, कुलधर्म, समाजधर्म, लोकधर्म और विश्वधर्म या पूर्णधर्म। इसमें गृहधर्म अत्यन्त सीमित है और यह अपने घर तक ही कल्याण की बात सोचता है, कुलधर्म में अपने कुल-गौरव का ही हित चिन्तन रहता है। लेकिन लोकधर्म या विश्वधर्म में सारे संसार के कल्याण की कामना रहती है। इसलिए किसी सीमित वर्ग के कल्याण की बात सोचने वाले धर्म की अपेक्षा विस्तृत जनसमूह के कल्याण से सम्बन्ध रखने वाला धर्म उच्चकोटि का है। धर्म की कौन-सी भूमि उच्च है और कौन-सी निम्न है अथवा कौन-सा धर्म उच्च और व्यापक है, इसका निर्णय इसके लक्ष्य से हो जाता है। यदि धर्म का लक्ष्य अत्यधिक व्यापक है तो वह उच्च कोटि का है। संक्षेप में जिससे अधिकाधिक प्राणियों का हित होता है, वह उच्च कोटि का धर्म माना जाता है। जैसे कि गृहधर्म या कुलधर्म अत्यन्त सीमित है, उसकी अपेक्षा समाजधर्म श्रेष्ठ है, क्योंकि उससे पूरे अपने समाज का कल्याण होता है। समाजधर्म से लोकधर्म और लोकधर्म से विश्वधर्म श्रेष्ठ है, क्योंकि विश्वधर्म की दशा में धर्म अपने आप में पूर्ण और शुद्ध स्वरूप में दिखाई देता है और उसमें व्यक्ति की छुद्रता, स्वार्थ, स्वहित आदि का लोप होकर सारे विश्व की कल्याण-भावना रहती है। ऐसी दशा में यह पूर्णधर्म अंगी है और शेष कुलधर्म, गृहधर्म आदि उसके अंग या सहायक हैं। इस पूर्णधर्म का सम्बन्ध सारे विश्व की स्थिति रक्षा अर्थात् कल्याण-कामना से है। अतः यह पूर्ण धर्म पुरुष या पुरुषोत्तम में ही रहता है, यह पुरुषोत्तम सत्स्वरूप राम ही है और कोई अन्य नहीं। इस सत्स्वरूप राम या ब्रह्म की मार्मिक एवं सच्ची अनुभूति केवल निर्लिप्त भावना वाले भक्तों को ही होती है। अर्थात् समस्त विश्व का कल्याण करने वाला तथा इसका पालन-रक्षण करने वाला ब्रह्म ही सत्स्वरूप धर्म है, जिसकी तात्त्विक अनुभूति उच्च कोटि के साधक भक्तों को हुआ करती है।

विशेष—(i) शुक्लजी ने इसमें धर्म विविध भूमियों में उसी को उच्च कोटि का माना है जो अधिक व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र वाला है। इस दृष्टि से विश्वधर्म ही पूर्णधर्म या उच्चकोटि का धर्म सिद्ध किया गया है।

(ii) भाषा शैली तत्सम प्रधान तथा विवेचनात्मक है।

(3) साधना किसी - - - - - - - - - - सम्बन्ध है। (पृ. 11-12)

प्रसंग—'मानस की धर्मभूमि' निबन्ध में प्रसंगवश मोक्ष का धर्म से समन्वय दिखा गया है। इस सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल ने स्पष्ट किया है कि लौकिक आचरण में जिस प्रकार रागात्मक सम्बन्ध प्रधान रहता है, उसी प्रकार भक्ति-मार्ग में समन्वयात्मक साधना की प्रधानता रहती है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए शुक्ल जी का कथन है कि—

व्याख्या—हमारे जीवन की पूर्णता धर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों के समन्वय में है। इनमें किसी एक का परित्याग करने से जीवन अपूर्ण रहता है। वैसे भी साधना चाहे किसी भी प्रकार की हो, वह साधक की पूरी सत्ता के साथ होनी

चाहिए, उसमें किसी एक अंग को सर्वथा छोड़कर साधना नहीं की जा सकती इस कार्य में यह हो सकता है कि कोई मोक्ष-मार्ग का साधक ज्ञान, भक्ति और (धर्म) में से ज्ञान को प्रधानता दे और धर्म तथा भक्ति या उपासना को अंग सहायक रूप में लेकर चले, अथवा यह भी हो सकता है कि वह भक्ति उपासना को प्रधानता दें तथा ज्ञान व धर्म (कर्म) को अंग रूप में रखकर चले। प्रकार वह साधक कोई भी पद्धति या मार्ग अपना सकता है और साधना सकता है, लेकिन उसकी साधना के लिए ये तीनों तत्त्व अनिवार्य और अपरित्य हैं।

शुक्लजी इस क्रम में बतलाते हैं कि गोस्वामी तुलसीदास समन्वया साधक थे। वे भक्ति को अर्थात् उपासना को प्रधानता देकर ज्ञान व कर्म को रूप में लेकर चलने वाले साधक थे। इस प्रकार वे भक्तिमार्गी थे और उ भक्ति-भावना में ज्ञान, कर्म तथा भक्ति इन तीनों का योग है। फिर भी उ भक्ति मार्ग में धर्म की पूर्ण प्रधानता है अर्थात् तुलसीदास की भक्ति-भावन धर्म-भावना का नित्य सम्बन्ध है। वे ब्रह्म के सत्स्वरूप की व्यक्ति प्रवृत्ति के श्रीराम की उपासना करते थे, इसलिये उनकी भक्ति या उपासना धर्म-भावन मण्डित रही है।

विशेष—(i) तुलसीदास की भक्ति-भावना का परिचय दिया गया है उन्हें उच्चकोटि का साधक एवं समन्वय अपनाने वाला बताया गया है।

(ii) भाषा तत्सम प्रधान, शैली विवेचनात्मक एवं भावात्मक है।

(4) एक ओर गृह-धर्म - - - - - - - - - जाता है। (पृ. 13)

प्रसंग—यह अवतरण 'मानस की धर्मभूमि' निबन्ध से सम्बन्धित है। आचार्य शुक्ल ने विभीषण के भ्रातृ-द्रोही अथवा कुल-द्रोही आचरण को उ धर्म-भावना अथवा भक्ति-भावना के समक्ष नगण्य बतलाया है।

व्याख्या—प्रायः विभीषण को घर का भेदी कहा जाता है, परन्तु देखा तो विभीषण ने उच्च धर्म भावना से ही रावण का साथ छोड़ा था। धर्म स्वरूप जितना व्यापक होता है, वह उतना ही उच्च होता है। विभीषण पहले गृह-धर्म और कुल-धर्म का पालन करता हुआ रावण को समझाने की चेष्टा क रहा, सीता-हरण का विरोध कर उसे श्रीराम से सम्बन्ध सुधारने के लिए क रहा, लेकिन जब रावण नहीं माना, तब विभीषण ने गृह-धर्म और कुल-ध श्रेष्ठ तथा उच्च लोकधर्म और विश्वधर्म का आश्रय लिया। इस प्रकार वह र के अत्याचारों से पीड़ित समस्त मानव-समाज एवं देव-समाज का हित-चिन्तक गया। उस समय उसके सामने गृह या कुल की संकुचित भावना क्षीण हो गई वह सम्पूर्ण लोक का कल्याण करने के लिए उद्यत हो गया। इस तरह देखा तो ऐसी द्वन्द्वात्मक स्थिति में सच्चे उपासक या भक्त की धर्म-भावना स्वार्थ सीमाओं में अर्थात् गृह या कुल के तंग घेरे में नहीं बंधती है, वह तो ऐसे अ

पर समस्त विश्व का कल्याण करने जैसे व्यापक लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है। इस कारण विभीषण भी घर-परिवार की तुच्छ सीमाओं का परित्याग कर, अपने भाई रावण का साथ छोड़कर शीघ्र ही लोक-कल्याणकारी धर्म का आश्रय लेता है और ब्रह्म के सत्स्वरूप तथा अवतार श्रीराम की शरण में जाता है। वे श्रीराम साक्षात धर्ममूर्ति अर्थात साक्षात् परम पुरुष थे तथा ब्रह्म के सत्स्वरूप के कारण पुरुषोत्तम कहलाते थे। उनकी शरण में जाने से विभीषण विश्व-धर्म या पूर्ण-धर्म की उच्च भूमि पर अधिष्ठित हो जाता है।

विशेष—(i) विभीषण की भक्ति भावना एवं धर्म भावना का सशक्त चित्रण किया गया है। तुलसीदास ने उसे भ्रातृ-द्रोही की अपेक्षा भगवद्भक्त सिद्ध किया है। यही मत आचार्य शुक्ल का भी है।

(ii) भाषा-शैली सरल, सुबोध, विषयानुकूल एवं विवेचनात्मक है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी बतलाइए—

उत्तर—

शब्द	समास-विग्रह	समास-नाम
कुलधर्म	कुल का धर्म	तत्पुरुष
भक्तिभावना	भक्ति की भावना	तत्पुरुष
नीलाम्बर	नीला है जो अम्बर	कर्मधारय
राम-वैदेही	राम और वैदेही	द्वन्द्व

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बतलाइए तथा उनको अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए—

उत्तर—(1) व्यक्त = प्रकट होना। मुझे अपने अच्छे विचार व्यक्त करने चाहिए।

(2) साक्षात्कार = मुलाकात, सम्मुख-दर्शन। भगवान का साक्षात्कार अपनी आत्मा में किया जा सकता है।

(3) आविर्भाव = प्रकट होना। त्रेता युग में श्रीराम का भगवान के अवतार रूप में आविर्भाव हुआ।

(4) सर्वोत्कृष्ट = सबसे श्रेष्ठ। मानवता का आचरण करना सर्वोत्कृष्ट आचरण कहलाता है।

प्रश्न 3. कुल धर्म से विश्व-धर्म को श्रेष्ठ क्यों माना गया है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर—कुल-धर्म सीमित क्षेत्र के कल्याण का चिन्तन करने वाला है; उसमें केवल अपने परिवार के लोगों का हित चिन्तन रहता है। एक प्रकार से वह

संकुचित स्वार्थ पर आधारित रहता है और कुल धर्म का निर्वाह करने वा घेरे के भीतर आबद्ध रहता है। इसके विपरीत विश्व धर्म अत्यधिक व्या उसमें सारे लोक के कल्याण का चिन्तन रहता है तथा स्वार्थ की अपेक्षा प महत्त्व दिया जाता है। विश्व-धर्म का लक्ष्य अत्यन्त व्यापक रहता है। एक से इसमें वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रहती है। इसी कारण इसे पूर्णध पुरुषोत्तम स्वरूप भगवान राम या ब्रह्म में रहने वाला धर्म कहा गया है तरह स्पष्ट होता है कि कुल-धर्म अत्यन्त संकुचित और सीमित है विश्व-धर्म अखिल विश्व की स्थिति-रक्षा एवं मंगलकामना के कारण अ व्यापक एवं सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

प्रश्न 4. 'धर्म की रसात्मक अनुभूति ही भक्ति है।' इस कथन की कीजिए।

उत्तर—धर्म का सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। किसी कर्म से जब अन्तरात्मा को रस या आनन्द की अनुभूति होती है, तब हम उस कर्म क निरन्तर प्रवृत्त होने की चेष्ठा करते रहते हैं। इस तरह हम ब्रह्म के सत्स्व साक्षात्कार करने की साधना करने लगते हैं, जो कि उपासना या भक्ति अतः हमारे उच्च कर्म या धर्म से जो उपासना होती है, वही उसकी रसात्म आनन्दात्मक अनुभूति है। अतः आचार्य शुक्ल ने धर्म की इस रसात्मक अनुभू ही भक्ति कहा है।

प्रश्न 5. भरत के मुख से माता कैकयी को कटु शब्द कहने धर्मसम्मत क्यों कहा गया है? अपना मत स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—माता कैकयी ने छुद्र स्वार्थ की खातिर पूर्ण धर्म-स्वरूप श्रीर वनवास दिलाया था। एक प्रकार से कैकयी ने विश्व का कल्याण करने धर्मस्वरूप का विरोध किया था। भरत धर्मस्वरूप श्रीराम के सच्चे प्रेमी औ थे। वे गृह-धर्म या कुल-धर्म की अपेक्षा विश्व-धर्म को अधिक महत्त्व दे इसीलिए उन्होंने माता कैकयी को धर्म का विरोध करने से कटु शब्द गोस्वीमी तुलसीदास ने भरत के आचरण को इसलिए धर्मसम्मत बतलाया है लोक-कल्याण के पक्षधर थे और उसकी खातिर श्रीराम का विरोध करने वा धर्मविरोधी मानते थे।

**प्रश्न 6. 'जाके प्रिय न राम वैदेही
तजिए ताहि कोटि वैरी सम
अद्यपि परम सनेही।'**

इन पंक्तियों की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट कीजिए की 'मानस की ध से इस कथन का सीधा सम्बन्ध है?

उत्तर—राम साक्षात् धर्मस्वरूप थे और वे समस्त विश्व का कल्याण चाहते थे। वे पापियों का उद्धार कर मानवता को पीड़ित करने वाले राक्ष

दण्डित करने में लगे हुए थे। लेकिन कैकयी ने स्वार्थ की खातिर उन श्रीराम को कष्ट पहुँचाया तथा रावण ने सीता-हरण करके उन्हें पीड़ित किया, इस कारण भरत ने अपनी माता को और विभीषण ने अपने भाई को धर्म विरोधी कहकर फटकारा। गोस्वामी तुलसीदास ने भी राम का विरोध करने वालों को इसी कारण अपना वैरी कहा है। इस तरह उक्त कथन का मानस की धर्मभूमि से सीधा सम्बन्ध है, क्योंकि धर्म और राम में कोई अन्तर नहीं है। जिसे राम प्रिय है, उसे धर्म भी प्रिय है, परन्तु जिसे राम प्रिय नहीं, उसे धर्म भी प्रिय नहीं है। राम से प्रेम या भक्ति रखना सर्वश्रेष्ठ और उच्च धर्मभूमि है।

प्रश्न 7. "विभीषण एक दृष्टि से कुल-द्रोही है।" मानस में विभीषण को एक सच्चे भक्त के रूप में प्रतिष्ठित करने के पीछे कौन-सी दृष्टि रही है? समझाकर अपने विचार लिखिए।

उत्तर—मानस में विभीषण को सच्चा भगवद्भक्त बतलाया गया है। इसका कारण यह है कि रावण अधर्म और अन्याय के रास्ते पर चल रहा था। उसके अत्याचार से तीनों लोक व्याकुल थे, उसके अनुचर राक्षस अकारण लोगों को सताते थे और ऋषि-मुनियों का वध करते थे। इसके विपरीत विभीषण एक महात्मा की तरह अपना जीवन-यापन कर रहा था। वस्तुतः उसके हृदय में अखिल लोक-रक्षक भगवान राम के प्रति भक्ति थी। वह अपने गृहधर्म और कुलधर्म की अपेक्षा लोकधर्म को अधिक श्रेष्ठ मानता था। सीता-हरण होने पर उसने रावण को यह समझाया भी, पर वह नहीं माना। अतः व्यापक लोक-धर्म का निर्वाह करने के लिए श्रीराम की शरण में आया। इसी दृष्टि से विभीषण को सच्चा भक्त बताया गया है।

प्रश्न 8. 'मानस की धर्मभूमि' निबन्ध का सन्देश अपनी भाषा में लिखिए?

उत्तर—प्रस्तुत निबन्ध में आचार्य शुक्ल ने धर्म के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए आचरण की दृष्टि से धर्म की ऊँची-नीची भूमियों का सोदाहरण विवेचन किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि किसी सीमित वर्ग के कल्याण की अपेक्षा विस्तृत जनसमूह के कल्याण से सम्बन्ध रखने वाला धर्म उच्च कोटि का है। सच्चा भक्त विश्व कल्याण को ही अपना धर्म मानता है। इस प्रकार प्रस्तुत निबन्ध में यह सन्देश दिया गया है कि हमें व्यापक लक्ष्य रखने वाले लोक धर्म का पालन करना चाहिए और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना अपना कर विश्व का हित-चिन्तन करना चाहिए। स्वार्थ-भावना का परित्याग करके अपने दृष्टिकोण भगवद्भक्ति के प्रति आस्थामय बनाना चाहिए।

प्रश्न 9. 'विरक्त' की भावना से एंकदम मिलता-जुलता रूप कौनसा है?

उत्तर—(1) वियुक्त।

प्रश्न 10. 'धर्म का विरोध और राम का विरोध एक ही बात है'—इस अभिव्यक्ति में राम-राज का सर्वाधिक शुद्ध आशय क्या लेंगे?

उत्तर—मर्यादा पुरुषोत्तम राम।

2. भाभी

पाठ सार—'भाभी' महादेवी वर्मा का एक प्रसिद्ध संस्मरण है। इसमें उन एक ऐसी हिन्दू बाल विधवा का चित्रण किया है, जिसका जीवन अनेक यन्त्रण से घिरा था। बचपन में लेखिका उसे भाभी कहकर पुकारती थी।

अपने बचपन के दिनों का स्मरण करने पर महादेवीजी की स्मृति 'भाभी' का चित्र उभरता है। जब वे इन्दौर में मिशन स्कूल में पढ़ती थीं, तो उ वहाँ का एकरस वातावरण अच्छा नहीं लगता है। स्कूल जाने के रास्ते में सेठजी की दुकान के पीछे वाले घर में टाट का मोटा परदा लटकता रहता थ एक दिन अत्यधिक वर्षा हो जाने से बालिका महादेवी को उसकी टाट व दरवाजे के अन्दर रहने वाली विधवा ने आश्रय दिया। तब से लेकर महादेवी उ घर में निरन्तर जाती रही। उस विधवा को महादेवी ने 'भाभी' कहकर पुकार प्रारम्भ किया। वह मारवाड़ी परिवार की उन्नीस वर्षीया विधवा थी। उस परिवार में एक ससुर तथा एक ननद थी। वह अपने घर में कैद-सी रहती थी अ खाना भी एक समय ही खाती थी। इस तरह निराहार और परिश्रम करते रहने वह इस छोटी-सी उम्र में ही बुढ़िया जैसी लगती थी।

लेखिका बतलाती है कि उसका जीवन वेदना-व्यथाओं से घिरा था। व अनपढ़ थी, पीहर भी नहीं जा सकती थी। लेकिन लेखिका के प्रति उसका स्ने उत्तरोत्तर अधिक बढ़ रहा था। वह लेखिका की गुड़िया-गुड्डा आदि को सजात थी, उससे कहानियां सुनती थी और उसके साथ बातचीत में अपना समय व्यती करती थी। एक दिन महादेवी ने एक रंगीन ओढ़नी उसके सिर पर डाल दी, उ रंगीन ओढ़नी को पहन कर भाभी बड़ी प्रसन्न हुई। तभी उसके वृद्ध ससुर और युव ननद ने आकर यह दृश्य देख लिया। हिन्दू-विधवा रंगीन वस्त्र नहीं पहन सकती इन दोनों ने उसे खूब डांटा-फटकारा और ननद ने पीटा भी, इससे भाभी बेहो हो गई और बालिका महादेवी फूट-फूट कर रो.। इस घटना के बाद लेखिका क भाभी से मिलना सदा के लिए बन्द कर दिया। समय बीतता गया, बालिका प्रौ हो गई और युवती वृद्धा। तत्पश्चात् लेखिका ने भी इन्दौर छोड़ दिया। काफ दिनों बाद उसे भाभी की खोज-खबर करने की सूझी। तब इतना ही पता चला कि उसका ससुर परलोक सिधार गया और वह अज्ञात अवस्था में कहीं पड़ी हुई है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या स्थल

(1) उसी दिन से - - - - - - - - - - - में लीन थी। (पृ. 19)

प्रसंग—'भाभी' शीर्षक संस्मरण में महादेवी वर्मा ने अपने बचपन की उस घटना का चित्रण किया है, जिसमें उनका परिचय एक उन्नीस वर्षीया विधवा से हुआ था, जिसे वह भाभी कहती थीं। इस अवतरण में भाभी से प्रथम परिचय के बाद की घटनाओं का वर्णन हुआ है।

व्याख्या—लेखिका बतलाती है कि जब वर्षा के दिन मैं फिसल गई और मुझे वह विधवा उठाकर अपने घर की भीतर दालान में ले गई, तो उसके स्नेह व्यवहार से मैं अपनापन महसूस करने लगी। उसके बाद तो लेखिका उस घर में प्रतिदिन बिना किसी रोक-टोक के जाने लगी और उस विधवा को भाभी कहकर पुकारने लगी। तब लेखिका ने देखा कि उसका जीवन कठोर यन्त्रणाओं से घिरा था। जिस घर में वह रहती थी, वहाँ एक भी झरोखा नहीं था, न रोशनदान, न कोई नौकर ही था। उस घर में कभी कोई मेहमान भी नहीं आता था, न कोई गाय, बिल्ली आदि पशु रहता था, न कोई पक्षी था। अर्थात् उस विधवा को बाहर के लोगों से मिलने पर कठोर प्रतिबन्ध था और वह घर से बाहर कदम भी नही रख सकती थी। उसका जीवन एकदम एकान्त और निराश्रित-सा था। इस तरह बालिका महादेवी के लिए उस घर में एक भी चीज आकर्षण की नहीं थी, फिर भी न जाने क्यों लेखिका के लिए वहाँ आकर्षण बढ़ने लगा। सम्भवतः यह आकर्षण उस किशोरी का वैधव्य और लेखिका के प्रति उसके स्नेहपूर्ण व्यवहार के कारण था।

लेखिका बतलाती है कि वह घर चारों ओर से घिरा हुआ। अतएव वीरान-सा समाधि-स्थल जैसा था। उसमें वह विधवा भाभी बिना किसी संगी-साथी के रहती थी। वह किशोरावस्था की फूल के समान कोमल बालिका लोहे की ऊँची चारदीवारी के घेरे में घिरी हुई थी। उसके लिए वहाँ आमोद-प्रमोद का कोई साधन नहीं था। मानो वह वहाँ निरन्तर वृद्धा होने की साधना में लीन थी और अपने शरीर को शीघ्रातिशीघ्र जीर्ण कर रही थी।

विशेष—(i) हिन्दू-विधवा की विवशता का मार्मिक चित्रण हुआ है। ऐसे वेदनामय जीवन के प्रति लेखिका की सहानुभूति सहज रूप मे व्यक्त हुई है।

(ii) भाषा-शैली सरल, सुबोध एवं बिम्बात्मक-भावात्मक है।

(2) परन्तु काम चाहे - - - - - - - - लेता था। (पृ. 19)

प्रसंग—'भाभी' संस्मरण की इन पंक्तियों में लेखिका ने भाभी की कठोर दिनचर्या का वर्णन किया है और हिन्दू विधवा की विवशता का मार्मिक चित्र उभारा है।

व्याख्या—भाभी की दिनचर्या का वर्णन करती हुई लेखिका बतलाती है कि वह वेदना-व्यथा के कारण कृश शरीर की थी, परन्तु घर का सारा काम बड़े परिश्रम से करती थी। उसके लिए काम चाहे कितना ही कठिन हो, तब भी वह बिना कुछ कहे या बिना परेशानी जताये उसे करती ही थी और उसका शरीर चाहे कितना ही थक गया हो, फिर भी वह काम से मुँह नहीं मोडती था। एक प्रकार से वह निरन्तर परिश्रम करके अपने शरीर को इतना कमजोर बनाना चाहती थी कि उसे इस 'वेदनामय जीवन से जल्दी मुक्ति मिल सके। इसलिए काम काम होने पर वह कभी हँसती हुई सी मुख-मुद्रा में नहीं दिखाई देती थी और

अधिक काम होने पर कभी उस घर का काम रुकते नहीं देखा जाता था
वह हर हालत में काम पूरा करके ही विश्राम करती थी और घर के प्रत्येक
को परिश्रम पूर्वक करती थी। एक प्रकार से अधिक काम होने पर उसका
दिन व्यस्त जा सकता था और वह चाहती भी यही थी कि वह दिन भर
रहे, ताकि एकाकी बैठकर चिन्ता-वेदना से घुलने का मौका ही न मिले।
इतने सारे काम करने पर भी उस अभागी भाभी के लिए दिन का अधिकांश
एकाकी ही व्यतीत करना कठिन हो जाता था, जिस प्रकार द्रोपदी का चीर
ही गया था, उसी प्रकार दिन भी उसके लिए लम्बे-बड़े प्रतीत होते थे और
उन क्षणों में अपने एकाकी जीवन को बहुत ही कोसती थी।

विशेष—(i) हिन्दू-विधवा के एकाकी एवं प्रतिबन्धात्मक जीवन का म
चित्रण हुआ है।

(ii) भाषा सरल, सुबोध, शैली मनोविश्लेषणात्मक—भावात्मक है।

(3) उस दिन की बात - - - - - - - - - - लगा दी थी। (पृ. 21

प्रसंग—'भाभी' शीर्षक संस्मरण से उद्यत इस अवतरण में लेखिका ने
घटना का वर्णन किया है, जिसके कारण भाभी को उसके ससुर एवं ननद
फटकार खानी पड़ी तथा लेखिका को भी काफी आघात पहुँचा।

व्याख्या—लेखिका बतलाती है कि उसने माँ से हठ करके धानी रं
कपड़ा मंगवाया और उस पर किसी को बताए बिना नीले फूलों के कसीदे
जब वह ओढ़नी तैयार हो गई, तो लेखिका उसे चुपचाप लेकर भाभी को आ
में डालने के लिए गई। उस दिन की यह घटना लेखिका की स्मृति में इस
अमिट और क्रूर छाप छोड़ गई कि मानो वह स्मृति गर्म लोटे से जला-जल
लिखी गई हो और जिसके काले धब्बे आज भी कष्ट पहुँचा रहे हों। उस
सावन की तीज थी। इस अवसर पर प्रायः सभी स्त्रियाँ हाथों में मेहंदी लगाती
नये वस्त्र पहनती हैं। लेखिका भी उस दिन जब स्कूल से घर पहुँची, तो
सीधे-सादे बिना चमकदमक के स्कूली ड्रेस के स्थान पर गोटा लगी हुई लह
की साड़ी पहनने को मिली और सवेरे पढ़ने बैठने की बात न कहकर माँ ने
हाथों में मेंहदी भी लगा दी थी। इस तरह सावन की तीज के आनन्ददायी अ
पर बालिका महादेवी अपनी भाभी को भी रंगीन ओढ़नी पहनाकर उसका
प्रसन्न करना चाहती थी, परन्तु उसे यह मालूम नहीं था कि हिन्दू-विधवा के
रंगीन वस्त्र धारण करना निषिद्ध है और रंगीन ओढ़नी पहनने से भाभी पर
तथा ननद अत्याचार कर सकते हैं। वह तो अबोध बालिका की भावना के अ
भाभी को चुपचाप ओढ़नी पहनाकर आश्चर्य में डालना चाहती थी।

विशेष—(i) हिन्दू-विधवा के प्रतिबन्धात्मक जीवन और विवशता की
संकेत किया गया है।

(ii) भाषा शैली सरल-सुबोध है।

(4) वृद्ध मुझे कैसे - - - - - - - - - युवती वृद्धा। (पृ. 22)

प्रसंग—इस अवतरण में लेखिका ने उस घटना की ओर संकेत किया है, जिससे किशोरी विधवा भाभी को उसके ससुर तथा ननद ने खूब डांटा-फटकारा और पीटा था। इस क्रूर दृश्य से बालिका महादेवी को गहरा सदमा पहुँचा था।

व्याख्या—लेखिका ने जब चुपचाप भाभी को ओढनी पहनाई, तो तभी उसकी ननद और ससुर आ गये। उन दोनों ने उसे बड़ी क्रूरता से मारा पीटा। इस दृश्य से बालिका महादेवी भी घबराकर जोर-जोर से रोने लगी और कुछ बेहोश सी हो गई। तत्पश्चात् भाभी के वृद्ध ससुर ने लेखिका को कैसे घर पहुँचाया और किस दशा में पहुंचाया, यह उसे मानसिक आघात के कारण पता नहीं चला। इस क्रूर-अमानवीय घटना से लेखिका को जो घबराहट हुई थी, उसके साथ ही उसे ज्वर भी आ गया और तब वह कई दिनों तक अस्वस्थ पड़ी रही। इस कारण लेखिका को तत्काल यह पता नहीं चला कि भाभी पर उन लोगों ने क्या-क्या अत्याचार किये और उसने कैसे वे अत्याचार सहे। यब सब तो गहरे कुहरे में अर्थात् परस्पर सम्पर्क के अभाव में अज्ञात ही रहा। परन्तु कई दिनों के बाद जब लेखिका स्वस्थ हुई और वह उस रास्ते से अपने स्कूल गई तो उसने देखा कि छोटी-सी उम्र में, भाभी की बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ रहा था, अर्थात् वह किशोरावस्था में ही अत्यधिक विषाद से ग्रस्त थी। उसके ओठ सूख गये थे, उन ओठों के भीतर विधवा होने के पूर्व की अल्हड़ हँसी छिपी सी जान पड़ती थी। वह लेखिका से कुछ कहना चाहती थी, अपनी व्यथा प्रकट करने का साहस बटोरती थी, परन्तु कुछ कह नहीं पाती है। ऐसे में उसके ओठ काँपने लगते थे, मानो वे अपने हृदय की वेदना एवं करुण-क्रन्दन को रोकने का प्रयास करते-करते थक गये हों।

आशय यह है कि विधवा भाभी अपने ऊपर जो अत्याचार किये जा रहे थे, उसे जो कष्ट भोगने पड़ रहे थे, उन्हें कहना चाहती हुई भी नहीं कह पा रही थी। इस कारण उसके ओठ केवल काँप कर रह जाते थे। इस तरह उस घटना से लेखिका किशोरावस्था में ही प्रौढ़ की तरह बहुत कुछ समझने लग गई थी और वह युवती भाभी भी वृद्धा जैसा आचरण करने लग गई थी। कृश-शरीर के कारण उसका वेदनाग्रस्त जीवन असमय में ही वृद्धावस्था की तरह प्रतीत हो रहा था।

विशेष—(i) विधवा नारी की विवशता और उस पर किये जाने वाले अत्याचारों पर आक्षेप किया गया है। नारी-जीवन की वेदनानुभूति द्रष्टव्य है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "लम्बे-लम्बे मिश्र वाक्यों में सूक्ष्म से सूक्ष्म भावना बिम्ब चित्रित करना महादेवी के गद्य की विशेषता है।"

इस कथन को सिद्ध करने के लिए इस कहानी में से दो उदाहरण चुनिए और उनकी भावनाओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—उदाहरण—(1) "छोटे गोल मुख की तुलना - - - - - - - - धुल नहीं सके।" इस भावना-बिम्ब में महादेवी वर्मा ने उस परिचित विधवा भाभी का रेखाचित्र खींचा है। इस रेखाचित्र में लेखिका ने भाभी की वेदनाओं, शारीरिक

कष्टों, मानसिक चिन्ताओं एवं कष्टों को भी उभारने की पूर्ण चेष्टा की कारण यह भावना-बिम्ब अत्यन्त आकर्षक बन गया है।

(2) "घर के सब उजले-मैले - - - - - - - - -भाभी का सम्ब लिया था, यह अब बताना कठिन है।"

इस भावना-बिम्ब में लेखिका ने भाभी की दिनचर्या, उसके जी सुकुमारता के साथ-साथ विकलता आदि का भावनात्मक चित्र उभारा है। स अपनी मनोदशा और तत्कालीन पारिवारिक स्थिति का चित्र भी उभारा है। की रिश्ते की कोई भाभी नहीं थी, अतः उस किशोरी विधवा से भाभी का जोड़ लिया, इसके लिए भी महादेवी ने अपनी भावनाओं का अंकन बड़ी मा से किया है।

प्रश्न 2. "भाभी का रूप चित्रण करने में महादेवी की कविता ज्याद हुई है।" इसे सिद्ध करने के लिए इन चित्रणों की व्याख्या कीजिए

उत्तर—(1) **ललाट**—महादेवी ने भाभी के ललाट को उसके छोटे गो की तुलना में कुछ चौड़ा तथा दो काली रूखी लटों के बीच में सीमित बतला

(2) **आँखें और पलकें**—भाभी की आँखें बचपन की चंचलत हुई थी, परन्तु नव-वैधव्य के कारण उनमें कुछ आरोपित प्रौढ़ता भी थी। लम्बी बरौनियों वाली भारी पलकें थी, जिनकी काली छाया में छोटी-छोटी आँखें सदा डबडबाती हुई-सी लगती थी।

(3) **हथेलियाँ**—निरन्तर कठिन काम करने से उसकी हथेली काली रेखाओं से मुक्त, कहीं कोमल और कहीं कठोर थी। उसमें नखों की बुझ गई थी और हाथ की रेखाएं मिट गई थीं।

(4) **उंगलियाँ**—उसकी उंगलियँा अत्यन्त दुर्बल, पतली और क थी, उनमें जरा भी भार उठाने की क्षमता नहीं थी।

प्रश्न 3. नौकरानी की लड़की से लेखिका को ईर्ष्या होने का क्या कारण

उत्तर—नौकरानी की लड़की चौका-बरतन करके घर में ही रहती जबकि लेखिका को प्रतिदिन स्कूल जाना पड़ता था। इस कारण लेखिक नौकरानी की लड़की से ईर्ष्या होने लगी।

प्रश्न 4. स्कूल के जीवन को एकरस और उबाने वाला क्यों कहा गया

उत्तर—लेखिका जिस मिशन स्कूल में पढ़ती थी, वहाँ का अनुशासन कठोर था। वहाँ प्रार्थना से लेकर सारा पाठयक्रम इस तरह का था कि लग पढ़ाई करनी पड़ती थी और बहाना करने पर सजा भी मिलती थी। इस क लेखिका ने स्कूल के जीवन को उबाने वाला और एक रस कहा है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित के बारे में चारित्रिक टिप्पणियाँ तैयार कीजिए—

उत्तर—(1) **भाभी**—प्रस्तुत संस्मरण में भाभी का चरित्र अत्यन्त वेदन दर्शाया गया है। वह मात्र उन्नीस वर्ष की अवस्था में हिन्दू-विधवा को मि वाली कठोर यातनाओं को भोगने के लिए विवश रहती है। उसे घर के

नहीं निकलने दिया जाता है, किसी से मिलने-जुलने पर भी पाबन्दी लगी रहती है तथा छोटी-सी गलती पर उसकी ननद मार-पीट करती है, ससुर डांटता-फटकारता है। वह दिन भर घर का काम करती है, परन्तु भोजन एक बार ही करती है। उसके हृदय में नये रंगीन कपड़े पहनने की ललक रहती है, परन्तु हिन्दू-विधवा के लिए रंगीन कपड़े वर्जित होने से वह लाचार रहती है। एक बार लेखिका द्वारा उसे चुपचाप रंगीन ओढ़नी पहना देने पर तो ससुर और ननद द्वारा उस पर अमानवीय अत्याचार किया जाता है। वह बेचारी सब कुछ चुपचाप सहती है। उसके हृदय में लेखिका के प्रति अतीव स्नेह दिखाई देता है। वस्तुतः उसका जीवन अत्यन्त दयनीय चित्रित किया गया है।

(2) कल्लू की माँ–कल्लू की माँ बालिका महादेवी को प्रतिदिन स्कूल छोड़ने और लेने जाती थी। वह सेठजी के घर की पूरी खबर रखती थी और अपनी प्रत्येक बात को विशेष शब्दावली तथा विचित्र भाव-भगिमाओं के साथ व्यक्त करती थी। उसमें प्रतिशोध की भावना थी। वह लेखिका को काफी डरा कर रखती थी, साथ ही कई काल्पनिक कहानियाँ सुनाया करती थी। वह लेखिका के लिए एक जन्तु विशेष से कम नहीं थी। वह झूठ-सत्य में कोई फर्क नही मानती थी, फिर भी वह अपने काम को सही ढंग से निभाती थी।

(3) वृद्ध सेठजी–वृद्ध सेठ का अपनी लड़की के प्रति वात्सल्यपूर्ण व्यवहार व्यंजित हुआ है, परन्तु वह बहू के प्रति अत्यधिक कठोरता दिखाता था। वह उसके चरित्र पर शक करता था और उसे घर से बाहर नही निकलने देता था। उसके घर में न कोई मेहमान आता था और न कोई नौकर रहता था। वह विधवा बहू के कारण किसी को घर में घुसने नही देता था। वह दिन में एक समय ही भोजन करता था। अपने पुत्र की मृत्यु का उसे काफी दुःख था, परन्तु वह अपनी बेटी के इशारों पर बहू को अमानवीय यातनाएँ देता था। वृद्ध सेठ कंजूस, अविवेकी, शंकालु स्वभाव का और कठोर हृदय था।

(4) ननद–प्रस्तुत संस्मरण में ननद का चरित्र इतना ही व्यक्त हुआ है कि इन्दौर शहर में ही उसकी ससुराल थी और वह जब-तब अपने मायके आती थी तथा अपनी विधवा भाभी को खूब डाँटती-मारती थी। वह भाभी के साथ अमानवीय आचरण करती थी। वह अत्यन्त निर्दयी, स्वार्थी, क्रोधी, अपने पिता के धन पर लालच रखने वाली और अत्यन्त कठोर हृदय वाली थी। इस सस्मरण में उसका चरित्र अत्यन्त क्रूर और अमानवीय दर्शाया गया है।

प्रश्न 6. क्यों कहा गया है?

उत्तर–(1) समाधि जैसा घर–उसके घर में न कोई झरोखा था, न कोई रोशनदान, न कोई नौकर, न अतिथि और न कोई पशु-पक्षी ही था। वह एकदम शान्त-एकान्त और चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ था। इस कारण उसे समाधि जैसा घर कहा गया है।

(2) इस जन्तु विशेष से कम नहीं जिसकी बात कहकर बच्चों को डराया जाता था–कल्लू की माँ अत्यन्त वृद्ध थी और उसका चेहरा व शरीर बेडोल था।

एक प्रकार से बच्चों को डराने वाली डायन-सी लगती थी। वह तरह-त किस्से कहानियाँ सुनाती थी और बच्चों पर कठोर नियन्त्रण रखती थी।

(3) उस अभागी का पूरा दिन द्रौपदी के चीर से होड़ लेता था— भाभी घर का सारा काम अपने आप करती थी और उसके पास काम भी रहता था, फिर भी काम पूरा हो जाने के बाद उसे दिन निकालना मुश्कि जाता था। वह दिन को द्रौपदी के चीर की तरह अत्यधिक लम्बा महसूस थी।

(4) सबसे कठिन दिन तब आते थे जब वृद्ध सेठ की सौभाग्यवत अपने नैहर आती थी—सेठ की लड़की उसी शहर में रहती थी। जब कभ ससुराल से वहाँ अपने पीहर में आती, तो अपनी विधवा भाभी पर तरह-त अत्याचार करती थी। वह उसको मारती-पीटती थी, गर्म सलाखों से झुलसात इस कारण भाभी के लिए वे दिन बड़े कठिन होते थे।

प्रश्न 7. अधिक शुद्ध बनाकर लिखिए—

(1) बचपन का वह मिशन स्कूल मुझे अब तक स्मरण है।

(2) स्कूल में मेरी बहुत सी झूठी-सच्ची शिकायत कर सकती थी।

(3) उसके पास प्रतिशोध लेने के बहुत से साधन थे।

(4) अपने आप खड़े रहकर सीधा दिलवाकर रवाना कर देते हैं।

(5) नये-नये गुड़ियों के कपड़े दिखाती।

उत्तर—(1) मुझे अब तक बचपन का वह मिशन स्कूल याद है।

(2) स्कूल में मेरी झूठी-सच्ची बहुत-सी शिकायतें कर सकती

(3) उसके पास प्रतिशोध के कई उपाय थे।

(4) स्वयं खड़े रहकर सीधा दिलवाकर विदा कर देते हैं।

(5) गुड़ियों के नये-नये कपड़े दिखाती।

प्रश्न 8. इन पदों का विश्लेषण करके निर्माण की प्रक्रिया बताइए।

उत्तर—(1) दिन-प्रतिदिन—दिनोंदिन=प्रतिदिन, दिन व प्रतिदिन (अ भाव समास)।

(2) प्रौढ़ता—प्रौढ शब्द से ता प्रत्यय।

(3) प्रौढ़—प्रकर्ष ऊढ अर्थात अधिक अवस्था।

(4) सहज-कठिन—सरल एवं स्वाभाविक तथा कठिन (द्वन्द्व स

(5) चौका-बरतन—चौका और बरतन (द्वन्द्व समास)

(6) उधेड़ बुन—उधेड़ और बुन (द्वन्द्व समास)

(7) आते-जाते—आते और जाते (द्वन्द्व समास)

(8) जब-तब—जब और तब अव्यय-युग्म (द्वन्द्व समास)

(9) निराहार—निर्+आहार (उपसर्ग+शब्द) सन्धि

(10) मिताहार—मित+आहार (दोनों शब्द) दीर्घ सन्धि

प्रश्न 9. अर्थगत अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(1) प्रतिदिन=प्रत्येक दिन, दिन-प्रतिदिन=रोजाना, हर रोज।

(2) निराहार=भोजन नहीं करता, मिताहार=कम भोजन करना।

(3) सुनकर=सामान्य रूप से सुनने का भाव, सुनसुनकर=निरन्तर सुनकर।

(4) एक रसता=एक जैसी जीवनचर्या, समरसता=समान आस्वाद।

(5) इकलौता=अकेला प्यारा, एक मात्र=केवल एक।

प्रश्न 10. 'आस' के साथ पुल्लिंग विभक्ति रखकर जो शब्द नहीं बना हो, उसे पहचानिए?

उत्तर—(क) बतासा।

प्रश्न 11. भाभी के प्रताड़ित और विवश होने का मुख्य कारण किसे माना जा सकता है?

उत्तर—(5) सब ओर से निराश्रित और असहाय होना।

3. फिर से सोचने की आवश्यकता है

निबन्ध सार—प्रस्तुत निबन्ध में डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये हैं। इसमें वे देशवासियों से कहते हैं कि मानसिक गुलामी से मुक्त होने के लिए वे पुनः अपनी राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में सोचें।

द्विवेदी जी कहते है कि आजकल मेरे मन में एक बड़ा सवाल उठा हुआ है, इसका मैंने जो उत्तर पाया, वह क्या सही है? यह सवाल पहले भी उठा था और आज फिर नये सिरे से उठ रहा है। व्यक्ति सत्संगति की महिमा से अपने हृदय की सच्ची आवाज सुनने लगता है। इसीलिए रवीन्द्रनाथ ने कहा था कि हृदय की बात सर्वोपरि होती है, क्योंकि उसमें अपना राजा बैठा रहता है। लेकिन वर्तमान में लोग हृदय की बातें नहीं सुनते हैं। इसी प्रसंग में यह प्रश्न उठता है कि काम निकालना बुद्धिमानी है या मान के लिए मर मिटना मनुष्यत्व की निशानी है। इनमें पहला मत उनका है जो समझदार माने जाते हैं और भावुक नहीं होते हैं। दूसरे मत को मानने वाले सचमुच ही भावुक होते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में मान का बड़ा महत्त्व हैं। वस्तुतः मनुष्यता को अपनाने वाले लोग अनेक प्रकार से [illegible]-दर्शन की व्याख्या करके मनुष्यत्व-धर्म का प्रतिपादन करते हैं।

काम निकाल लेने वाले तथाकथित समझदार लोग कहते हैं
अंग्रेजी को अपनाने से राज्य-व्यवस्था ठीक चलती है तथा कुछ लोगों क
अच्छी आजीविका मिल जाती है तो अंग्रेजी को क्यों छोड़ा जाए?
वास्तविकता यह है कि इस देश में पांच-दस प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं जो अ
अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। लेकिन देश की नब्बे प्रतिशत
अपनी भाषा में व्यवहार करती है, तो फिर इसे ही हम अपनी राष्ट्रीय
रूप में क्यों नहीं अपना लेते हैं। परन्तु हमारे देश में ऐसे मानसिक रूप से
अभी भी पर्याप्त हैं जो अंग्रेजी का पक्ष लेते हैं। उनके लिए तुलसीद
रामायण, तुकाराम के अभंगों का कोई महत्त्व नहीं है, यहाँ के समझदार न्या
अंग्रेजी में ही फैसला लिखते हैं तथा सरकारी कार्यालयों में फाइलों पर न
अंग्रेजी में लिखे जाते हैं, लगता है कि इन लोगों को अपनी भाषा लिखन
आती है।

इस तरह की अंग्रेजी भाषा का मोह देखकर ऐसा लगता है कि
आजादी दिलाने के लिए शहीद होने वाले देशभक्तों का बलिदान व्यर्थ चल
परन्तु उन्होंने राष्ट्रीयता एवं आजादी के लिए अपने प्राण यों ही नहीं गँवा
उनका कोई महान लक्ष्य था, जिसे हम छोड़ नहीं सकते। इसलिए आज
सोचने की आवश्यकता है कि कुछ ही अंग्रेजीपरस्त लोगों की सुविधा क
रखकर हमें करोड़ों भारतवासियों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें
राष्ट्रभाषा का सम्मान देना चाहिए जिसमें गुलामी की दुर्गन्ध न हो। य
हिन्दी को अपनाने से ही सम्भव हो सकता है। स्वभाषा की प्रतिष्ठा करने
देश महान् बनेगा—यही हमें फिर से सोचना है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या स्थल

(1) यद्यपि भीतर से - - - - - - - - - - सुना करता है। (पृ.

प्रसंग—'फिर से सोचने की आवश्यकता है' निबन्ध में द्विवेदी
राष्ट्रभाषा के प्रश्न को नये चिन्तन के साथ उपस्थित किया है और इसे
सामने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न (समस्या) के रूप में दर्शा कर सभी स्थितियों पर
डाला है। इसी क्रम में द्विवेदी जी कहते हैं—

व्याख्या—मेरे मन में पहले एक सवाल उठा था और उसका मैंने ज
पाया था, क्या वह सही था? यद्यपि मेरे हृदय से यह आवाज आती है कि
जो उत्तर पाया था, वह सही है और राष्ट्रभाषा के प्रश्न को लेकर इस सम
आशंका-संदेह तुम्हारे सामने उपस्थित हो रहा है, वह गलत है। इस प्रका
अन्तर्मन यह स्पष्ट सा कह रहा है कि स्वतन्त्र भारत का गौरव स्वभाषा से
ही बढ़ सकता है, हमारे देश की राष्ट्रभाषा का स्थान अंग्रेजी नहीं ले सक
परन्तु इस प्रश्न पर आज मेरा चित्त नये सिरे से उत्तर पाने के लिए प्रयास
लग गया है क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इतने वर्ष बीत जाने पर भी
तक राष्ट्रभाषा का प्रश्न हल नहीं हुआ है और अंग्रेजी हमारी मानसिक
की प्रतीक बनकर आज भी शासन तन्त्र में वर्चस्व बनाये हुये है।

इस प्रश्न को अन्य प्रकार से समझाते हुए द्विवेदीजी कहते हैं कि इस देश सत्संगति की महिमा सभी को ज्ञात है और मैं भी बड़ी व्याकुलता के साथ तुभव कर रहा हूँ कि सत्संगति ने मेरे हृदय को अत्यधिक तीव्रता से आलोडित र रखा है। इसका कारण यह है कि मेरे संस्कार उसी तरह के हो गये हैं। अतः र अन्तर्मन से राष्ट्रभाषा को लेकर जो आवाज आ रही है, वह केवल मेरे रतीय संस्कारों की आदत का परिणाम है। जब व्यक्ति किसी बात को अपनी शिष्ट या प्रतिबद्ध विचारधारा के अनुसार सोचता है, तो वह अपने हृदयगत न का उत्तर उसी विचारधारा की आवाज में सुना करता है अर्थात् जैसे सस्कार वं विचारधारा रहती है, मन ही उसी तरह की बात का और उसी के अनुरूप चार का समर्थन करता है। इस दृष्टि से भी आज राष्ट्रभाषा का अनुरूप माधान आवश्यक है।

विशेष—(i) राष्ट्रभाषा की समस्या और देश मे कुछ लोगो की अग्रेजी स्त राजनीतिक अखाड़ेबाजी की ओर संकेत किया गया है। भारतीयो को सच्चे न्तर्मन से स्वभाषा की प्रतिष्ठा करने का संदेश दिया गया है।

(ii) भाषा तत्सम प्रधान तथा शैली प्रवाहयुक्त-भावात्मक है।

(2) **पहला मत इन - - - - - - - - - - - - - नगण्य है।** (पृ. 26)

प्रसंग—इस अवतरण मे द्विवेदी जी ने उन लोगो की विशेषता प्रकट की है। कि काम निकाल लेना बुद्धिमानी मानते हैं और मान-सम्मान तथा भावुकता । कोई महत्त्व नहीं देते हैं।

व्याख्या—लेखक अन्योक्ति रूप मे बतलाता है कि इस ससार मे दो प्रकार लोग होते हैं, उनमें प्रथम प्रकार के लोग काम निकाल नेला बुद्धिमानी मानते हैं या दूसरे प्रकार के लोग मान पर मर मिटना मनुष्यत्व की निशानी स्वीकार करते । इस तरह प्रथम प्रकार के मत के पक्षधर वे लोग हैं जो स्वय समझदार अर्थात् च्छी तरह सोच विचार कर चलने वाले और तर्कशील मानते हैं। वे जरा भी ावुक नहीं होते हैं। उनका दृष्टिकोण तो केवल अपने कार्य को हर हालत मे ाधकर, विशुद्ध स्वार्थ-साधना का लक्ष्य लेकर परिणाम तक पहुँचना रहता है। सलिए वे काम करने से पूर्व उसके लाभ-अलाभ का भी चिन्तन करते है और रिणाम को अपने लिए अनुकूल देखकर ही उस कार्य में प्रवृत्त होते हैं। इस तरह लोग जिस प्रकार हथेली में रखे हुए आँवले के फल का आकार-प्रकार सब कुछ ष्ट दिखाई देता है, उसी प्रकार प्रत्येक वस्तु या कार्य की उपयोगिता और नुपयोगिता को अच्छी तरह देख लेते हैं। इस प्रकार वे उपयोगी वस्तु को महत्त्व ते हैं और अनुपयोगी वस्तु को छोड़ देते हैं। एक प्रकार से ऐसे समझदार लोग ोमल भावनाओं से रहित, एकदम स्वार्थी एवं कठोर हृदय होते हैं। उनकी दृष्टि मान-सम्मान का कोई महत्त्व नहीं है। वे तो मान-सम्मान की खातिर मर मिटने लों को अतिशय भावुक मानते हैं। इस तरह उनकी दृष्टि में मान का ही दूसरा ाम भावुकता है। ऐसे समझदार लोग काम को बड़ी चीज मानते हैं; मान उनकी ष्टि में नगण्य एवं तुच्छ चीज है।

आशय यह है कि स्वदेश का मान-सम्मान और अपनी राष्ट्रभाषा का ौरव न मानने वाले लोग अपना काम साधने वाले, प्रबलतम स्वार्थी और अंग्रेजी

का पक्ष लेने वाले हैं। उनकी दृष्टि में देश को स्वतन्त्र कराने के लिए, मान-सम्मान के लिए शहीद होने वाले नितान्त भावुक तथा नासमझ लोग

विशेष—(i) अँग्रेजी परस्त लोगों की चिन्तनशीलता एवं स्वार्थपर आक्षेप किया गया है। ऐसे लोगों के कारण ही हमारी राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा नहीं हो पायी है।

(ii) भाषा सरल, सुबोध एवं शैली विवेचनात्मक, व्यंग्यात्मक है।

(3) मनुष्य प्रयोजन - - - - - - - - - - - - - - धर्म है। (पृ

प्रसंग—इस अवतरण में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मानव जी उपयोगिता और मनुष्यत्व धर्म का महत्त्व बतलाया है। सामान्य रूप से कुछ केवल स्वार्थ या प्रयोजन को लेकर ही किसी काम में प्रवृत्त होते हैं। दिवेदी इसे पशु-धर्म बतलाया है। इसी क्रम में वे प्रतिपादित करते हैं कि—

व्याख्या—मनुष्य केवल प्रयोजन के पीछे दौड़ने के लिए अर्थात् स्व साधने के लिए ही नहीं बना है। केवल प्रयोजन के पीछे दौड़ना तो पशु व है। इससे जीवन धारण करने की उपयोगिता समाप्त हो जाती है। वै प्रयोजनों से अतीत जो धर्म है, अर्थात् जिसमें पशुओं की तरह स्वार्थ साधन है, वह मनुष्य का धर्म अर्थात् मानवता का धर्म है। मानव को शक्ति, प्रेम तथा सहानुभूति आदि गुणों का पालन-अनुकरण करना चाहिए। इन गुणो से हमारे स्थूल प्रयोजनों की सिद्धि हो अथवा न हो, फिर ये गुण मानव के लि महत्त्वपूर्ण हैं और इन गुणों को अपनाने से ही वह मनुष्यत्व धर्म का पालन है तथा इन्हीं वह पशु-धर्म से उच्च उठकर मानवता का सम्मानजनक गौरव करता है।

द्विवेदी जी का कथन है कि उक्त गुणो से मनुष्यत्व-धर्म का अ होता है। इसलिए आवश्यकता पड़ने पर इन गुणों की रक्षा के लिए व्यक्ति अपने प्राणों की बाजी भी लगानी पड़े तो इसमें संकोच नहीं करना चाहिए। ये गुण ही मानवता के वास्तविक धर्म हैं और इन्हीं के पालन से मुष्यत आचरण हो सकता है। वस्तुतः मनुष्य इन श्रेष्ठ चारित्रिक गुणों के कार मनुष्य कहलाता है, उसमें मनुष्यत्व धर्म है। स्वार्थ के साथ परार्थ चिन्तन लोकहित का भी भाव है, इसलिए मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ और मानव मण्डित माना जाता है।

विशेष—(i) मानवता का आचरण करने के लिये श्रेष्ठ चारित्रिक गुण अपनाने पर बल दिया गया है और स्वार्थ-पूर्ति को पशु-धर्म बताया गया है।

(ii) भाषा तत्सम-प्रधान और शैली प्रवाहपूर्ण एवं विवेचनात्मक है।

(4) कितने लोग हैं - - - - - - -- -मोड़ा है। (पृ. 29)

प्रसंग—'फिर से सोचने की आवश्यकता है' निबन्ध में द्विवेदी जी की खातिर शहीद हो जाने वाले देशभक्तों का उल्लेख कर प्रतिपादित किया

अंग्रेजों की गुलामी को समाप्त करने के लिए उन्होंने प्राणों की बाजी लगायी, क्या उनका बलिदान व्यर्थ चला गया है?

व्याख्या—द्विवेदीजी स्पष्टतः कहते है कि आज कितने लोग ऐसे है जो देश की खातिर अथवा किसी राष्ट्रीय आदर्श के निर्वाह के लिए कठोर यातनाएं सहने को तैयार हैं, अर्थात् आज ऐसे लोगों की कमी आ गई है जैसे कि अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होने के लिए स्वतन्त्रता से पूर्व देशभक्त दीवाने थे। उन्होने देश को आजादी दिलाने के लिए और अपने राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने के लिए भावावेश मे इस तरह संघर्ष का रास्ता अपनाया था, जिस पर चलते हुए कई नौजवानो ने जेल की यातनाएं सही, काला पानी की सजा भोगी और सहर्ष भारतमाता की जयकार करते हुए फांसी के फन्दे पर झूम गये। आज देश में ऐसे भावावेशी नौजवानो की कमी दिखाई दे रही है जो उसी प्रकार अन्याय और अत्याचार का विरोध कर सकें। इस कारण आज भी हम मानसिक गुलामी से ग्रस्त होकर अंग्रेजी भाषा को सर्वाधिक महत्त्व दे रहे हैं।

द्विवेदी जी आवेश के साथ कहते हैं कि मनुष्य क्या केवल इसलिए पैदा हुआ है कि जो कुछ यहाँ घटित हो रहा है, उसे चुपचाप स्वीकार करता रहे? क्या वह अत्याचार और अत्याचार का विरोध नहीं करे? इसका उत्तर हमारा हृदय स्पष्टतः यह देता है कि अवश्य ही अत्याचार, गुलामी एवं अन्याय का विरोध करना चाहिए। इस संसार में जन्म लेकर केवल अपने पेट का पालन करना और अपना सिर किसी आश्रय में छिपा लेना ही कोई बड़ी बात नही है। इस तरह तो कीड़े मकोड़े भी अपना सिर छिपा लेते है, वे अपना पेट भी भर लेते है। यह कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। मनुष्य तो इसलिए अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है, इसलिए वह मानव है कि उसने अपने चिन्तन तथा बुद्धि से इस सृष्टि की धारा को अपने पुरुषार्थ के अनुरूप ढाला है, उसने अपनी इच्छा के अनुसार सृष्टि के गति-चक्र को मोड़ा है। इसलिये हम भारतीयों को भी मनुष्य होने के नाते अपनी राष्ट्रभाषा और अपने राष्ट्र गौरव को नयी दिशा देनी चाहिए। हमें परतन्त्रता की अवशिष्ट निशानी को मिटा कर स्वभाषा का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

विशेष—(i) स्वतन्त्रता-संग्राम में शहीद हुए देशभक्तों के बलिदान से प्रेरणा लेने की व्यंजना हुई है। इसी क्रम में मनुष्य होने के नाते देशवासियों को अपने गौरव का ध्यान रखने के लिए प्रयत्नशील रहने हेतु सन्देश दिया गया है।

(ii) भाषा सरल-सुबोध और शैली प्रवाहपूर्ण एवं व्यंग्यात्मक, आवेशात्मक है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम भी बताइए ?

उत्तर—(1) अत्याचार—अति + आचार—गुण सन्धि

(2) परमुखापेक्षी—परमुख + अपेक्षी—दीर्घ सन्धि

(3) न्यायोचित—न्याय + उचित—गुण सन्धि

(4) निराकार—निर् + आकार—विसर्ग सन्धि (व्यंजन सन्धि)

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखिए तथा इनका अपने वा प्रयोग कीजिए।

उत्तर–(1) तत्वचिन्तक = तत्व का चिन्तन करने वाला। तत्वि लोग इस भौतिक जगत् और आध्यात्मिक भावना का निष्पक्ष विवेचन करते

(2) प्रतिक्रिया = किसी बात पर भावाभिव्यक्ति। सन्धि का प्रस्तुत करने पर पाकिस्तान की प्रतिक्रिया विपरीत रही।

(3) भावुक = भावना शील। भावुक व्यक्ति बड़े दयालु और होते हैं।

(4) आलोडित = हिलाना, मथना। मेरे हृदय को सत्सं आलोडित कर लिया था।

प्रश्न 3. लेखन ने राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में फिर से सोचने की आवश अनुभव क्यों की है? विचारपूर्वक उत्तर दीजिए।

उत्तर–देश को स्वतन्त्रता मिलने पर हमारे संविधान निर्माताओं ने को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की घोषणा की तथा इसके लिए समय सीमा भी उन्होंने निर्धारित की। परन्तु काफी समय बीत जाने राष्ट्रभाषा के रूप में राज्य-व्यवस्था में अंग्रेजीपरस्त लोगों ने हिन्दी को जम दिया। यह कुछ गिने-चुने लोगों की स्वार्थी कुचाल है। इस कारण लेख राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में फिर से सोचने की आवश्यकता अनुभव की।

प्रश्न 4. आधी से आधी फीसदी जनता द्वारा समझी और बोली जाने भाषा को अधिक महत्त्व देने को द्विवेदी जी ने बुरा क्यों माना है? इस सम्ब अपने विचार लिखिए।

उत्तर–आधी से आधी फीसदी जनता द्वारा समझी और बोली जाने अंग्रेजी भाषा को वे ही लोग अधिक महत्त्व देते हैं जो मानसिक रूप से अभी गुलाम हैं तथा स्वयं को शासकों की भाषा का ज्ञाता मानते हैं। इससे दे स्वभाषा का अपमान हो रहा है, अधिकतर जनता भारतीय भाषाओं को सम है और नब्बे प्रतिशत लोग हिन्दी को समझते-बोलते हैं, उनके साथ अंग्रेजी लोग अन्याय कर रहे हैं। अंग्रेजीपरस्त लोगों की कुचाल से देश के गौरव को लग रहा है। इन सभी कारणों से लेखक ने अंग्रेजी भाषा को अधिक महत्त्व बुरा माना है।

प्रश्न 5. समझदार और भावुक के अन्तर को लेखक ने किस उदाहर स्पष्ट किया?

उत्तर–समझदार लोग काम को अधिक महत्त्व देते हैं, जबकि मान उ दृष्टि में नगण्य है। भावुक लोग मान को महत्त्व देते हैं, वे काम या स्वार्थ अपेक्षा मान को सर्वोपरि मानते हैं। समझदार लोग काम निकालने के चालाकी दिखाते हैं जबकि भावुक लोग अपने सम्मान की रक्षा के लिए मर जाते हैं।

प्रश्न 6. "देशी भाषाओं में रखा ही क्या है? तुलसीदास की रामायण तथा तुकाराम के अभंगों से देश का शासन नहीं चल सकता।" लेखक के इस कथन के पीछे छिपी हुई पीड़ा को अपनी भाषा में लिखिए।

उत्तर—इस तथ्य के पीछे लेखक की यह पीड़ा निहित है कि तुलसीदास की रामायण और तुकाराम के अभंगों से सारी जनता परिचित है। इनका हमारे सांस्कृतिक जीवन में अत्यधिक महत्त्व है और ये हमारी अपनी भाषा की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं; परन्तु अंग्रेजीपरस्त लोग स्वभाषा को महत्त्व न देकर अंग्रेजी में ही कार्यालयों में काम करते हैं, न्यायालय के फैसले भी अंग्रेजी में ही लिखे जाते हैं। जबकि सामान्य जनता अंग्रेजी नहीं समझती है। यह हमारी कैसी विडम्बना है कि जिसे हम समझते हैं जो हमारी मातृभाषा व सास्कृतिक भाषा है, उसका इस तरह अपमान हो रहा है।

प्रश्न 7. "लेकिन फिर मैं सोचता हूँ कि प्राण देने का साहस जिन्होंने किया था, उनको इतनी आसानी से छोड़ा भी नहीं जा सकता।" इन पंक्तियों के सम्बन्ध में अपने विचार लिखिए।

उत्तर—हमारे देश को सदियों की दासता से मुक्त करने के लिए अनेक क्रान्तिकारी देशभक्तों ने अपने प्राणों की बाजी लगाई। कई देशभक्त शहीद हुए, तब जाकर हमें आजादी मिली। यदि हम आज इन आजादी के दीवानों का बलिदान भूल जायें, तो यह महान अनर्थ होगा। अभी भी कुछ लोग अंग्रेजी भाषा के मोह में मानसिक गुलाम हैं, उन्हें यह मोह छोड़ना चाहिए। तभी हम अपने शहीद देशभक्तों की कामंना की पूर्ति कर सकेंगे। आज भी ऐसे नौजवानों की जरूरत है जो इस तरह की मानसिक गुलामी को दूर करे।

प्रश्न 8. "मनुष्य इसलिए मनुष्य है कि उसने सृष्टि की धारा को अपने पुरुषार्थ से अनुकूल दिशा में मोड़ा है।"

द्विवेदीजी ने मनुष्य की शक्ति के सम्बन्ध में यह प्रेरक कथन कहा है? इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार लिखिए।

उत्तर—इस संसार में अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। अन्य प्राणी तो केवल भोजन, निद्रा आदि तक सीमित रहते है, उनमें सामाजिक चेतना उतनी प्रबल नहीं है। परन्तु मानव ऐसा सामाजिक चेतनाशील प्राणी है जो इस सृष्टि की धारा को सदा ही अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा करता रहा है, सभ्यता कें आदिम काल से लेकर आज तक मानव समाज का जो विकास हुआ है, वह उसकी बुद्धि और पुरुषार्थ से हुआ है। मानव ने अपने पुरुषार्थ से ही भौतिक उन्नति की है तथा सृष्टि का विकास कर मानव-कल्याण के साधन सुलभ कराये हैं। अतः मानव अपनी शक्ति का सदुपयोग करता रहे, इसी में उसका मनुष्यत्व है।

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से वह शब्द छांटकर बताइए जिसमें 'स्व' का प्रयोग नहीं हुआ हो।

उत्तर—(5) स्वस्थ

प्रश्न 10. प्रस्तुत पाठ का मुख्य कथन क्या है?

उत्तर—(1) अंग्रेजी के प्रति अनावश्यक अनुराग पर व्यंग्य।

4. सच्ची वीरता

निबन्ध सार—प्रस्तुत निबन्ध में सरदार पूर्णसिंह ने सच्चे वीर औ की विशेषताओं का उल्लेख कर कायर और वीर के अन्तर को भी स्पष्ट f इस प्रसंग में उन्होंने आत्मिक उन्नति में लगे रहने वाले को सच्चे वीर राष्ट्र में संलग्न रहने का भाव व्यक्त किया है।

सच्चे वीर पुरुष धीर-गम्भीर और आजाद होते हैं। वे सदा सत्व क्षीरसागर में डूबे रहते हैं। ऐसे वीर संसार के सच्चे परोपकारी तथा स होते हैं। उनके लिए संसार के सब अगम्य मार्ग समाप्त हो जाते हैं, प्र उनके मस्तक पर राजतिलक करती है। संसार के बड़े से बड़े राजा तो न के वीर हैं, उनका शासन लोगों के दिलों पर नहीं होता है, लोगो के f शासन तो सच्चे वीर ही करते हैं और कभी किसी क्षेत्र विशेष में एक सच ही जन्म लेता है। सच्चा वीर मंसूर की तरह सहर्ष सूली पर चढ़ जाता है अपने प्रेम के जोर से वह शताब्दियों तक जनता के दिलों पर शासन क सम्स तबरेज, गुरु नानक और भगवान शंकराचार्य की भी ऐसे सच्चे साधु गणना की जाती है। ऐसे वीर यदा कदा ही पैदा होते हैं तथा वे अपने-अ अपने जीवन को लोकहित में खपा देते हैं।

अपने आप को हर समय महान् से भी महान् बनाने का नाम वी वीरता का विकास नाना प्रकार से होता है। उसका विकास कभी लड़ने म कभी आत्म-बलिदान में, कभी प्रेम-पूर्ण व्यवहार के क्षेत्र में, कभी गूढ़ त सत्य की खोज में होता है। कभी किसी आदर्श को लेकर तो कभी किसी स लेकर वीरता का प्रसार होता है सब लोग उसके सामने नतमस्तक हो ज परन्तु वीरता आरोपित या उत्पादित वस्तु नहीं है। वीरों के बनाने के क नहीं हो सकते। वे तो स्वयं ही दुनियाँ के मैदान में अपने आप उग आते हैं का सारा जीवन भीतर ही भीतर होता है, दिखावे से तो वे दूर रहते हैं। ल गुदड़ियों में छिपा रहता है। वह दिखावे और बनावट से सर्वथा दूर रहता है

कायर और वीर पुरुष में पर्याप्त अन्तर है। कायर तलवार उ अपनी रक्षा समझता है, जबकि वीर निरर्थक कार्यों में अपना समय नही गवा वीर पुरुष कुदरत की ताकतों का भण्डार है। उनके सामने तो विष भी अम् जाता है। परन्तु वह टीन के बर्तन की तरह नहीं होता है। आजकल अखब द्वारा अनेक नकली वीर गढ़े जाते हैं, परन्तु इस तरह गढ़ने से वीरता का रंग नहीं चढ़ता है। उनका रंग तो अपने भीतर की उन्नति से चढ़ता है। वे आत्मिक उन्नति करते हैं तथा औरों को भी यही प्रेरणा देते हैं।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या स्थल

(1) सत्त्वगुण के समुद्र - - - - - - - - - - - - **-पुरुष हैं।** (पृ.

प्रसंग—यह अवतरण 'सच्ची वीरता' शीर्षक निबन्ध से संकलित है। सच्चे वीर पुरुष के लक्षण तथा उसकी विशेषताओं पर लेखक ने प्रकाश डा

व्याख्या–जिनके अन्तःकरण में सत्त्व गुण की प्रधानता होती है, जिनका हृदय समुद्र की तरह अत्यधिक गम्भीर रहता है तथा सत्त्व गुण के कारण उसमें भावों की व्यापकता रहती है, ऐसे लोग ही महापुरुष, साधु (सज्जन) और सच्चे वीर होते हैं। ऐसे लोगों का जीवन अत्यधिक उदात्त और उदार होता है। वे अपने तुच्छ जीवन का परित्याग ... सा दिव्य अथवा ईश्वरीय जीवन पाते हैं और संसार में भगवान के साक्षात अवतार की तरह पूजित होते हैं कि उनके लिए संसार के सारे कार्य अपने-आप आसान हो जाते हैं। ऐसे सच्चे वीरों के सामने कोई रुकावट नहीं आती है। उनके लिए तो प्रकृति भी सहायक बन जाती है।

आशय यह है कि सच्चे वीरों का व्यक्तित्व इतना ओजस्वी होता है कि उनका प्रभाव हर कोई आसानी से मान लेता है। प्रकृति भी उनके प्रभाव को स्वीकार करती है। चिलचिलाती धूप में आकाश उनके ऊपर बादलों के छाते लगाता है और प्रकृति उनके सुन्दर-भव्य ललाट पर राजतिलक करती है। इस प्रकार महापुरुष, सज्जन एव वीर पुरुष सभी पर अपना प्रभाव रखते हैं। उनकी सर्वव्यापकता को देखकर ही कहा जा सकता है कि ये ही जनता के दिलों के असली राजा और सच्चे साधु पुरुष हैं।

विशेष–(i) इसमें सच्चे वीर, महापुरुष तथा सज्जन व्यक्ति के स्वभाव का विवेचन किया गया है। ऐसे लोग मानव-समाज के हित साधक होते हैं। अतः इनका प्रभाव सभी पर बना रहता है।

(ii) भाषा तत्सम प्रधान तथा शैली भावात्मक है।

(2) **अपने आपको - - - - - - - - - - - - - बढ़ना है।** (पृ. 34)

प्रसंग–'सच्ची वीरता' निबन्ध के इस अवतरण मे लेखक ने वीरता का स्वरूप एवं उसकी विशेषता बतलाई है। वीर का यह स्वभाव होता है कि वह अन्दर ही अन्दर अपना निर्माण करता है और फलापेक्षा किये बिना अपे कार्यों मे लगा रहता है।

व्याख्या–लेखक वीरता का लक्षण बतलाते हुए कहता है कि व्यक्ति जब हर घड़ी और हर पल अपने आपको महान बनाने का प्रयास करता है, स्वय को अद्वितीय बनाने की चेष्टा करता है, तब वह वीरता का आचरण करता है अर्थात् इस तरह का निरन्तर प्रयास करना ही वीरता कहलाती है। प्रायः लोग सोचते हैं कि बड़े-बड़े कारनामें करने वाला व्यक्ति ही वीरता से मण्डित है, परन्तु वीरता के कारनामे तो एक गौण अर्थात् अप्रधान तथा साधारण बात है। जो सच्चे वीर होते हैं वे अपने द्वारा किये गये चमत्कारी कार्यों की गणना नहीं करते हैं तथा उन्हें अपनी दिनचर्या के रूप में नहीं मानते हैं। वे तो एक विशाल वृक्ष की तरह होते हैं जो जमीन की गहराई से रस ग्रहण करते रहता है और भीतर ही भीतर अपनी शक्ति का संचय करता है। वृक्ष इस बात का ध्यान नहीं रखता है कि उसमें कितने फूल लगेंगे या कितने फल लगेंगे। उसे इस बात से भी कोई मतलब नहीं रहता है

कि उसके फल कौन खायेगा और वह यह हिसाब भी नहीं रखता है कि आज तक लोगों को कितने फल दिये। वह तो अपने फलों की गणना या चि करके केवल धरती से रस ग्रहण करके निरपेक्ष भाव से फलता-फूलता रहत इसी प्रकार सच्चे वीर भी अपने भीतर से ही शक्ति को ग्रहण करते रहते है अपने आप में महान् बनने की चेष्टा करते हुए यह अभिलाषा नहीं रखते इसका उन्हें क्या लाभ मिलेगा। वे तो निष्काम भावना से महान से महान करते रहना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं। एक प्रकार से उनका काम तो आपको सत्य में रखना है—सत्य को अपने अन्दर कूट-कूट कर भरना है औ की तरह अन्दर ही अन्दर बढ़ना है।

विशेष—(i) वीरता का स्वरूप एवं वीर पुरुष की निष्काम भावन ओजस्वी चित्रण हुआ है। वस्तुतः वीर पुरुष की रचना लोकहित के लिए होती वह वृक्ष की तरह सभी को फल, फूल व छाया प्रदान करता है।

(ii) भाषा-शैली सरल, सुबोध तथा भावात्मक है।

• **(3) वीरों के बनाने - - - - - - - - - - - रहने का है।** (पृ. 34-

प्रसंग—इस अवतरण में सरदार पूर्णसिंह ने वीरों की उत्पत्ति का सुन्दर वर्णन किया है और उसका सारा जीवन अपने आप भीतर ही भीतर नि होने वाला बताया है। इसी प्रसंग में लेखक कहता है कि—

व्याख्या—वीरों का निर्माण किसी कारखाने में नहीं होता है, अर्थात् किसी आदमी के द्वारा नहीं बनाया जाता है, वह तो स्वयं वीर बनकर सामने आता है। इस प्रसंग में लेखक ने वीरों की उपमा देवदार के वृक्षों से दी देवदार के अत्यधिक ऊँचे-विशाल वृक्ष वन में अपने आप उगते है उन्हें न अंकुरित करता है, न कोई उन्हें खाद-पानी ही देता है। वे तो बिना किसी के लगाये ही स्वतः तैयार हो जाते हैं। इसी प्रकार सच्चे वीर भी इस जीवन रूपी में स्वयं निर्मित होते हैं, वे बिना किसी के दूध पिलाये ही स्वतः बढ़ते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आ जाते हैं। इस तरह वीरों का ज देवदार के वृक्ष की तरह भीतर ही भीतर निर्मित होता है। वे तो अन्दर से ग्रहण करके परिपुष्ट होते हैं। जिस प्रकार जवाहिरात की खानों की ऊपरी ज में ऐसी कोई विशेषता नहीं रहती है कि जिससे जमीन के अन्दर विद्य हीरे-जवाहिरातों का पता चलता हो। उसी प्रकार सच्चे वीर बाहर से सा दिखाई देते हैं। उनका स्वाभाव तो सदा ही छिपा रहने का है। उनकी ब पहचान तो कभी-कभी ही होती है और मुश्किल से उनकी जिन्दगी बाहर दि देती है अर्थात् सच्चे वीर आत्मिक शक्ति से भीतर ही भीतर अपने व्यक्तित्व निर्माण करते हैं।

विशेष—(i) वीर की जीवन निर्माण की प्रक्रिया पर सकेतात्मक प्र डाला गया है। सच्चे वीर की उपमा देवदार के वृक्ष से साभिप्राय की गई है।

(ii) भाषा सरल, सुबोध और शैली भावात्मक, अलंकृत है।

(4) वीर पुरुष का - - - - - - - - सकते हैं। (पृ. 35-36)

प्रसंग–इस अवतरण में वीर पुरुष की आत्मिक शक्ति का परिचय दिया गया है और स्पष्ट किया गया है कि वे संसार को अपने कारखानों से अचम्भित कर सकते हैं।

व्याख्या–कायर पुरुष अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है, इस कारण उसका हृदय अस्थिर बना रहता है। लेकिन वीर का जीवन प्रकृति ने अपनी शक्तियों को व्यर्थ खो देने के लिए नहीं बनाया है। इस कारण वीर पुरुष के शरीर में आत्मिक शक्ति की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। इसलिए लेखक ने वीर पुरुष के शरीर को कुदरत की कुल ताकतों का भण्डार कहा है। वस्तुतः लेखक का कथन पूर्णतः सत्य है। संसार में सृष्टि का नियम भले ही बदल जाय, परन्तु वीर पुरुष की शक्ति का अक्षय भण्डार हिल नहीं सकता है। यह प्रकृति या कुदरत का सबसे बड़ा करिश्मा है। वीर के हृदय में दैवी शक्ति का अचल केन्द्र है। उसके सामने सूर्य का चक्कर अर्थात् गोला भले ही अन्तरिक्ष में हिल जाये, परन्तु वह दैवी केन्द्र अचल रहता है। कहने का आशय यह है कि सच्चे वीर पुरुष की आत्मिक शक्ति असीम होती है। इसलिए सृष्टि के अन्य पदार्थों का स्वभाव चाहे निरन्तर शक्ति का संचय करना हो अथवा व्यर्थ के कामों में अपनी शक्ति का क्षय करना हो, परन्तु वीरों का स्वभाव तो आत्मिक बल का संचय कर जीवन में सदा आगे बढ़ते रहने का है। इसलिए वे दिखावा नहीं करते हैं और अन्दर ही अन्दर उपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं। उनके हृदय में ऐसी शक्ति है कि वे उससे अपने हृदय रूपी आकाश में खड़े होकर सारे विश्व को हिला सकते हैं और ऐसा अचम्भे वाला विशेष कार्य कर सकते हैं, जिसे देखकर संसार उनका लोहा मान ले।

विशेष–(i) वीर के हृदय को दैवी शक्ति का अचल केन्द्र बताकर सामान्य लोगों की अपेक्षा उसका सृष्टि में विशेष महत्त्व दर्शाया गया है।

(ii) भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं शैली भावात्मक-अलंकृत है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'सच्चे वीर पुरुष धीर-गम्भीर और आजाद होते हैं।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–सच्चे वीर पुरुषों के मन में गम्भीरता और अचल शान्ति रहती है। वे बड़ी-से-बड़ी आपत्तियों में भी अपना धैर्य नहीं खोते हैं और समुद्र की तरह सदा स्थिर और गम्भीर बने रहते हैं। ऐसे वीर पुरुष किसी के अधीन नही रहते हैं, वे तो अपनी वीरता से दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं और दूसरों के दिलों पर शासन करते हैं। इस तरह सच्चे वीर पुरुष धैर्यशाली, गम्भीर प्रकृति और स्वतन्त्रता प्रिय होते हैं।

प्रश्न 2. 'सत्त्व-गुण के समुद्र में जिनका मन निमग्न हो गया है महात्मा, साधु और वीर हैं।" सरदार पूर्णसिंह के इस कथन में सत्त्व गुण का किया गया है। इसमें निमग्न व्यक्तियों को लेखक ने महात्मा, साधु और वीर क्यो है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जिस व्यक्ति के हृदय में सत्त्व गुण की प्रधानता होती है, जो गुण की प्रकृति का होता है, वह स्वार्थी नहीं होता है, उसमें अपने पराये की भावना नहीं होती है। वह सदा यही चाहता है कि लोक-जीवन का कल्या तथा अधिक से अधिक लोगों का हित साधन हो। वे संसार की भलाई के लि अपने जीवन को खपा देते हैं और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर जन-ज प्रिय बन जाते हैं। इसी कारण सत्त्व गुण के समुद्र में निमग्न व्यक्तियों को मह साधु और वीर माना गया है।

प्रश्न 3. 'दुनिया के राजाओं की दौड़ मनुष्य के शरीर तक होती उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—राजा अपने शासन को मनवाने के लिए जनता को भयभीत और दण्ड देने का तरीका अपनाते हैं। एक प्रकार से अपनी सुख-सुविधाओं के वे जनता का शोषण करते हैं और दण्ड-व्यवस्था के द्वारा जनता को अपने व रखते हैं। इस तरह उनका शासन जनता के शरीर पर होता है, सच्चे मन जनता उनकी प्रशंसक नहीं होती है। सच्चे वीर अपने कार्यों से लोगों के दिल शासन करते हैं और जनता उनकी अनुगामिनी बन जाती है।

प्रश्न 4. "वीरों के बनाने के कारखाने नहीं होते हैं। वे तो जीवन के में देवदार के दरख्त की तरह खुद-ब-खुद पैदा होते हैं " इस कथन को स्पष्ट की

उत्तर—सच्चे वीर का निर्माण आत्मिक चेतना से होता है। जिस व्यि हृदय में आत्मोन्नति की चेतना रहती है, वह स्वयं ही वीरतापूर्ण कार्य करने जाता है। आत्मोन्नति किसी शिक्षक, उपदेशक, माता-पिता या बाहरी साध द्वारा आरोपित चीज नहीं है, उसका निर्माण तो सच्चे वीर के अन्तरत जन्मजात प्रवृत्ति से स्वतः होता रहता है और अवसर मिलने पर किसी कार्य को सम्पन्न करने से वीर की पहचान हो जाती है। इस तरह वीरता तो आ संस्कार है, वीर का निर्माण किसी कारखाने में नहीं होता है।

प्रश्न 5. "कायर पुरुष कहते हैं—आगे बढ़े चलो, वीर पुरुष कहते हैं- हटे चलो। कायर कहते हैं—उठाओ तलवार। वीर कहते हैं—सिर आगे करो।" ले कायर तथा वीर के अन्तर को इस कथन द्वारा किस प्रकार प्रकट किया है- कीजिए।

उत्तर—लेखक के अनुसार कायर व्यक्ति का हृदय अत्यन्त कमजोर है। वह छोटी-सी बात पर अधीर होकर आगे बढ़ने, अपनी शक्ति को व्य गवाने और बदला लेने की सोचता है। जबकि वीर अपनी शक्ति को व्यर्थ मे खोता है। वह अचल रहकर अपने हृदय की गम्भीरता का परिचय देता है जरूरत पड़ने पर हिंसा की अपेक्षा आत्म-बलिदान का मार्ग अपनाता है। स्वार्थ को लेकर चलता है जबकि वीर लोक-कल्याण को लक्ष्य बनाता है।

प्रश्न 6. "वीर तो अपने अन्दर ही मार्च करते हैं, क्योंकि हृदयाकाश के केन्द्र में खड़े होकर वे संसार को हिला देते हैं।" सरदार पूर्णसिंह ने वीरों के स्वभाव को इन पंक्तियों में किस प्रकार प्रकट किया है—स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वीर सदैव आत्मिक शक्ति का संचय करते रहते हैं। इस कारण सच्चे वीर के हृदय में दैवी शक्ति का स्थिर केन्द्र होता है। वह जब अवसर आता है तो उस दैवी शक्ति या आत्मिक शक्ति के द्वारा सारे संसार को हिला देता है। उसकी आत्मिक शक्ति असीम होती है, जिससे वह अन्दर ही अन्दर सदा स्थिर बना रहता है।

प्रश्न 7. लेखक ने टीन के बर्तन के समान स्वभाव को छोड़ने का आग्रह क्यों किया है?

उत्तर—टीन का बर्तन झट गर्म और झट ठण्डा हो जाता है। जो व्यक्ति क्षण भर में ही आवेश में आये और क्षण मे ही शान्त हो जाये, उसका स्वभाव टीन के बर्तन जैसा है। ऐसे स्वभाव वाले व्यक्ति का प्रभाव अल्पकालिक होता है और वह वीर पुरुष भी नहीं माना जाता है। वीर पुरुष तो अन्दर ही अन्दर प्रदीप्त होने वाले तेज से सदा मण्डित रहता है। इस कारण लेखक ने टीन के बर्तन के समान अस्थिर स्वभाव को छोड़ने का आग्रह किया है।

प्रश्न 8. "हटो पीछे, अपने अन्दर जाओ। अपने आपको देखो। दुनिया और की और हो जायेगी। अपनी आत्मिक उन्नति करो।" पूर्णसिंह जी का यह कथन आज की परिस्थितियों में अत्यन्त प्रेरक एवं अनुकरणीय है। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

उत्तर—वर्तमान समय में हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी आ गई है जो आत्मिक उन्नति का मार्द प्रशस्त करें। आज तो ऐसे लोगों की प्रचुरता है जो स्वार्थ साधने में अपनी शक्ति गंवाते हैं, बाहरी दिखावा करके सज्जन और महापुरुष बनने का स्वांग रचते हैं, परन्तु आन्तरिक दृष्टि से वे धोखेबाज एवं भौतिक सुविधाओ के लालची होते हैं। हमारे देश में स्वतन्त्रता के बाद नव-निर्माण की जो प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, उसे ऐसे लोग ही अवरुद्ध कर रहे हैं। इन लोगों के कारण राष्ट्र का गौरव क्षीण हो रहा है। अतः आज एसे सच्चे वीरों की आवश्यकता है जो आत्मशक्ति का परिचय देकर सारे राष्ट्र की उन्नति करें और आन्तरिक उन्नति के साथ निरन्तर महान लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। अतः आज की परिस्थितियों मे लेखक का कथन अत्यन्त प्रेरक और अनुकरणीय है।

प्रश्न 9. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर—(1) हद दिखलाना = लक्ष्य के अन्तिम छोर पर पहुँच जाना।

देशभक्त शहीदों ने आजादी की लड़ाई की हद दिखला दी थी।

(2) रंग चढ़ना = प्रभाव होना, तदनुसार आचरण करना।

सच्चे वीर लोगों के दिलों पर अपना रंग चढ़ाकर यशस्वी बन जाते हैं। ... रमेश पर शराबी की संगति का रंग चढ़ गया।

प्रश्न 10. सन्धि विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बतलाइए।

उत्तर–(1) पिण्डोपजीवी – पिण्ड + उपजीवी – गुण सन्धि

(2) परोपकार – पर + उपकार – गुण सन्धि

प्रश्न 11. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

उत्तर–(1) मंसूर–यह आत्म-बलिदानी व्यक्ति स्वयं को पर ईश्वर मानता था। एक प्रकार से यह 'अहं ब्रह्मास्मि' या 'मैं खुदा हूँ' कह का उपासक था। इसकी इस घोषणा पर मुगल बादशाह ने इसे काफि किया और धर्मान्ध लोगों ने उसे अनेक कष्ट दिये। अन्त में वह सूली प गया।

(2) गुरु नानक–ये सिख धर्म के संस्थापक एवं प्रथम गुरु शिष्य ही सिख कहलाते हैं। इन्होंने भारत में सिख धर्म का प्रसार वि अपना जीवन जन कल्याण में लगाया।

प्रश्न 12. इस पाठ की विषय-वस्तु को आधार मानकर वीरता निबन्ध लिखिए।

उत्तर–पहले निबन्ध-सार दिया गया है, उसे देखिए।

प्रश्न 13. पिण्डोपजीवी पद पर सर्वाधिक शुद्ध विग्रह क्या होगा?

उत्तर–(5) पिण्ड का उपजीवी

प्रश्न 14. 'सच्ची वीरता' पाठ का केन्द्रीय भाव कौनसा होगा?

उत्तर–(3) अपनी आत्मिक उन्नति करना।

5. राघवः करुणो रसः

निबन्ध सार–'राघवः करुणो रसः' श्री कुबेरनाथ के 'गन्धमादन' स संकलित निबन्ध है। इसमें आज के मनुष्य की स्थितियों का चित्रण करके निर्वासित जीवन की तुलना श्रीराम के निर्वासन से की गई है।

नये साहित्य में करुण रस की स्थिति निर्वासन के रूप में दिखाई दे निर्वासन मात्र साहित्यिक व्यथा नहीं है। विश्वस्तर पर आज मनुष्य निर्वा व्यथा को वास्तविक रूप में भोग रहा है। इस निर्वासन के रूप अलग-अल में अलग प्रकार के हो सकते हैं, परन्तु यह सर्वत्र विद्यमान है। हमारे शरणार्थियों, पुराने कांग्रेसियों, आदर्शवादी बुद्धिजीवियों या ईमानदार अफसरों के हृदय में प्रवेश कर देखा जाय, तो पता चल जायेगा कि वे अपने परि निर्वासित अनुभव कर रहे हैं। इसके कारण भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु निर्वास व्यथा का शाप एक ही है। ये लोग निर्वासन के साथ-साथ अजनबीपन शिकार हैं।

नया मनुष्य अकारण निर्वासित है। रामायण को देखने से पता चलता है कि राम भी अकारण निर्वासित हुए थे। दोनों की स्थिति एक है, परन्तु राम का व्यक्तित्व निर्वासित सन्दर्भ के भीतर जैसी प्रतिक्रिया करता है, वैसा नया मनुष्य नहीं करता। राम अजनबीपन से ग्रस्त नही थे। सीताहरण के पश्चात् और लका अभियान से पूर्व राम के निर्वासन का चरम रूप मिलता है। वर्षाकाल आने से राम सीता का अन्वेषण नहीं कर सकते थे, तत्पश्चात् शरद ऋतु आयी। उस काल मे राम की मनोव्यथा समस्त प्रकृति के साथ एकाकार हो गई। उस समय उनका निर्वासन अत्यन्त यातनामय हो गया था, फिर भी वे आत्म-संघर्ष करते रहे। वे अत्यधिक शोक सन्तप्त रहते हुए भी तथा घोर निर्वासन व्यथा भोगते हुए भी धीर-करुण के प्रतीक बने रहे। वे प्रकृति के सौन्दर्यबोध से मन को धैर्य बधाते रहे। आज के मनुष्य में इस शान्त सौन्दर्यबोध की नितान्त कमी है। दूसरी बात यह कि राम में अनासक्ति थी, वे 'स्व' के प्रति तटस्थ थे और किसी मोह से बधे नही थे। वे तो अवसर आने पर किसी भी प्रिय वस्तु का त्याग कर सकते थे। सीता-परित्याग का प्रसंग इस दृष्टि से द्रष्टव्य है, जबकि आज का मानव आसक्ति से ग्रस्त है। वह कर्मफल की कामना करता है, इसलिए उसकी निर्वासन व्यथा अधिक है। आज के मनुष्य ने स्वयं को 'स्व' की कोटर में बद कर लिया है। वह धुरीहीन है, उसकी प्रतिबद्धता किसी से नहीं है, वह तो सबसे कट कर जीना चाहता है। यही राम के तथा आज के मानव के निर्वासन मे मौलिक अन्तर है।

लेखक ने रामायण के अनेक प्रसंग उपस्थित करके यह स्पष्ट किया है कि राम का जीवन करुणा, शील, समवेदना आदि से युक्त है, साथ ही उनका जीवन एक ट्रेजेडी है। उन्हें बचपन से ही अनेक कष्टों का सामना करना पडा, युवराज पद पर आसीन होते-होते बनवासी बन गये। इसलिए राम का जीवन साक्षात करुण रस है। वे ईश्वर की तरह अनासक्त, तटस्थ और महिमामय हैं, तो मनुष्य की तरह धीर, वीर तथा गम्भीर हैं, स्निग्ध, श्यामल और करुण है। उनकी सम्पूर्ण छवि करुणा से मण्डित दिखाई देती है। अतः उनके द्वारा भोगी गई सारी व्यथा एवं सम्पूर्ण जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या स्थल

(1) नया मनुष्य - - - - - - - - - - का व्यक्तित्व नहीं। (पृ. 40)

प्रसंग—'राघवः करुणो रसः' निबन्ध के इस अवतरण में लेखक ने राम ने जो निर्वासन भोगा, वही निर्वासन आज के मनुष्य को भी भोगते हुए विवेचित किया है। इस प्रसंग में लेखक कहता है कि—

व्याख्या—आज का मनुष्य अकारण ही निर्वासन की व्यथा भोग रहा है। यह निर्वासन व्यथा आज सारे संसार की समस्या है। देखा जाए तो कही पूँजीवाद और साम्यवाद का चरण उत्कर्ष है तो कही जातिवाद, आस्थावाद आदि विद्यमान है। इन ऐतिहासिक स्थितियों के कारण विश्व स्तर पर नया मानव निर्वासित है अर्थात् वह अपने ही समाज, अपने ही वर्ग और अपने ही घर परिवार में निर्वासित हो व्यथा भोग रहा है। इस निर्वासन व्यथा में यद्यपि नयी पीढ़ी का कोई दोष नही

है। रामायण में भी ऐसे अकारण निर्वासन का उदाहरण है। वहाँ किशोरावस्था में घर में रहते हुए भी अनेक कष्ट भोगने पड़े, युवराज अभिषिक्त होने की तैयारी चल रही थी कि तभी अकारण उन्हें निवा पड़ा। इस तरह तुलनात्मक रूप में देखा जाय तो राम के समान आज मानव अकारण ही निर्वासन की व्यथा अर्थात् करुणामय जीवन भोग रहा और आज के नये मानव की स्थिति एक जैसी है, दोनों ने स्वयं कोई अप किया, वे निरपराध हैं। राम को अपनी किसी गलती पर वनवास नही ि था, वे निरपराध थे और आज के नये मानव की भी कोई गलती नहीं भी दोनों को अकारण ही व्यथा भोगनी पड़ रही है।

इस प्रसंग में लेखक प्रतिपादित करता है कि यद्यपि राम और न में इस दृष्टि से सतही समानता है, फिर भी अपने-अपने सन्दर्भ में उनकी प्र समानधर्मी नहीं है। इसका कारण यह है कि राम निर्वासन के कष्टमय अपने व्यक्तित्व का उत्कर्ष बढ़ाते हैं। वे वन में सभी से अपनत्व स्थापित क सौन्दर्य बोध के साथ अपनी व्यथा को निस्पृह-भाव से भोगते हैं। एक प्र उनका व्यक्तित्व उस दशा में आत्मसंघर्ष करने लगता है, परन्तु नये म व्यक्तित्व निर्वासन-व्यथा के क्षणों में कोई प्रतिक्रिया नहीं करता है। उसमें आत्मसंघर्ष की क्षमता रहती है और न अजनबीपन से मुक्त रहने की दिखाई देती है। इस कारण आन्तरिक रूप से राम और आज के नये म निर्वासन में पर्याप्त अन्तर है।

विशेष—(i) राम और आज के नये मानव के द्वारा भोगी जा रही निर्वासन-व्यथा का तुलनात्मक वर्णन किया गया है तथा उनमे मौलिक अ बताया गया है।

(ii) भाषा तत्सम-तद्भव प्रधान और प्रवाहपूर्ण है, शैली विवेच है।

(2) निर्वासन की इस - - - - - - - - - सकते हैं। (पृ. 43)

प्रसंग—प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने राम के निर्वासन और आत्मस अनेक पक्ष प्रतिपादित किये हैं। इसी क्रम में इस अवतरण में उनके सौन्द अनासक्ति का वर्णन कर उन्हें कुण्ठा से रहित बतलाया गया है।

व्याख्या—आज का नया मानव निर्वासन भोगता हुआ भी आसक्त है, उसमें सौन्दर्यबोध का अभाव एवं आत्मक्षय की स्थिति है। लेकिन नि व्यथा की तीव्रतम स्थिति मे न तो कुण्ठा या अवसाद ने घेरा और न उन्होने आ किया। अतः राम के इस स्वभाव का एक दूसरा पक्ष यह है कि वे वन मे भी से सौन्दर्यचेतना ग्रहण कर रहे थे। अर्थात् राम में सौन्दर्यबोध की मात्रा अ थी। इसलिए सीताहरण के बाद वे प्रकृति से अपनी व्यथा प्रकट कर उसे सदृश देखने लगे थे। उनका वह सौन्दर्यबोध वस्तुतः तात्कालिक निदान का,

निर्वासन व्यथा को कम करने का अवसरानुकूल उपाय था, उसका स्थायी निदान तो अनासक्ति या 'स्व' के प्रति तटस्थता की भावना थी। इस अनासक्ति से ही वे निर्वासन की व्यथा भोग सके थे, क्योंकि उस दशा में उन्हें किसी का मोह नही था। वे तो 'स्व' या स्वार्थ के प्रति एकदम तटस्थ या उदासीन थे। उन्हें भरत और लक्ष्मण अतीव प्रिय थे, वे दोनों उनकी आँखो के तारे थे, सीता उनके हृदय की सांस थी, परन्तु इतना होने पर भी जब अनासक्ति को व्यक्त करने का अवसर आया, तो वे उनके मोह में बधे नहीं रहे। उन्होने भरत की बात न मानकर वनवास की दृढ़ता दिखाई, अन्त में लक्ष्मण के द्वारा सीता का परित्याग सम्पन्न कराया, स्वय लक्ष्मण को भी जाने दिया। इस तरह चरम बिन्दु पर राम एकदम अनासक्त एवं घोर तटस्थ दिखाई देते हैं और उस दशा मे वे किसी का भी परित्याग करने की क्षमता रखते हैं।

आशय यह है कि 'स्व' के घेरे मे आवृत्त रहने से निर्वासन की व्यथा असह्य हो जाती है, आसक्ति से फल की कामना बनी रहती है, जिससे काम, क्रोध आदि का प्रभाव बढ़ जाता है। राम ने अनासक्ति रखकर ऋतुचक्र के साथ स्वय को एकाकार कर लिया था। इसलिए निर्वासन की व्यथा को वे सहजता मे भोगते रहे।

विशेष—(i) इसमे राम के व्यक्तित्व एव स्वभाव का चित्रण करते हुए यह बतलाया गया है कि निर्वासन व्यथा का तत्कालीन निदान तो उन्होंने अपने सौन्दर्यबोध से किया और स्थायी निदान अपनी अनासक्ति से। इसी कारण उन्हें निर्वासन की पीड़ा ने इतना व्यथित नही किया।

(ii) भाषा-शैली सरल, सुबोध एव विवेचनात्मक है।

(3) राम ऋतु चक्र से - - - - - - - - - - - गये हैं। (पृ. 44)

प्रसंग—इस अवतरण में लेखक ने रामायण के कथानक को लक्ष्य मे रखकर स्पष्ट किया है कि राम निर्वासन की व्यथा अनासक्त भाव से भोगते रहे। रामायण का भी यही मूल प्रतिपाद्य है।

व्याख्या—रामायण में राम का व्यक्तित्व आसक्ति से रहित दर्शाया गया है। उन्होंने रावण का वध करके अपनी पत्नी सीता का उद्धार किया, यह तो एक निमित्त मात्र बात थी। वस्तुतः वे स्वार्थ या आसक्ति से सर्वथा मुक्त थे। ऋतु चक्र सही चलता रहे, इसके लिए उन्होने रावण का वध किया था। यदि मैथिली के प्रति उनकी आसक्ति होती, तो वे दुबारा उसका स्वय परित्याग नही करते। इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि ऋतुचक्र से प्रतिबद्ध थ, वे उससे एकाकार हो गये थे। ऋतुचक्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अर्थात् एकमात्र निष्ठा उन्हे जो आदेश देती थी, वैसा वे करते रहते थे। एक प्रकार से वे स्वनिरपेक्ष रहते थे, उनकी कोई आसक्ति नहीं थी। वे प्रत्येक काम अनासक्ति के साथ करते गये। यदि उनमे किसी बात की आसक्ति होती या 'स्व' का चिन्तन होता, तो वे प्रत्येक काम करने मे

पहले उससे लाभ-हानि का भी चिन्तन करते। परन्तु उन्होने सासारिक ल तरह लाभ या हानि की युक्ति नहीं देखी और न इन्हें निमित्त रूप में अपन तो अनासक्त भाव से, लाभ-हानि की सांसारिक युक्तियों की चिन्ता न करके कार्य करते रहे। इस प्रक्रिया में चाहे न्याय हो अन्याय, उसका पाप राम व नहीं कर सका क्योंकि उन्होंने सारे कार्य काम, क्रोध, राग, मोह तथा आस बिना निरपेक्ष भाव से सम्पन्न किये। चाहे रावण का वध हो, चाहे बालि व हो, चाहे सीता परित्याग की घटना हो, उन्हें जरा भी मनस्ताप नहीं हुआ वे तो काम क्रोधादि से सर्वथा मुक्त और अनासक्त थे।

विशेष–(i) लेखक ने संकेत रूप बतलाया कि आसक्ति रखने निर्वासन की व्यथा से पीड़ित होता है। लेकिन निरासक्त व्यक्तियों के लिए त काल सभी दिन और सभी दशाएँ एक समान होती हैं, वे ऋतु चक्र से एकाक जाते हैं, इसलिए उन्हें निर्वासन व्यथा सह्य हो जाती है।

(ii) भाषा तत्सम-प्रधान तथा शैली विवेचनात्मक, भावात्मक है।

(4) निर्वासन या अकेलापन - - - - - - - - - - मानता हूँ। (पृ.

प्रसंग–इस अवतरण में श्रीकुबेरनाथ राय ने यह स्पष्ट किया है कि ने जो निर्वासन भोगा, उसमें उन्हें अजनबीपन की यातना नहीं भोगनी बड़ी कारण उनका निर्वासन सहन करने योग्य बन गया था। इसी क्रम में लेखक कथन है कि–

व्याख्या–राम ने निर्वासन में रचना की, जबकि आज का नया म निर्वासन में आत्मक्षय कर रहा है। वैसे भी सृष्टि की रचना के लिए अकेल जरूरी है। यद्यपि राम बनवास काल में भी हजारों वानर योद्धाओ और लक्ष सुग्रीव आदि से घिरे रहते थे, वे अकेले नही थे। परन्तु आन्तरिक रूप से वे अ थे, चरम बिन्दु की स्थिति पर तो लक्ष्मण भी उनके साथ नहीं था। राम का तरह का अकेलापन 'पदमपत्रामिवाम्भसा' वाला था। इसलिए वे जाने-अन लोगो में एकदम अकेलापन भी भोग रहे थे। देखा जाय तो निर्वासन या अकेल मूलतः शाप अर्थात् असहनीय व्यथा की स्थिति नही है। यह शाप की स्थिति हो जाती है, इसमे अजनबीपन भी जुड़ जाता है। तब व्यक्ति निर्वासन की व्यथ भी सभी से स्वय को परिचित मानता है, तो तब निर्वासन का अर्थ रचना क वाला, सृष्टि का निर्माण करने वाला बन जाता है। ऐसी स्थिति मे नित्य अकेला शाप की स्थिति नही है। लेकिन जब निर्वासन का अर्थ यह लिया जाय कि विश्व से अलग और भिन्न है, समस्त मनुष्यो से वह भिन्न है, उसमे प्रकृति के प्र सौन्दर्यबोध नहीं है, वह पूरे विश्व समाज मे अपरिचित एव 'स्व' की कोटर एकाकी है, तो तब उसका अपने आप से अजनबीपन अवश्य ही शाप की स्थिति परिचायक है।

लेखक का आशय यह है कि राम को निर्वासन की व्यथा अकेले भोगनी पड़ी। उस अकेलेपन मे उन्होने अपने अभ्यन्तर की रचना की तथा अ [illegible] की [illegible] के लिए प्रकृति से मेल-जोल, सहभाव एव करुणा आदि

अपनाया। इससे उनका निर्वासित जीवन अजनबीपन से मुक्त रहा। निर्वासन काल में अजनबीपन की व्यथा भोगना वस्तुतः शाप जैसा ही है और लेखक निर्वासन की ऐसी स्थिति को हेय मानता है।

विशेष–(i) आज का नया मनुष्य 'स्व' के घेरे में रहने से स्वय को अजनबीपन से ग्रस्त मानता है। उसमें आत्मसंघर्ष और सौन्दर्यबोध नही है। इस कारण वह निर्वासन की जो यातना भोग रहा है, वह ठीक नही है। लेखक ने ऐसी स्थिति पर सशक्त आक्षेप किया है।

(ii) भाषा शैली सरल, सुबोध एवं विवेचनात्मक है।

'अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "विश्व स्तर पर आज मनुष्य निर्वासन की व्यथा को वास्तविक रूप ' भोग रहा है।" इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार लिखिए।

उत्तर–वर्तमान समय में अत्यधिक भौतिकवाद एवं घोर व्यक्तिवाद फैला आ है। इस कारण आज का मनुष्य अपने समाज और अपने परिवेश मे रहता आ भी उससे एकदम कटा हुआ-सा रहता है। यह समाज से अलग रहने की दनामय अनुभूति ही निर्वासन की व्यथा है। 'स्व' की कोटर मे बन्द आज का नुष्य एक अजीब दौर से गुजर रहा है। यह निर्वासन सारे विश्व मे व्याप्त है। जीपति देशों में इसका कारण दूसरा है तो पश्चिमी यूरोप के देशो मे इसका प्रकार भन्न है, साम्यवादी देशों में इसकी अलग दशा है तो भारत जैसे गरीब देशो मे सकी स्थिति और है। संक्षेप में अकारण निर्वासन की इस व्यथा को विश्वस्तर पर ाज का मनुष्य भोग रहा है।

प्रश्न 2. "राम उसी तरह अकारण निर्वासित हुए थे जैसे आज का मनुष्य।" खक ने राम के निर्वासन को नवीन मतुष्य के निर्वासन के समान क्यों बतलाया है?

उत्तर–नये मनुष्य और राम के निर्वासन को लेखक ने इस कारण समान तलाया कि दोनों निरपराध हैं और दोनों की स्थिति एक है। राम अकारण र्वासित हुए थे और आज का नया मानव भी अकारण निर्वासन की व्यथा भोग हा है। राम अपने ही लोगों के द्वारा निर्वासित किये गये थे और नया मनुष्य भी पने ही समाज, अपने ही वर्ग एवं समूह में रहकर भी निर्वासित जीवन भोग रहा ।

प्रश्न 3. "राम के निर्वासन का चरम रूप सीताहरण के पश्चात् तथा का-अभियान के पूर्व के मध्यान्तर में मिलता है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–सीताहरण के पश्चात् राम ने सुग्रीव से मित्रता की तथा बालि का ध किया। उन्हें जटायु ने पहले ही सूचना दे दी थी कि रावण ने मैथिली का ाहरण किया। फिर उसके नूपुर और वस्त्र देखकर अंदाजा हो गया था कि रावण मारा शत्रु है। इसलिए लंका पर अभियान करना तय था, परन्तु वर्षा ऋतु आ ने से अभियान को शरत्काल तक रोक देना पड़ा। इस अवधि में राम माल्यवन्त

पर्वत पर निस्संग और एकाकी रहे, उनका मन व्यथित होता रहा, प्रकृति समय उन्हें व्यथित करती रही। बादल गरजते रहे, बिजली चमकती रही रावण द्वारा सीता पर किये जा रहे अत्याचारों का स्मरण बार-बार आ इस कारण यह मध्यान्तर राम की निर्वासन-व्यथा का चरम रूप कहा गया

प्रश्न 4. "तुलसी के नीलाम्बुज कोमल राम के व्यक्तित्व की ज धीरता के समुद्र में है।" श्रीकुबेरनाथ राय के इस कथन पर अपने विचार लिखि

उत्तर—श्रीकुबेरनाथ राय के इस कथन का आशय यह है कि काल में राम की अनेक व्यथाएँ एवं कष्ट भोगने पड़े, परन्तु वे कहीं उत्तेजित, आसक्त या अशान्त नहीं दिखाई दिये। सीताहरण के तुरन्त पश्च ही राम प्रकृति से सीता का परिचय व अता-पता पूछते हुए कुछ उत्तेजित थे, परन्तु भीतर ही भीतर उनकी प्राण-शक्तियाँ सक्रिय थीं। फिर बस आयी, सारी प्रकृति कुसुमित हुई, परन्तु इस मादक वातावरण में वे अनासक्त अपनी व्यथा को शान्त करते रहे। तत्पश्चात् वे कुछ वैराग्य से भी आत्र सुग्रीव से मैत्री के बाद वर्षा ऋतु के आगमन से उनका मन भले ही कुछ सा हो उठा, फिर भी वे प्रकृति के शान्त सौन्दर्य मे अपनी उत्तेजना को करते रहे। उसके बाद तो शरतकाल आने पर उनका मन पूर्णतः प्रकृतिस्थ और वे शान्त, गम्भीर एवं धैर्यशाली दिखाई देने लगे। अतः गोस्वामी तुलसी अनुसार देखा जाय, तो 'नीलाम्बुज श्यामल कोमल राम' का व अगाध-धीरता से व्याप्त था।

प्रश्न 5. " राम ने मनुष्यता का वरण उसी सीमा तक किया है, ज शील और करुणा का सम्बन्ध है।" श्रीराय के इस कथन की युक्तियुक्त कीजिए।

उत्तर— श्रीराय ने प्रस्तुत निबन्ध में प्रतिपादित किया है कि शील करुणा राम के व्यक्तित्व के मुख्य तत्त्व या विशेषताएँ हैं। वस्तुतः ये विशेषताएँ ही उन्हें मानवतावादी घोषित करती हैं। यथार्थ रूप मे राम अन से मण्डित होने से ईश्वरीय अंश हैं। बालि का वध करने पर उसकी वेद वाणी सुनकर राम का हृदय करुणा से भर जाता है, तब वे मरणासन्न बा सिर पर हाथ रखकर उसे धैर्य रखने के लिए कहते हैं। यह उनकी करु भावना और शील का श्रेष्ठ उदाहरण माना जा सकता है। निर्वासन की भोगते रहने पर भी वे 'रत्र' से तटस्थता रखते हैं, परन्तु समय-समय पर मनुष्यता नहीं छोड़ते हैं।

प्रश्न 6. "आज के मनुष्य ने अपने आप को 'स्व' की कोटर में ब लिया है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर—लेखक का उक्त कथन पूर्णतः सत्य है। आज का नया मनुष्य धुरीहीन है, उसकी प्रतिबद्धता किसी में नहीं है। देश, राष्ट्र, समाज, प मानवीय भाव (प्रेम, करुणा, दया, अभिमान आदि) से वह कट कर अलग जीना चाहता है। वह संकुचित 'स्व' के भीतर स्वयं रखकर चरम निर्वास रसपूर्वक भोगना चाहता है। इस प्रक्रिया में उसका आत्मक्षय हो रहा है। आ

नया मनुष्य अपने ही समाज, अपने ही वर्ग और अपने ही परिचितों के बीच स्वय अजनबीपन से घिरा हुआ अनुभव कर रहा है। इसका मूल कारण उसका 'स्व' की कोटर में स्वयं को बन्द करके रखना है। यही वजह है कि नया मनुष्य असीम यातना भोग रहा है।

प्रश्न 7. "राम निर्वासन तो भोगते हैं पर अजनबीपन की व्यथा उन्हें नहीं भोगनी पड़ती।" राम तथा आधुनिक मनुष्य के निर्वासन में लेखक ने कौनसी असमानता बतलाई है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर—राम तथा आधुनिक मनुष्य के निर्वासन मे यह असमानता है कि राम का व्यक्तित्व निर्वासन सन्दर्भ के भीतर जैसी प्रतिक्रिया करता है, वैसा नये मनुष्य का व्यक्तित्व नहीं करता है। राम को घर से दूर प्रकृति के खुले वातावरण मे, वन-पर्वत भागो में निर्वासन भोगना पड़ा, जबकि नया मनुष्य घर बैठे ही यह व्यथा भोग रहा है। राम ने प्रकृति के सौन्दर्य से अपना सम्बन्ध जोड़ लिया था, वे वन के सभी पेड़ पौधों को अपनी व्यथा मे शामिल करते थे, इस कारण एकान्त वन में भी वे अजनबीपन से ग्रस्त नही थे। नया मनुष्य तो अपने ही समाज तथा परिवेश में अजनबीपन से ग्रस्त है। वह अपनी पीड़ा को बांटना नही चाहता है। इस असमानता के कारण नया मनुष्य अकेला न होता हुआ भी अजनबीपन की व्यथा से आत्मक्षय कर रहा है।

प्रश्न 8. श्री कुबेरनाथ राय ने राम के जीवन को साक्षात् करुणा रस किस आधार पर कहा है—युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

उत्तर—रामायण का कथानक देखने पर स्वतः ज्ञात हो जाता है कि राम का समस्त जीवन एक ट्रेजेडी है। उनका जन्म राज परिवार के वैभव विलास मे हुआ, परन्तु छोटी अवस्था में ही उन्हें विश्वामित्र के साथ वन मे रहना पड़ा। तत्पश्चात् राज-परिवार में ही उन्हें कष्ट उठाने पड़े, युवराज पद अभिषेक की तैयारी चल ही रही थी कि उन्हें अकारण निर्वासित किया गया। फिर पिता का निधन, भरत की आतुरता, सीता का हरण आदि सभी प्रसग ऐसे हैं, जिनसे उनका हृदय करुणा से भर गया। रावण का विनाश करने के पश्चात् सीता मिली और वनवास की अवधि पूरी कर घर लौटे, तो लोकापवाद से पुनः सीता का परित्याग करना पड़ा। तत्पश्चात् राजमहलों में रहते हुए भी उनकी निर्मम निर्वासन की स्थिति चलती रही। लव-कुश की प्राप्ति हुई, पर फिर भी राम के जीवन की ट्रेजेडी समाप्त नहीं हुई। इन सभी प्रसंगों को देखने से ज्ञात होता है कि राम का सारा जीवन करुणापूर्ण था और वे साक्षात करुण रस मे निमग्न थे।

प्रश्न 9. 'त्व' प्रत्यय के योग से बनने वाले पाँच शब्द लिखिए।

उत्तर—(1) मनुष्य + त्व = मनुष्यत्व (2) व्यक्ति + त्व = व्यक्तित्व
(3) लघु + त्व = लघुत्व (4) महत् + त्व = महत्त्व
(5) अपना + त्व = अपनत्व

प्रश्न 10. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए तथा वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर—(1) **उत्पीड़ित** = पीड़ा से ग्रस्त हुआ। आर्थिक विषमता से निम्न वर्ग के लोग उत्पीड़ित हैं।

(2) **विस्थापित** = एक स्थान से दूसरे स्थान पर अस्थायी रखना। बाढ़ और तूफान से प्रभावित लोग विस्थापित होकर राहत शिवि रहे हैं।

(3) **निष्क्रिय** = कोई क्रिया न करना। निष्क्रिय रहने से म किसी भी काम में सफलता नहीं मिलती है।

(4) **प्रतिबद्धता** = किसी के प्रति निष्ठा का भाव। देशवा अपने राष्ट्रीय गौरव की प्रतिबद्धता होनी चाहिए।

प्रश्न 11. **निम्नलिखित में जिस शब्द का अर्थ अन्य सबसे भिन्न पहचानिए।**

उत्तर—(3) जिला वतन

प्रश्न 12. **निम्नलिखित शब्दों में एक ढूंढकर निकालिए जिसका विग्र सबसे भिन्न हो।**

उत्तर—(1) कामातुर।

6. पत्र : इण्टेलेक्चुअल भैया के नाम परम्परा जीजी का

पाठ सार—प्रस्तुत पत्रात्मक शैली के गद्य लेख में डॉ. विद्यानिवास बुद्धिवादी भैया के नाम परम्परा जीजी का भावमय सन्देश निरूपित कि इसमें आधुनिकता के आकर्षण में परम्परा की अवहेलना करना अनुचित ब गया है। अपने भैया को अनाम गाँव से परम्परा जीजी पत्र लिखती है कि की पूर्णिमा अर्थात् रक्षाबन्धन का दिन बीत गया, परन्तु तुम राखी बँधवा आये। आधुनिकता ने आजकल सारा रास्ता रपटीला कर दिया है, जिससे वालों को भारी परेशानी होती है। अब तो हर साल आधुनिकता की कोई न बाढ आ ही जाती है, जिससे पुरानी परम्पराओं के टीले एवं मिट्टी के कगार लग जाते हैं। अब बुद्धिवादी व्यक्ति परम्पराओं को छोड़कर आधुनिकता की आकृष्ट हो रहा है। इसलिए वह पुराने सामाजिक सम्बन्धों को भी भूलता ज है।

परम्परा जीजी पत्र में लिखती हैं कि तुम राखी बंधवाने नहीं उसका दुःख नहीं है, लेकिन पिछले साल तुम्हारा भाईचारा लौट आने स परम्परा तुम्हारे निभायी थी, उस कारण दुःख हो रहा है। तुम परम्परा क साथ निभाने का स्वांग रच रहे हो तथा आधुनिकता के मार्ग पर भी बढ़ रहे इस कारण ऐसे छोर पर पहुँच गये हो, जहाँ पर पैर रखने की जगह नही है। अवसर पर मेरी यही इच्छा है कि तुम भय एवं द्विविधा को त्यागकर आगे ब आधुनिकता तुम्हारे आगे नहीं है, अर्थात् तुम उसके अन्धानुकरण करने वाले हो सकते, आधुनिकता तो तुम्हारे बगल में है।

परम्परा जीजी पत्र में स्पष्ट लिखती हैं कि बहिन अपने भाई के स्नेह की आकांक्षा रखती है। साथ ही वह भाई की सदा मंगल-कामना करती है। इसलिए भाई को बहिन की भावना का आदर करना चाहिए और उससे दूर नहीं भटकना चाहिए। आज का बुद्धिवादी परम्परा से हटकर, आधुनिकता के व्यामोह मे निरन्तर भटक रहा है। उसमे वर्चस्व, विवेक तथा समझदारी नही है वह बिजली के लट्टुओं की चकाचौंध में सजे बन्दनवार के नीचे ही आधुनिकता का प्रवेश मानने लगा है। केवल बड़े-बड़े यन्त्रों की गड़गड़ाहट और मिल के भोपू की पुकार पर ही अपनी जागृति समझने लगा है। वस्तुतः यह बुद्धिजीवी मानव का कोरा भ्रम है क्योंकि बिजली का प्रकाश उत्पन्न नहीं होता है, वह तो अभिव्यक्त होकर सर्वत्र प्रकाशित करता है। केवल विघटन को अपनी विवशता मानना, केवल तोड़ने का कार्य करना आधुनिक समाज का एक अस्तित्वहीन आचरण रह गया है। परम्परा को तोड़ना ऐसा ही आचरण है।

परम्परा जीजी अपने छोटे भाई बुद्धिजीवी को पत्र मे लिखती है कि जब डिग्रीधारी दीमक (नये बेरोजगार स्नातक) सब पुस्तको को चट कर रहे हैं। उन्होंने रामचरितमानस का ज्यादातर हिस्सा चाट लिया है, अब केवल बालकाण्ड शेष है। अंग्रेजी प्राइमर बची रह गई है। हिन्दी की परम्परा का अपमान चल रहा है तथा आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य सभ्यता एव यान्त्रिकता का अनुसरण किया जा रहा है। इससे अपनी परम्परा मरेगी नहीं, वह नये-नये जन्मधारण करके हमें अपनापन देती रहेगी, हमें अविभक्त रखेगी।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या स्थल

(1) मेरी मंगल-कामना - - - - - - - - - - - शरमाते हो। (पृ. 50)

प्रसंग—इस अवतरण में परम्परा जीजी ने अपने बुद्धिजीवी भैया को पत्र मे यह लिखा है कि वह रक्षा-बन्धन पर राखी बंधवाने नही आया। वह आधुनिकता के चक्कर में पड़कर अपनी सनातन परम्पराओं को भूलता जा रहा है। इस कारण आधुनिक बुद्धिजीवी मानव के लिए पारस्परिक नाते-रिश्ते गौण हो गये हैं।

व्याख्या—परम्परा कहती है कि मेरे भैया, मैं सच कहती हूँ कि मै इसलिए तुम्हारी मंगल-कामना नहीं कर रही हूँ कि इससे तुम मुझसे स्नेह करोगे, मै इस आशा को लेकर यह नहीं कर रही हूँ क्योकि तुम अवस्था मे मुझसे छोटे हो, इसलिए तुम मेरी उम्र लेकर जियो। आशय यह है कि परम्परा पूर्ववर्ती होने से बड़ी है तथा आधुनिकता से ग्रस्त बुद्धिजीवी व्यक्ति उससे छोटा है। अतः बड़ी बहिन की उम्र छोटे भाई को मिलने की लोक-भावना इसमे व्यक्त हुई है।

परम्परा कहती है कि तुम मेरा पुण्य लेकर आगे बढो। मैं एक स्नेही बहिन के समान तुम्हारे मार्ग की बाधक नहीं बनूँगी। मेरा पवित्र स्नेह तो तुम्हारे चरणों की धूल को सींचना चाहता है, उसे गीला करना चाहता है, ताकि वह उड़कर तुम्हारे पीठ पर न लग सके। आशय यह है कि परम्परा के सहारे ही

पुराने सम्बन्ध चल सकते है। बौद्धिकता के मार्ग में परम्परा बाधक नही
अगर सही ढंग से इस मार्ग पर चला जावे, तो वह सहायक ही रहती है
परम्परा बाधक या आधुनिकता की अवरोधक है, ऐसा अकारण भय क
है। बुद्धिवादी व्यक्ति समझता है कि वह आधुनिकता का अनुसरण कर
उसका अनुसरण कार्य सही है,परन्तु बात ऐसी नहीं है। आधुनिकता तो
चलने के बजाय साथ-साथ चलती है, अतः उसे आगे देखना व्यर्थ है।
बुद्धिवादी व्यक्ति अपने लक्ष्य पर बढ़ते समय आगे-पीछे नहीं देखना चाहत
दाएँ-बाएँ भी नहीं देखता है। इसमें वह मानों शरमाता है—संकोच करता
सोचता है कि आगे पीछे देखने पर तो उसका मन परम्परा का पालन
अनायास विभक्त हो जायेगा।

विशेष—(i) बुद्धिवादी व्यक्ति के आधुनिकता के व्यामोह पर व्य
गया है। परम्परा को आधुनिकता का आधार बताकर उसका अनुकरण
सन्देश दिया गया है।

(ii) भाषा—शैली सरल एवं व्यंग्यात्मक है।

(2) मैं इतनी ओछी - - - - - - - - - - - नहीं पहुँचती। (

प्रसंग—यह अवतरण विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित पत्रात्मक गद्य
उद्यत परम्परा जीजी का कथन है। वह अपने पत्र में बुद्धिजीवी भाई को
कमजोरियों एवं अपनी निःस्वार्थ कामनाओं का उल्लेख करती है।

व्याख्या—वर्तमान समय में अति बुद्धिवादी व्यक्ति अपनी बात क
करने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है, जिनसे कथ्य और भी अस्
जाता है। परम्परा की अवहेलना करना ही वह अपनी चरम आधुनिकत
बैठा है। नये मनुष्य की इस कमजोरी की ओर संकेत करती हुई परम्परा
लिखती है कि मैं इतनी ओछी नहीं हूँ जो स्वार्थवश अपने भाई का अहित
उसके सुख-स्म्पत्ति की हिस्सेदार बनूँ। मेरा भाई अपने आधुनिक भवन मे अ
रोशनी में बैठा रहे, तो मैं उससे ईष्या क्यों करूँ। यह सुख तो उसके अप
का फल है। मैं इतनी निर्लज्ज भी नहीं हूँ कि बिजली की रोशनी और सज
चमकते हुए तुम्हारे कमरे के बाहर बरामदे में बिखरे प्रातःकालीन मे हिस्सा
अर्थात् तुम्हारे बरामदे में फैला हुआ प्रकाश अपनी परम्परा निभा रहा है,
अन्दर कमरे में आधुनिकता का प्रकाश है जो सदा नियमित नही रहेगा।

परम्परा का कथन है कि मैं इतनी दम्भ या घमण्ड वाली भी नही
तुम्हें अपने आशीर्वाद से उन्नति एवं प्रगति के उच्च्च से उच्च्च शिखर पर बिना
प्रयास के रातों-रात पहुँचा दूँ। मुझमें ऐसी अलौकिक चमत्कारी शक्ति नही
तो सदा से चली आ रही एक सामान्य परम्परा हूँ। इसलिए मै अपनी सीमा
हूँ। मेरी वह सीमा यही है कि मेरे प्रति तुम्हारा स्नेह बना रहे। तुम्हारे स्ने
आतिर्भाव ही मेरी सीमा है। मैं तुम्हारे उस स्नेह से बाहर अपनी कामना

नहीं ले जाना चाहती हूं। अर्थात् आधुनिकता परम्परा को भी साथ लेकर चले, नया व्यक्ति परम्परा को प्रेमपूर्वक अपनावे, तभी उसका जीवन सुखमय बन सकता है।

विशेष—(i) इसमें बुद्धिवादी व्यक्ति की भौतिक प्रगति के प्रति प्रबल आकाक्षा एवं परम्परा की अवहेलना का आक्षेपात्मक वर्णन किया गया है। परम्परा का निर्वाह भी होता रहे, तभी आधुनिकता का उससे समन्वय रखा जा सकता है।

(ii) भाषा शैली सरल, सुबोध एवं व्यंग्यात्मक है।

(3) प्रकाश उत्पन्न नहीं - - - - - - - - - - - कर रहे थे। (पृ. 5?)

प्रसंग—इस अवतरण में परम्परा रूपी जीजी ने अपने बुद्धिवादी आधुनिक व्यक्ति रूपी छोटे भाई को लिखा है कि आधुनिकता और यान्त्रिकता मे पर्याप्त अन्तर है। यान्त्रिकता से उत्पन्न प्रकाश की चकाचौंध को आज का व्यक्ति आधुनिकता मानने लगा है। इस कारण आज प्रकाश फैलाने के और उसे चारो ओर फैलाने के लिए कई ठेकेदार बन गये हैं अर्थात् निपट आधुनिकता के नाम पर कोरे ज्ञान का प्रसार करने वाले कई बुद्धिवादी आज सामान्य जनता को भ्रमित कर रहे हैं। अतः परम्परा आक्षेप करती हुई कहती है कि—

व्याख्या—प्रकाश उत्पन्न नहीं किया जाता, वह तो स्वय अभिव्यक्त है। प्रकाश का यह स्वभाव होता है कि वह जितना स्वय प्रकाशित होता है, उतना ही अन्य वस्तुओ को भी प्रकाशित करता है। वह अपने और पराये का भेद नही करता है। परम्परागत ज्ञान सबके लिए समान आलोक बिखेरता है, परन्तु आज के युग मे बिजली के लट्टुओं से बिखेरे गये प्रकाश का अभ्यास होने से नया बुद्धिवादी मानव उसे ही वास्तविक प्रकाश मानने लगा है। इस कारण वह दिन के वास्तविक प्रकाश को विद्रूप मानने लगा है। अर्थात् परम्परागत ज्ञान को तुच्छ मानकर स्व-कल्पित ज्ञान को श्रेष्ठ मानने से उसका विपरीत आचरण दिखाई दे रहा है। दिन के प्रकाश की अवहेलना करना और उसे विद्रूप कहना अपने आप में बहुत बड़ी मूर्खता है।

परम्परा रूपी जीजी पत्र में लिखती है कि मुझसे उस दिन चूड़ी बेचने वाली स्त्री हँस-हँस कर कह रही थी कि बाबूजी फूटी चूड़ियो, खण्डित सिर कटी मूर्तियो और बिना पाये वाली कुर्सियो से अपने घर की सजावट कर रहें है अर्थात् आधुनिकता एवं खालिश कला के नाम पर घर को इन खण्डित चीजो से सजाने की नयी परिपाटी चल पड़ी है। यह अन्धानुकरण की ही प्रवृत्ति है। इससे बुद्धिवादी मनुष्य का उपहास होगा। इसलिए मैंने उस चूड़ी वाली को जब डाँटा तो वह कहने लगी कि बाबूजी न जाने होनी-अनहोनी कैसी-कैसी अजीब बाते कर रहे थे अर्थात् अत्यधिक बौद्धिकता के कारण तुम अपने अस्तित्व के प्रति भी शंकित हो गये हो, केवल वैचारिक तर्क-वितर्क से तुम्हारा भावात्मक व्यक्तित्व लुप्त हो गया है। भाव के बिना तुम्हारा व्यक्तित्व विघटित हो रहा है।

विशेष—(i) आधुनिकता से ग्रस्त बुद्धिवादी व्यक्ति की स्थिति एव आचरण पर आक्षेप किया गया है। आधुनिकता की चकाचौंध में व्यक्ति परम्परा का महत्त्व भूल गया है और वह दिन के प्रकाश और बिजली की रोशनी में अन्तर नही समझ पा रहा है।

(ii) भाषा सरल, सुबोध एवं शैली व्यंग्यात्मक, प्रतीकात्मक है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "राखी का दिन बीत गया। तुम्हें राखी बंधवाने की मिली।" इस कथन में व्यक्त पीड़ा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–राखी का हमारी संस्कृति में परम्परागत महत्त्व है। रक्षा- दिन प्रत्येक बहिन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है अ दीर्घ-जीवन की कामना करती है। यह स्नेह-सम्बन्ध बढ़ाने वाली तथा अ परम्परा है। लेकिन जब भाई आधुनिकता के रंग में रंगा होने से अपनी स परम्पराओं की अवहेलना करे तथा बहिन के स्नेह की उपेक्षा करे, तो इस व्यथित होना स्वाभाविक ही है। इस कथन में बहिन की इसी मार्मिक व्यक्त किया गया है।

प्रश्न 2. "तुम मेरे चांदमल भैया, तुम भी क्या इस चंदा की तरह होना चाहते थे?" परम्परा जीजी ने भैया को यह बात क्यों कही है? वि उत्तर लिखिए।

उत्तर–सन्ध्या के समय क्षितिज में चांद उगता है, तो उसके आसप काले-पीले बादलों के छौने भी दिखाई देते हैं। प्रायः यह दृश्य परम्परागत है। लेकिन जब कभी अकेला चांद ही क्षितिज में उगता हुआ दिखाई देता वह अजनबी सा लगता है। इसी प्रकार प्रत्येक रक्षा-बन्धन पर राखी बंध लिए स्वयं आने वाला भाई यदि नहीं आवे, तो लगता है कि वह बहिन के अपरिचित बन गया है। इसी कारण परम्परा जीजी ने अपने बुद्धिवादी भ लिए ऐसा कहा है।

प्रश्न 3. "अरसे के बाद बहन को उसके औपचारिक अनुष्ठान के लिये विवश किया? क्यों अनुष्ठान का नया अंकुर अपनी क्षण-छलकित भावुक खींच-खींच कर रोप गये?"

इन पंक्तियों में बहन ने भाई को उलाहना क्यों दिया है? भाई की भा को क्षण-छलकित क्यों बतलाया गया है?

उत्तर–बुद्धिजीवी भाई पिछले रक्षा-बन्धन पर तो परम्परा के पास बँधवाने आया था और अपना भावपूर्ण स्नेह व्यक्त करके पुनः आने के लिए गया था। फिर भी वह नही आया और अपनी बौद्धिक प्रगति एव आधुनिकत चक्कर में बहिन के भावात्मक स्नेहपूर्ण सम्बन्धों की उपेक्षा कर गया। बहिन उ आगमन की प्रतीक्षा करती रही। इस कारण उसने उसे उलाहना दिया है। की भावुकता अब क्षीण हो गई है, वह आधुनिकता का पक्षधर बनकर पर बहिन के स्नेह को भूलता जा रहा है। इसलिए उसकी भावुकता को क्षण भर लिए छलकी हुई बतलाया गया है।

प्रश्न 4. "भैया, तुमने यह कैसे समझा कि आधुनिकता केवल बिजली लट्टुओं से सजी बन्दनवार के नीचे ही प्रवेश कर सकती है।"

परम्परा जीजी के इस कथन में छिपे भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–परम्परा जीजी के इस कथन का भाव यह है कि यान्त्रिकता अ आधुनिकता एक ही वस्तु नही है। आधुनिकता के और भी पक्ष हैं। प्रगति इस

सहचरी है। इसलिए लड्डुओं से सजे अर्थात् आधुनिकता की चकाचौंध से युक्त वातावरण को ही सब कुछ नहीं मान लेना चाहिए। बाहरी प्रगति के साथ परम्पराओं के निर्वाह की भी प्रगति होनी चाहिए।

प्रश्न 5. जीजी ने आधुनिकता और यान्त्रिकता को एक मानने को भूल क्यों कहा है? समझाकर उत्तर लिखिए।

उत्तर—आधुनिकता का आधार परम्परा है; परन्तु यान्त्रिकता से आधुनिकता सर्वथा भिन्न है। आधुनिकता मानव द्वारा निरन्तर प्रगति पथ पर बढ़ने से ही सम्भव है, वह मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति है। जबकि यान्त्रिकता तो निर्जीव स्थिति है। उसमें भावुकता के लिए कोई स्थान नहीं है। वैसे भी यान्त्रिकता के कारण व्यक्ति का जीवन नीरस और बाहरी चकाचौंध से आलोकित हो गया है। इस कारण वह यान्त्रिकता को ही आधुनिकता मानने की भूल कर रहा है।

प्रश्न 6. "मैया तोड़ने का खिलवाड़ क्यों करते हो? क्या जोड़ने के लिए संसार में कुछ नहीं रह गया? इस कथन के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वर्तमान समय में मानव आधुनिकता के मोह में अपनी परम्पराओं से नाता तोड़ रहा है। वह सांस्कृतिक सम्बन्ध सूचक परम्पराओं से दूर होकर कोरी बौद्धिकता के जाल में फंस रहा है और प्रगति तथा आधुनिकता के नकली सम्बन्ध अपना कर भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्ध के समान मान्य परम्पराओं को तोड़ रहा है। यह बुद्धिवादी व्यक्ति की सबसे बड़ी भूल है। उसे तो आधुनिकता को परम्परा से जोड़ने का कार्य करना चाहिए तभी मानवीय सम्बन्ध जोड़ सकता है।

प्रश्न 7. 'सबदों के सुन्न महल' के भाव को स्पष्ट कीजिए। जीजी फकीर की वाणी को जीने का सहारा क्यों मानती है?

उत्तर—कबीर की वाणी अर्थात् पदों का संग्रह 'सबद' नाम से प्रसिद्ध है। 'सबद' में कबीर ने 'सुन्न महल' का उल्लेख किया है। साधक जब परमात्मा से एकाकार होने की स्थिति में आता है, तब वह शून्य महल में प्रवेश करता है अर्थात् तब साधन आत्मा में ही परमात्मा का अभेदात्मक ज्ञान कर लेता है और अपने अन्तरतम में ही स्थित ब्रह्मरन्ध्र में परमात्मा से उसका मिलन या साक्षात्कार हो जाता है।

परम्परा जीजी कबीर की वाणी को जीने का सहारा इसलिए मानती है कि उससे उसे नवीन अर्थात् नवजीवन मिलता है। तब वह सोचती है कि वह अकेली नहीं है, कबीर जैसे साधकों की वाणी भी उसके साथ है।

प्रश्न 8. "सूली के ऊपर वे' का भाव स्पष्ट कीजिए। मीरां की यह अमर पंक्ति जीवन में सच्चा रस किस प्रकार घोल देती है, लिखिए।

उत्तर—भक्तिमती मीरां की एक पंक्ति है कि ' सूली ऊपर सेज हमारी

मिलना किस विधि होय।' इससे सम्बद्ध उक्त वाक्यांश का भाव यह है संसार का आदि स्त्रोत परमात्मा है। वह अगम्य एवं अदृश्य है, अतः पहुँचना कठिन है। मीरां की यह पंक्ति इसलिए जीवन में रस घोल देती इससे परमात्मा की शाश्वत स्थिति और मानव की बार-बार जन्म-मरण की सूचित की गई है। इस कारण मानव परम्परा का अनुसरण करता रहता उससे जीवन में सरसता की अनुभूति होती है। परमात्मा रूपी प्रिय विरह-व्यथा में भी सरस आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रश्न 9. परम्परा जीजी को स्वयं को 'निराकांक्ष' क्यों कहा है?

उत्तर—परम्परा यह नहीं चाहती है कि कोई उसे अपनाये या कुछ प्रतिदान करे। परम्परा तो बिना किसी लोभ-लालच या प्रतिदान के बिना सभी बुद्धिजीवियों के जीवन में सुख-शान्ति का प्रसार करना चाहती उससे कुछ भी नहीं चाहती है, उसका अपना कोई स्वार्थ नही है। इसीलि स्वयं को निराकांक्ष अर्थात् आकांक्षा से रहित कहा है।

प्रश्न 10. "यह पत्र आज की तथाकथित बुद्धिवादी पीढ़ी को सच्चा प्रदान करता है।" इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर—परम्परा जीजी का बुद्धिवादी भैया के नाम लिखा गया नयी पीढ़ी के उन लोगों के लिए प्रेरणादायी है, जो आधुनिकता को ही स मानने वाले हैं। आज अधिकतर बुद्धिवादी लोग यान्त्रिकता एवं भौतिक प्र ही मानव की उन्नति का आधार मानते हैं। इस कारण वे अपनी सा सामाजिक एवं पारिवारिक परम्पराओं एवं पुरानी मर्यादाओं का परित्याग में पड़ रहे हैं और केवल बाहरी चमक-दमक के पीछे भाग कर अन्धानुक परिचय दे रहे हैं। इस प्रवृत्ति से सामाजिक सम्बन्धों में विघटन की प्रवृत्ति है। आज का बुद्धिजीवी मानव यह भूल गया है कि आधुनिकता की जड़े में है और परम्परा की अवहेलना करने से मानवीय गुणों का ह्रास होता तरह के भावों का उल्लेख करके इस पत्र में तथाकथित बुद्धिवादी लोगो को मार्गदर्शन प्रदान किया गया है और उन्हें भावमय सन्देश के द्वारा परम्परा भूलने के लिए सचेत किया गया है।

प्रश्न 11. इस पाठ में प्रयुक्त 'सन्धिल-प्रकाश' पद में 'सन्धिल श सर्वाधिक शुद्ध आशय क्या होगा?

उत्तर—(2) प्रभातकालीन

प्रश्न 12. निम्नलिखित शब्दों में से ऐसा शब्द छाटिए जिसमें 'ता का प्रयोग नहीं हुआ हो।

उत्तर—(4) सस्ता

7. घायल बसन्त

निबन्ध सार—प्रस्तुत निबन्ध में श्री हरिशंकर परसाई ने मध्यमवर्ग की पीड़ा को उजागर किया है। इसमें व्यंग्य के विविध स्तरों पर समाज एव देश के वर्तमान परिवेश से सम्बद्ध समस्याओ को उभारा गया है।

परसाईजी बतलाते हैं कि कल बसन्तोत्सव था और कवि बसन्त के आगमन से सम्बन्धित कविता गा रहा था, जिसकी अन्तिम तुक 'हा हन्त' थी। यह तुक बिठाने का चक्कर केवल कवि ही नही चलाता, अपितु व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी लोग तुक पर तुक बिठाते चलते हैं। हमारी सरकार तुक मिलाकर चलती है और सोना बाहर निकालने की अपील कर उसे और भी सुरक्षित कराने में जनता को सचेत करती है। बसन्त के गीत मे केवल सात तुकें थी, जबकि 'यशोधरा' में राष्ट्रकवि दिनकर ने कई तुकें जोड़ी।.

लेखक व्यंग्य रूप में कहता है कि मैं रजाई ओढ़े सो रहा था कि तभी सवेरे बसन्त ने मेरा दरवाजा खटखटाया। उसने जब बाहर से अपना नाम बसन्त बतलाया तो मैंने समझा कि दुकानदार का नौकर बसन्तलाल उधार वसूल करने आया है। ऋतुराज बसन्त के इस सुहावने मौसम मे इस बसन्तलाल ने मेरा मौसम खराब कर दिया। इसलिए जब मैं उसे टाल कर फिर लेट गया, तो दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। मैंने पूछा तो आवाज आयी कि मै बसन्त हूँ, बनिये का नौकर नहीं। मैंने दरवाजा खोलकर उसे कहा कि मैने पह.. तक पहचाना नही, इसलिए मुझे माफ करना।

तत्पश्चात् लेखक बतलाता है कि वह शाल लपेट कर बरामदे में बैठ गया और तरह-तरह की कल्पनाएँ करने लगा। बसन्त ऋतु मे कोयल होती है, पर शहरों में असराइयाँ उजड़ गई हैं। अब तो काले कौओ ने ही सर्वत्र कब्जा कर रखा है। अब स्वर्ण-नियन्त्रण कानून के कारण नायिका प्रियतम के आने की सूचना देने वाले कौए की चोंच सोने से नहीं मड़ा सकती है। व्यग्य रूप मे लेखक कहता है कि कौआ घृणा का पात्र है, यह बिगड़ैल स्वभाव है। बड़े आदमियो के बिगड़ेल लड़के हमेशा दूसरों का काम बिगाड़ते हैं। बसन्त ऋतु के पहले पतझड़ तथा बाद में ग्रीष्म ऋतु आती है। इन दोनों ऋतुओं के बीच में बसन्त का समय प्रायः दब जाता है, इसी प्रकार उत्तर की शीत और पश्चिम की लू से हमारे देश का बसन्त अर्थात् समृद्धि एवं खुशहाली सिकुड़ती-दबती जा रही है। आज देश का बसन्त दो पाटों के बीच में फँसा है, इसे बचाने के लिये हमें तद्नुरूप प्रयास करना होगा।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या-स्थल

(1) हमारी दुर्दशा का - - - - - - - - - - - - हुआ है। (पृ. 57)

प्रसंग—'घायल बसन्त' निबन्ध की इन पंक्तियों में लेखक ने व्यंग्य रूप में विरहिणी नायिकाओं की विवशता तथा कौओं की परम्परागत स्थिति का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। लेखक व्यंग्य रूप में कहता है कि—

व्याख्या—आज हमारे देश में कई तरह के कौए हैं। दफ्तर का ब
कौआ है तो भ्रष्ट राजनेता और काला बाजारी करने वाला पूंजीपति भी क
इन विविध प्रकार के स्वार्थी लोगों के कारण देश की स्थिति बिगड़ रही
की दुर्दशा का मूल कारण यह है कि सारा धन काला बाजारी में लगा
सारा सोना काले धन के रूप में लोगों ने छिपा रखा है, जबकि देश की
पर शत्रुओं का सामना करने के लिए हथियारों की खरीद आवश्यक है औ
लिए सरकार के पास सोना नहीं है। यदि विरहिणी नायिकाएँ प्रियतम क
पहुँचाने या उसकी आगमन-सूचना देने वाले कौओं की चोंच सोने से
रहेंगी, तो फिर सोना औरों के पास कहाँ रहेगा? इसलिए हमें तो कौओं
खरोंच लेना चाहिए, काले धन वालों के गुप्त खजानों पर कब्जा करना
इसलिए यदि वे आनाकानी करेंगे तो उनकी चोंच काटकर निकाल लेंगे।

लेखक नायिका को व्यंग्य रूप में कहता है कि यह परम्परा गलत
और मोर की चोंच तो नंगी रहे और कौए की चोंच पर सोना मढ़ा जावे।
सज्जन तथा ईमानदार लोग तो गरीबी से दुःखी रहें और कुछ काले कारना
धन्ना सेठ बन जायें। इस तरह की वास्तविक स्थिति जानकर नायिका क
चोंच सोने से नहीं मढ़ायेगी। सरकार ने जो स्वर्ण-नियन्त्रण कानून बन
उससे सबसे ज्यादा नुकसान कौओं और विरहिणियों को हुआ है। अब यदि
के रेट के आधे मिश्रित सोने से कौए अपनी चोंच मढ़ाना स्वीकार न क
विरहिणियों को प्रयतम की सूचना कौन देगा? अर्थात् इस स्वर्ण-नियन्त्रण
से सामान्य जनता भले ही प्रभावित हो जाये, परन्तु काला धन छिपाने वा
तो निश्चिन्त हैं, उनकी तो जरा भी हानि नहीं हुई है।

विशेष—(i) इसमें कौए को प्रतीक रूप में अपनाकर काले धन का
करने वालों पर व्यंग्य किया गया है। साथ ही देश की दयनीय दशा की अ
संकेत हुआ है।

(ii) भाषा सरल-सुबोध एवं शैली व्यंग्यात्मक है।

(2) मगर अमराई और - - - - - - - - - - गाना चाहिए। (पृ.

प्रसंग—इस अवतरण में परसाईजी ने वर्तमान समय में शहरीकरण
औद्योगिक के असन्तुलित पक्ष पर प्रकाश डाला है तथा सामान्य जनत
विवशता को कोयल के माध्यम से प्रकट किया है।

व्याख्या—लेखक कहता है कि वर्तमान समय में हमारे देश में तीव्र
औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की प्रवृत्ति चल रही है। इस कारण जहाँ अम
अर्थात् बाग-बगीचे तथा खेत थे, वहाँ तो शहर बस गये हैं, कारखाने बन ग
अतएव जब अमराई ही नहीं होगी, तो बेचारी कोयल कहाँ बोलेगी?
कोयल को ही अमराई प्रिय नहीं है, हमे भी अमराई और कुंज प्रिय है, बाग-
हमे भी प्यारे है। अर्थात् साधारण गरीब जनता भी सुख-भोग और आनन्द
साधनों की आकांक्षा करती है। इसलिए हम चाहते हैं कि सर्वत्र अमराई हरी

हे, कारखाने के चारों ओर अमराई का घेरा हो और हम हर मुहल्ले में ाग-बगीचे लगा दें। अर्थात् सामाजिक कल्याण के कार्य तो होने ही चाहिए। ाकिन यह हमें ही करना होगा। हम इस प्रयास में हैं, परन्तु कोयल तो बिना ीरज रखे पहले से ही कहीं दूर चली गई है। उसे यह नहीं करना था, उसे तो ्मारा साथ देना था, उसे हमारे साथ कुछ दिन धूप सहनी थी, जब धूप में उसने ाथ नहीं दिया, तो अमराई बनने पर उसकी छाया में वह कैसे हमारे साथ रह ायेगी?

आशय यह है कि सामाजिक कल्याण में जो सहयोग करेगा, उसे फल ोगने को मिल जायेगा, परन्तु साथ न देने वाले को तो वह फल नहीं मिल कैगा। अमराई बनाने तक तो कोयल ने हमारा साथ नहीं दिया और अब उसके ान जाने पर वह उसमें कैसे रहेगी? अर्थात् नहीं रह सकेगी, क्योंकि देश की ामृद्धि होने पर तो कौए जैसे दुष्ट और स्वार्थी तत्व उस पर कब्जा कर लेंगे, तब उसमें सामाजिक-सहकार कहाँ रहेगा? इसलिए अमराई के बनने से पूर्व कोयल को ्मारे साथ आना चाहिए। जब हम नये रूप में अमराई तथा बगीचे के निर्माण ्तु मिट्टी खोदें, पानी सींचें, खाद दें तथा उसकी निराई आदि करें, तभी कोयल को ाहाँ पर हमारे साथ आना चाहिए। आशय यह है कि सामाजिक कल्याण का लाभ नेम्न वर्ग को अवश्य मिलना चाहिए।

विशेष—(i) वर्तमान समय में देश की प्रगति हो रही है और सामाजिक कल्याण की अनेक योजनाएँ भी चल रही हैं, परन्तु उनका सारा लाभ स्वार्थी, भ्रष्ट ोग उठा लेते हैं। साधारण जनता की स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा है। ेखक ने इस स्थिति पर व्यंग्य किया है।

(ii) भाषा-शैली सरल-सुबोध एवं व्यंग्यात्मक है।

(3) मौसम के इन्तजार - - - - - - देश का बसन्त। (पृ. 59)

प्रसंग—'घयाल बसन्त' निबन्ध में लेखक अपना मन्तव्य स्पष्ट करता हुआ कहता है कि देश का बसन्त अर्थात् जनता की खुशहाली स्वयं नहीं आती, उसे तो ायास करके लाया जाता है। इसलिए हमें वैसा प्रयास करना चाहिए।

व्याख्या—हम मौसम की इन्तजारी करते रहेंगे और सोचेंगे कि बसन्त स्वय ा जायेगा, तो यह सम्भव नहीं है। इस तरह इन्तजारी करने से कुछ नही होगा। ौसम का इन्तजार करना व्यर्थ है। अर्थात् केवल आशावादी बनने से हमारे देश मे ामाजिक-कल्याण की सम्भावना करना व्यर्थ है। बसन्त स्वय अपने आप नही ाता है, उसे तो लाया जाता है, सहज आने वाला तो पतझड़ होता, बसन्त नही। र्थात् गरीब जनता का शोषण, अभावों की पीड़ा एवं विषमता आदि का चक्र तो वतः चलता रहता है, परन्तु उनके कल्याण की योजनाएँ स्वतः नहीं चलती हैं, उन्हें तो प्रयास करके चलाना पड़ता है। जैसे पतझड़ के बाद पेड़ पर नये पत्ते आते ् तो वे वृक्ष का भीतरी रस पीकर अंकुरित होते हैं, उसी प्रकार समाज में ान-हित के अंकुर भी मानवता का रस पीकर ही उगते हैं। इसके लिए प्रयास एव वार्थ-त्याग की जरूरत है।

लेखक प्रतीक रूप में कहता है कि पहले तो कुछ दिन शीत की
में बीत जाते हैं, फिर दो-चार दिन बसन्त रह पाता है कि गर्मी बढ़ जा
तरह शीत और गर्मी के बीच में बसन्त ऋतु के कुछ दिन आनन्दो
निकाल सकें तो निकाल लो। अर्थात् इन दो पाटों के बीच में फंसे हुए
कोई बचा सकता है, तो बचा ले। भाव यह है कि सामान्य जनता एक
एवं विषमता से पीड़ित है, दूसरी ओर अन्याय-अत्याचार से पीड़ित
उसकी सुख-समृद्धि एकदम समाप्त सी हो गई है। उसे इस स्थिति से
हमें प्रयास करना चाहिए।

विशेष—(i) दो पाटों के बीच में फँसा हुआ जीव घायल अव
इसी तरह देश तथा हमारे समाज का बसन्त भी दो पाटों के बीच मे फँस
पाटों को आगे बढ़ने से रोकने पर ही घायल बसन्त को बचाया जा सकत
(ii) भाषा-शैली सरल, प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1. "आखिर हम कब तक तुक को तिलांजलि देंगे? कब बे
की हिम्मत करेंगे?" बेतुका बनने के भाव को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर—यहाँ पर तुक का आशय आगे-पीछे के प्रसंगों या बातो मे
रखना या एकता लाना है। काम निकालने या स्वार्थ साधने की भावना
तुक निकालना कहते हैं। सामाजिक जीवन मे चलने वाले फरेब एव अ
बन्द करने की भावना, सामाजिक कल्याण की चेतना को इसमें बेतुका
सकेतित किया गया है। आशय यह है कि कब हम अपने देश तथा
जनकल्याण एव सबके उद्धार का प्रयत्न करेंगे।

**प्रश्न 2. "बसन्तलाल ने मेरा मुहूर्त बिगाड़ दिया।" इस कथन के
हुए भाव को अपनी भाषा में लिखिए।**

उत्तर—लेखक का जीवन अभावों से ग्रस्त रहा है अथवा सामान्
का जीवन अभावग्रस्त है, इस कारण वह हंसी-खुशी के वातावरण
बेखबर-सा रहता है। वह बसन्त ऋतु के आगमन पर खुश होना चाहता
जब सुबह-सुबह बसन्त ऋतु के स्थान पर बनिये का उधारी वसूल कर
नौकर बसन्तलाल दरवाजे पर आ जाता है, तब उसकी सारी खुशी क्षण
समाप्त हो जाती है। इस तरह मध्यम वर्ग के लोगो को क्षण भर भी हं
का अवसर नही मिलता है और उनका जीवन अत्यन्त नीरस बना रहता है

**प्रश्न 3. "अपनी यही विडम्बना है कि ऋतुराज बसन्त भी आये त
है कि उधारी के तगादे वाला आया है।"**

**परसाईजी ने मध्यम वर्ग की पीड़ा को इस कथन में किस प्रकार प्रक
है? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर—इस कथन में लेखक ने मध्यम वर्ग की पीड़ा इस तरह स्पष्ट की है कि हमारा मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपने मन में उमगे तथा खुशहाली की भावना भले ही रखता है, परन्तु परिस्थितियाँ उसे इन्हें पूरी होने नही देती है। इस कारण वह खुशहाली के वातावरण में भी अज्ञात भय एवं वेदना से आशकित रहता है। तब उसके मन की उमग इस तरह लगती है कि मानो वह कोई कल्पित या नकली चीज हो। अभावो से ग्रस्त मध्यमवर्ग की आर्थिक दशा सदा सोचनीय बनी रहती है, इसलिए वह खुशहाली का वातावरण कहाँ पा सकता है। वह तो सदा व्यथित रहता है।

प्रश्न 4. "हमारी दुर्दशा का यही तो कारण है कि तमाम कौए सोने से चोच मढाए हैं और हमारे पास हथियार खरीदने के लिए सोना नही है।" इस कथन के पीछे छिपे हुए भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इस कथन से लेखक ने देश मे व्याप्त विषमता की ओर सकेत किया है। देश के पूँजीपतियों एवं कुछ सम्पन्न परिवारो के पास अपार सम्पत्ति काले धन के रूप मे विद्यमान है। वे उस काले धन से कई ऐसे काम कर लेते हैं जिनसे हमारी सामाजिक व्यवस्था चरमरा जाती है। हमारी सरकार देश की सीमाओ पर शत्रुओ का मुकाबला करने वाली सेना को हथियार उपलब्ध कराना चाहती है, परन्तु उन्हें खरीदने के लिये विदेशी धन अर्थात् सोने की जरूरत है। सरकारी खजाना खाली है, जबकि इन सम्पन्न लोगों के काले धन के खजाने भरे पडे हैं। इस तरह धन का असमान वितरण होने से हमारी सामाजिक विषमता एव अभावो का अन्त नही दिखाई देता। इससे राष्ट्रीय विकास भी अवरुद्ध हो गया है।

प्रश्न 5. "इधर हर ऊँचाई पर बैठा कौआ कौंव-कौंव कर रहा है।" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—आज हमारे समाज में सर्वत्र मौकापरस्त एव स्वार्थी लोगो की भरमार है। ये लोग बड़े-बड़े पदो पर आसीन होकर अपना रौब जमा रहे हैं, अपना हित साध रहे हैं। जैसे कौए आम की ऊँची डालो पर बैठकर कौंव-कौंव करते हैं, वैसे ही ये मौकापरस्त लोग समाज के उच्च स्तरो पर अधिकार जमा कर अपना ही ककर्श स्वर अलाप रहे हैं। इससे सामाजिक जीवन मे आपाधापी फैल रही है।

प्रश्न 6. "नहीं मेरे कवि, दक्षिण से मलय पवन नहीं बह रहा। यह उत्तर से बर्फीली हवा आ रही है।" मलय पवन तथा बर्फीली हवा के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मलय पर्वत की हवा तो सुगन्धित एव शरीर को स्पर्श सुख प्रदान करती है, जबकि उत्तर की बर्फीली हवा शरीर को पीड़ित कर देती है। इस तरह मलय पवन सुखकारी एव बर्फीली हवा कष्टकारी है। यहां लेखक ने बर्फीली हवा

से देश की उत्तरी सीमा पर चीन द्वारा आक्रमण करने और भारतीय भू-भ
कब्जा करने की घटना की ओर संकेत किया है। यह घटना हमारे देश
अत्यन्त कष्टदायी रही है।

प्रश्न 7. "अभी उत्तर से शीत लहर आ रही है तो फिर पश्चिम से चल सकती है।" शीत लहर तथा लू के पीछे छिपे हुए मूल कथ्य को स्पष्ट की

उत्तर—भारत की उत्तरी सीमा पर चीन ने जो बर्बर आक्रमण किय लेखक ने शीत लहर बतलाया है। देश के उत्तर में हिमालय पर्वतमाल तिब्बत जैसा बर्फीला इलाका है, उधर से ही चीन ने आक्रमण किया है। प से पाकिस्तान हर समय आक्रमण की तैयारी कर रहा है, उसे लेखक ने पश्चि ओर से चलने वाली लू कहा है। पाकिस्तान लू की तरह भारतीय खुशहाल झुलसाने वाला प्रतीत हो रहा है तथा उससे हमारी अर्थ-व्यवस्था पर मार प है।

प्रश्न 8. "दो पाटों के बीच फँसा है देश का बसन्त।" ये दो पाट हैं, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उत्तर दिशा से चीन का आक्रमण और पश्चिम दिशा से पाकि आक्रमण दो पाट हैं, जिनके बीच हमारे देश भारत की खुशहाली और सामा आर्थिक प्रगति अवरुद्ध हो रही है।

प्रश्न 9. "बसन्त को बचाना है तो जोर लगाकर इन दोनों पाटों को ढकेलो—इधर शीत को, उधर गरमी को। तब बीच में से निकलेगा घायल बसन्त।"
देश के बसन्त को घायल क्यों कहा गया है? इसको पीड़ा रहित कर क्या उपाय है?

उत्तर—देश की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति अच्छी न होने से बसन्त को घायल कहा गया है। जैसे घायल व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ नहीं होता है, ही देश का विकास स्वाभाविक रूप में नहीं हो रहा है। इसको पीड़ा रहित का यही उपाय है कि हमारे देश की सामाजिक प्रगति को गति मिले; विष अभाव, शोषण आदि का अन्त हो; लोक-कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो और वर्ग को समाप्त किया जाये। देश तथा समस्त देशवासियों का चहुमुखी विकास होने उसकी पीड़ा समाप्त हो जायेगी।

प्रश्न 10. "तिलांजलि" का सर्वाधिक शुद्ध विग्रह क्या होगा?

उत्तर—(3) तिलों की अंजलि।

प्रश्न 11. किस शब्द में 'क' प्रत्यय करने का अर्थ नहीं हो रहा है?

उत्तर—(4) मानक।

8. पाप के चार हथियार

निबन्ध सार—प्रस्तुत ललित निबन्ध में श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने पाप के चार हथियारों का परिचय दिया है। प्रारम्भ में जार्ज बर्नार्ड शॉ के कथन का उल्लेख कर लेखक बतलाता है कि संसार में पाप है, जीवन में दोष और व्यवस्था में अन्याय है; इसका आखिर में रहस्य क्या है? इस संसार में इतने महापुरुष, सन्त और समाज सुधारक, अवतार आदि हो चुके हैं, फिर भी पाप का अन्त नहीं हो पाया है। इसलिए देखा जाय तो पाप के पास ऐसी शक्ति है जिससे वह अपना प्रभुत्व बनाये रखता है।

पाप के चार हथियार है, उपेक्षा, निंदा, हत्या और श्रद्धा। जब समाज-सुधारक पाप के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा बुलन्द करता है तो पाप और उसका प्रतिनिधि पापी समाज सर्वप्रथम उसकी उपेक्षा करता है, उसकी ओर ध्यान नहीं देता है तथा उसके कहे हुए को पागलों का प्रलाप मानकर टाल जाता है। इस तरह की उपेक्षा से समाज सुधारक का सत्य कुछ तेज हो जाता है, स्वर कुछ तीव्र हो जाता है, तब पापी समाज उस पर निन्दा की बौछारें करने लगता है। लेकिन समाज-सुधारक इस निन्दा से घबराता नहीं है और उसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। पाप के लिए तब यह चोट असह्य हो जाती है और वह बौखला कर अपने तीसरे शस्त्र 'हत्या' का सहारा लेता है। वह हत्या रूपी हथियार सुकरात के लिए जहर का प्याला, ईसा के लिए सूली, दयानन्द के लिए पिसा काँच और महात्मा गांधी के लिए गोली के रूप में प्रयुक्त होता है।

इस शस्त्र के प्रहार से भी जब सुधारक का सत्य और प्रखर हो जाता है तब कांपते हुए पाप अपनी रक्षा पर उतर आता है और अपना अन्तिम ब्रह्मास्त्र प्रयुक्त करता है, वह अस्त्र है, श्रद्धा। उस स्थिति में वह समाज-सुधारक की चरण वन्दना और प्रशंसा करने लग जाता है। सुधारक करुणाशील एव सरल प्रकृति का होता है, इसलिए वह पाप को क्षमा कर देता है। पाप सर्वत्र उसकी श्रद्धा का प्रचार करता है, उसके स्मारक और मन्दिर बनाता है, उसकी प्रशंसा के ग्रन्थ लिखता है। इससे सुधारक की पराजय हो जाती है। पाप इस तरह प्राचीन काल से अजेय रहा है और आज भी अजेय है। इसकी अजेयता को कोई भी खण्डित नहीं कर सकता है।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या-स्थल

(1) संसार में पाप - - - - - - - - - करती रही हैं। (पृ. 62)

प्रसंग—यह अवतरण 'पाप के चार हथियार' निबन्ध का है। इसमें संसार में पाप की शाश्वत स्थिति और जीवन की विडम्बनाओं पर रोचकता से प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या—लेखक वर्णन करता हुआ बतलाता है कि इस संसार में पाप की स्थिति शाश्वत है। मानव समाज में कुछ न कुछ कमियाँ एवं दोष अवश्य दिखाई

देते हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था भी सर्वथा दोषहीन नहीं है, इसमें भी अन्याय, उत्पीड़न आदि कमियाँ विद्यमान हैं। इसी प्रकार मानव-मानव के में एकरूपता नहीं है। स्वार्थ की खातिर मानव का व्यवहार अत्याचार कर बन जाता है। देखा जाय तो इन स्थितियों से आज हमारा समाज अनेक वर्गों में बंट गया है।

समाज में व्याप्त दोषों, पापों एवं अत्याचारों को समाप्त करने और समाज के रहन-सहन व दृष्टिकोण-व्यवहार में सुधार लाने समय-समय पर अनेक सन्त, अवतार, महापुरुष एवं सुधारक उत्पन्न हुए हैं सामाजिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों तथा विडम्बनाओं पर घन-घोर प्रह हैं। अर्थात् समाज-सुधारकों ने मानव-जीवन में व्याप्त अन्याय, पाप और का निवारण करने के लिए अपना सारा जीवन खपाया तथा स्वयं अने झेले। इसके परिणामस्वरूप समय-समय पर सामाजिक जीवन की विडम्ब विसंगतियाँ बिखरती नजर आयीं, कुछ परिवर्तन दिखाई देने ल समाज-सुधारक के चले जाने पर फिर वे विडम्बनाएँ अपना सिर उठाने ल हैं। देखा जाय तो इस सृष्टि में समाज-सुधार आते रहते हैं, वे जाते-जाते सुधार कर जाते हैं, परन्तु उनके जाते ही स्थिति फिर पहले जैसी हो ज फिर कोई दूसरा या तीसरा सुधारक काल-क्रम से आता है तथा समाज रास्ते पर लाने का प्रयास करता है। इस तरह का क्रम चलता ही रह फलस्वरूप पाप अपनी जगह जमा रहता है।

विशेष—(i) संसार में पाप, अन्याय, अत्याचार की स्थिति पर डालकर समाज-सुधारकों की भूमिका स्पष्ट की गई है। सृष्टि का क्रम इस चलता है।

(ii) भाषा सरल, भावपूर्ण तथा शैली भावात्मक-विवेचनात्मक है।

(2) **जब समाज का पाप - - - - - - - - - पड़े है।** (पृ 63)

प्रसंग—इस अवतरण में पाप के दूसरे अस्त्र के प्रयोग का परिणाम प्रतिपादित किया गया है। पाप सर्वप्रथम अपने उपेक्षा नामक ह प्रयोग करता है। उसके असफल रहने पर वह निन्दा नामक दूसरा ह अपनाता है। इसी प्रसंग में लेखक कहता है कि—

व्याख्या—समाज़-सुधारक का सत्य जब पाप के उपेक्षा नामक ह कमजोर पड़ने के बजाय कुछ अधिक तेज हो जाता है, उसका प्रभाव ज्यादा बढ़ जाता है, तब समाज में फैला हुआ पाप अपने अस्तित्व की रक्षा विवश हो जाता है। साथ ही वह समाज-सुधारक की बात मानने के लिए विवशता का अनुभव करता है। इसलिये वह सुधारक के उपदेशों समाज-सुधार की बातों को सुनता है तथा उस अपने दूसरे हथियार नि बौछारें फेंकने लगता है। भाव यह है कि तब पाप समाज-सुधारक की निन्दा करने लगता है। वह निन्दा करने के अलग-अलग तरीके अपनाता है

समाज-सुधारक, सत्य और समाज के बीच में नालियों की दीवारें खड़ी करने का प्रयत्न करता है। अर्थात् पाप हर तरह से समाज, सत्य और सुधारक के मध्य विभेद एवं अविश्वास फैलाने की कोशिश करता है।

लेखक इस सम्बन्ध मे कहता है कि सामाजिक जीवन तथा समाज-सुधारकों के जीवन के अनुभवो से यही तथ्य सामने आता है कि जो व्यक्ति समाज-सुधारक के जितने समीप रहता है, वह उतना ही बड़ा निन्दक होता है। इस कारण समाज-सुधारक सन्त या महापुरुष को अपना कार्य-क्षेत्र भी बदलना पड़ता है। यह स्थिति सभी समाज-सुधारको एवं अवतारों के साथ घटित हुई है। पाप ने उन्हें हमेशा परेशान किया है, जिससे उन्हें अपने सत्य का प्रचार-प्रसार करने में काफी परेशानियाँ भी उठानी पड़ी है।

विशेष—(i) समाज-सुधारको के जीवन की कठिनाइयो का सुन्दर चित्रण हुआ है। समाज में निन्दा एवं दोष-दर्शन की प्रवृत्ति से पापाचार बढ़ता है।

(ii) भाषा-शैली सरल, सुबोध एवं भावात्मक है।

(3) यह नारा ऊँचा - - - - - - - - - - रहता है। (पृ. 64)

प्रसंग—इस अवतरण में लेखक ने समाज-सुधारक के विरुद्ध पाप द्वारा छोड़े गये अन्तिम हथियार का वर्णन किया है। पाप मौके की तलाश मे रहता है तथा इस तरह से श्रद्धा जताता है कि समाज-सुधारक का व्यक्तित्व प्रधान हो जाता है और उसके कार्य गौण हो जाते हैं।

व्याख्या—पाप समाज सुधारक के ऊपर अपना अन्तिम हथियार फेंकता है। वह हथियार है, श्रद्धा। वह समाज-सुधारक पर श्रद्धा प्रकट कर उसे महाप्रभु, वन्दनीय, लोकोत्तर, महात्मा आदि घोषित करता है। वह उसकी स्तुति करने लगता है, प्रशसा में रचनाएँ लिखता है तथा उसके नाम पर अच्छे-अच्छे नारे लगाता रहता है। उन नारों की गूँज चारों ओर फैल जाती है और उससे लोग प्रभावित होने लगते है। इस तरह पाप द्वारा की गई प्रशसा से प्रभावित होकर अन्य लोग भी सुधारक की प्रशसा एव वन्दना करने लगते हैं। उस दशा मे सभी लोगों का ध्यान सुधारक के भौतिक व्यक्तित्व तथा उसकी सुधार-भावना से हटने लगता है और वे उसके लोकोत्तर या अलौकिक स्वरूप को प्रधानता देने लगते हैं। आशय यह है कि लोग तब सुधारक को देवता मानने लगते हैं। वे उसके सत्याचरण का पालन नहीं करते हैं, अपितु उसके कहे गये वाक्यों के सूक्ष्म से सूक्ष्म अर्थों और उनके परिणामों का चिन्तन करने लगते हैं।

इस प्रकार पाप द्वारा समाज-सुधारक के प्रति जो दिखावे की श्रद्धा प्रकट की जाती है, उससे वह श्रद्धेय भले ही बन जाता है, परन्तु लोग उसके कार्यों को भूलने लग जाते हैं। मन्दिरों और स्मारकों में भले ही उसकी मूर्ति स्थापित हो जाती है, परन्तु उसकी शिक्षा अन्धविश्वासों में दब जाती है।

विशेष—(i) समाज में व्याप्त पाप के प्रभाव और अन्धविश्वास आदि का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। समाज-सुधारक को निष्प्रभावी करने का तरीका बड़ी सरलता से समझाया गया है।

(ii) भाषा सरल-सुबोध और शैली विवेचनात्मक है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. " मैं खुली सड़क पर कोड़े खाने से इसलिए बच जाता मेरी बातों को दिल्लगी समझकर उड़ा देते हैं।" जार्ज बनार्ड शॉ का यह बिन्दु की ओर हमारा ध्यान खींचता है? इस कथन के सम्बन्ध में अ लिखिए।

उत्तर—जार्ज बनार्ड शॉ का यह कथन समाज-सुधारकों को मि कष्टों की ओर हमारा ध्यान खींचता है। प्रारम्भ में समाज-सुधारकों क रहना पड़ता है, फिर पाप आदि के कारण समाज-सुधारक की निन्दा ह है तथा इसके बाद उस पर हिंसक प्रहार किये जाते हैं। वस्तुतः जितने सुधारक हुए हैं उन्हें नासमझ जनता की खातिर स्वयं कोड़े खाने पड़े हैं चढ़ना पड़ा है और अतिवादियों द्वारा गोली के शिकार हुए समाज-सुधारक अत्यधिक उपेक्षा के कारण इस तरह के उत्पीड़न से मु फिर भी उन्हें मानसिक सन्ताप झेलना पड़ा है।

प्रश्न 2. उपेक्षा तथा निन्दा से सुधारक प्रभावित क्यों नहीं होते हैं ये हथियार सुधारक के कार्य को अधिक गति देने वाले क्यों सिद्ध होते हैं?

उत्तर—सुधारक की जब उपेक्षा की जाती है, तो वह अपनी क करने की चेष्टा करता है, इससे उसका सत्याचरण और भी प्रखर एव जाता है। इसी प्रकार निन्दा करने से सुधारक को आत्म-सुधार का भ मिल जाता है और दूसरों का सामना करने की क्षमता भी उसमें आती तरह इन दोनों तत्वों से सुधारक प्रभावित नहीं होते हैं तथा उनके सुधार को इनसे और भी गति मिलने लगती है।

प्रश्न 3. पाप अपने हत्या रूपी हथियार का सहारा किस स्थिति में सुधारकों की हत्या कार्य को आगे बढ़ाने वाली सिद्ध क्यों होती है?

उत्तर—सुधारक जब अपनी उपेक्षा तथा निन्दा का सामना करने हो जाता है और वह अपने विरोधियों का कठोरता से सामना करने की आ जाता है, तब पाप उसके खिलाफ बौखला कर हत्या रूपी हथि इस्तेमाल करता है। पाप के अज्ञान एवं बौखलाहट के कारण वह हत्या रास्ता अपनाता है। सुधारकों की हत्या से जन-साधारण उनके बलिदान क समझ लेता है तथा उससे उनके कार्य स्वतः आगे बढ़ते रहते हैं।

प्रश्न 4. ईसा, सुकरात, दयानन्द तथा गाँधी की हत्या ने उनके किस प्रकार आगे बढ़ाया? विचारपूर्वक उत्तर लिखिए।

उत्तर—ईसा, सुकरात, दयानन्द तथा गाँधी की हत्या हो जाने से सोचा था कि अब उसका विरोध कोई नहीं करेगा, परन्तु उनकी अकाल सहर्ष बलिदान से जन-सामान्य अत्यधिक प्रभावित होकर उनके अनुया लगे और उनके अवशिष्ट या निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करने लगे। इस तर

कार्यों को आगे बढ़ाने का कार्य उनके अनुयायियों अथवा प्रशंसकों ने किया। उनके कार्यों में सत्य आदि श्रेष्ठ गुण होने से भी उन्हें आगे बढ़ाने में असुविधा नहीं हुई।

प्रश्न 5. श्री मिश्र ने श्रद्धा को ब्रह्मास्त्र क्यों कहा है? सुधारक इसके प्रभाव से क्यों नहीं बच पाते हैं?

उत्तर—ब्रह्मास्त्र का प्रयोग जिस पर किया जाता है, वह अचूक होने से अवश्य ही मार करता है। अर्थात् जिस पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जावे, वह अवश्य प्रभावित होता है। श्रद्धा को मिश्रजी ने इसलिए ब्रह्मास्त्र बतलाया है कि इससे सुधारक अवश्य प्रभावित होता है। पाप सत्य की जयकार करता है, सुधारक की चरण-वन्दना एवं स्तुति करने लग जाता है। इससे सरल स्वभाव का, आसानी से विश्वास करने वाला और करुणाशील सुधारक कुछ कोमल पड़ जाता है, उसके हृदय में वह तीखापन कम हो जाता है। इस कारण वह श्रद्धा के प्रभाव से बच नहीं पाता है।

प्रश्न 6. "श्री प्रभाकर ने इस निबन्ध में एक सन्देश दिया है। यह निबन्ध आज की परिस्थितियों में दिशाबोध देने वाला सिद्ध होता है।" इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर—प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने यह सन्देश दिया है कि समाज-सुधार का कार्य बड़ा कठिन और बाधाओं से परिपूर्ण है। जो व्यक्ति समाज मे सुधार लाने का कार्य करना चाहे, वह दृढ संकल्प लेकर आगे बढ़े और मिथ्या प्रशसा, आत्म-स्तुति या श्रद्धेय बनने की अभिलाषा अपने मन में न रखे। वर्तमान काल मे समाज-सुधार का कार्य करने वाले कम काम करके ही खूब नाम कमाना चाहते हैं, छोटे-से कार्य से जनता में श्रद्धेय बनने की इच्छा रखते हैं। वर्तमान परिस्थितियो को ध्यान में रखकर देखा जाय तो लेखक का उक्त सन्देश नवीन दिशाबोध देने मे सिद्ध हो सकता है। यदि हमारे राजनेता या समाज के अग्रणी व्यक्ति झूठी प्रतिष्ठा, मान-सम्मान या अखबारों में नाम छपाने की लालसा न रखें, तो समाज मे सुधार-कार्यों के लक्ष्य निस्सन्देह पूरे किये जा सकते हैं।

प्रश्न 7. "सॉंच कहूँ तो मारि है, झूठे जग पतियाय।
यह जग काली कूकरी, जो छेड़े तो खाय॥"

कबीर की यह साखी इस निबन्ध के सन्देश को किस रूप में कह रही है? उत्तर लिखिए।

उत्तर—कबीर की इस साखी में यह भाव व्यक्त किया गया है कि सत्य कहने पर तो संसार मार डालता है अर्थात् विरोध पर उत्तर आता है तथा असत्य कहने पर उस पर सहसा विश्वास कर लेता है। इस संसार में भी समाज-सुधारक जब सत्य बात कहता है, तब लोग उसकी उपेक्षा करते हैं या उसकी निन्दा और प्रबल विरोध करते हैं। लेकिन जो मौकापरस्त और असत्य बोलते हैं, उनका कोई विरोध नहीं करता है। इस तरह प्रस्तुत साखी में इस निबन्ध के सन्देश को समाज-सुधारक के साथ किये जाने वाले व्यवहार के रूप में व्यक्त किया गया है।

प्रश्न 8. निम्न में से उस शब्द की पहचान कीजिए जिसका अर्थ से भिन्न हो।

उत्तर–(1) विद्रोह

प्रश्न 9. वातावरण शब्द का सर्वाधिक शुद्ध विग्रह क्या होगा?

उत्तर–(1) वात का आवरण।

9. एक और मौत

कहानी सार–डॉ. आलम शाह द्वारा रचित प्रस्तुत कहानी मे उपेक्षित एवं वंचित वर्ग की व्यथा का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस जेठूमल अत्यन्त गरीब एवं अभावग्रस्त है, वह पर्याप्त परिश्रम करता उसकी आकांक्षा पूरी नहीं होती है। जेठूमल कुल्फी बेचता है। पिछले उमस होने से सहसा वर्षा हो गई थी। जिससे जेठूमल की कुल्फी नहीं बि उसकी पत्नी सत्तो ने बची हुई कुल्फी की डिब्बियों को भगोने मे उलट करना चाहा, ताकि उससे वह छोटे बच्चे टेऊं की भूख बहला सके, प पाते ही दूध फट गया था। आज जेठू की कमाई कुछ नहीं हुई, इसलिए किससे जलता। सत्तो बच्चे टेऊं को बगल में दबाये मुहल्ले में टोपन के गई।

टोपन की हालत कुछ दिन से ठीक नहीं थी। वह बहुत बी दूसरे दिन मौसम साफ रहेगा तथा कुल्फी अच्छी बिकेगी, इस आशा से जे लड़की भागां के पैर में से चांदी की पतली पायजेब निकाली तथा उसे रखकर सामान खरीदने के लिए कुछ पैसे लाया। उसने दूध गर्म कर उ का घोल, इलायची आदि डाली तथा कुल्फी डिब्बियों में जमाकर उन्हें अच्छी तरह से रख दिया।

सुबह जब जेठूमल कुल्फी का मटका लेकर अपनी फेरी पर तैयार हुआ, तभी नुक्कड़ से स्त्रियों के रोने की आवाज सुनाई दी। उसने वह तुरन्त घर से चुपचाप निकल कर कहीं दूर कुल्फी बेचने चला जाय बिरादरी का मामला ठहरा, इसलिये मजबूरन उसे टोपन की शव-यात्रा पड़ा। वह अर्थी को कन्धा देकर चलने लगा। विद्यालय के सामने पहुं उसकी प्रतिदिन की 'कुल्फी मलाई' की टेर स्वतः निकल गई। इससे लोग च और उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

महत्त्वपूर्ण व्याख्या-स्थल

(1) कल जोर का - - - - - - - - - छोड़ देता है। (पृ. 67)

प्रसंग–'एक और मौत' कहानी के प्रारम्भ में लेखक ने प्राकृतिक वा की विपरीत स्थिति और उसमें दैनिक मजदूरी की तरह आजीविका करने जेठूमल की विवशता का चित्रण किया गया है।

व्याख्या—कल एकाएक उमस काफी बढ़ गई थी और फिर वह उतनी
ढ़ी कि सारा वातावरण एकदम गहरा, वायु-विहीन तथा घना हो गया था। इससे
ारों ओर ऐसा लग रहा था कि कहीं हवा नहीं है, प्रकृति से हवा लुप्त हो गई
। वातावरण उमस की सघनता से केवल धुँधलका और घुटन दिखाई दे रही थी।
से भी कल जोरों का पानी बरसा था। पानी के तेज बरसने से वातावरण में नमी
ा गई थी, इससे जेठूमल को नुकसान उठाना पड़ा था, उसकी कुल्फी नहीं बिकी
ी। आज भी प्राकृतिक वातावरण उमस के कारण एकदम घना और घुटन से
याप्त लग रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आज जेठूमल की उस बस्ती को
ठीक उसी प्रकार डिबिया बन्द करके उमस और धुंधलके में छोड़ दिया है, जिस
्रकार दूध और चीनी के घोल को डिबिया मे ढालकर कुल्फी बनाने के लिए उसे
घड़े में छोड़ दिया जाता है।

आशय यह है कि उस दिन प्राकृतिक वातावरण घुटन से भरा और
बादलों के धुंध से व्याप्त था। इससे ऐसा आभास होने लगा था कि आंधी-तूफान
के साथ तेज वर्षा होगी। जेठूमल के लिए यह स्थिति अनुकूल नही थी। वैसे भी
दैनिक मजदूरी या रोजगार करने वालो के लिए बेसमय बरसात आदि से जीविका
चलाना मुश्किल हो जाता है।

विशेष—(i) कहानी की रोचकता एव भूमिका के लिए प्राकृतिक वातावरण
का आकर्षक चित्रण किया गया है, जिसमे मानवीय सवेदना का स्वर भी विद्यमान
है।

(ii) भाषा-शैली सरल, सुबोध एव चित्रात्मक है।

(2) **कल उसका बड़ा - - - - - - - - - - रह गये थे।** (पृ. 68)

प्रसंग—इस अवतरण मे जेठूमल की मजबूरी एव पीडा का मार्मिक चित्रण
कर लेखक ने बतलाया है कि किस प्रकार अचानक आयी बरसात से जेठूमल को
नुकसान उठाना पड़ा।

व्याख्या—बिना मौसम की बरसात के कारण जेठूमल के रोजगार को बहुत
हानि हो रही थी। कल भी पहले उमस बढी और फिर अचानक तेज बरसात
आने से वातावरण एकदम बदल गया था। बरसात मे लोग या बच्चे कुल्फी नही
खाते तथा घड़े में रखी हुई कुल्फी वैसे भी पिघल जाती है। जेठूमल के साथ भी
यही हुआ। कल दिन भर तेज वर्षा होती रही तथा सन्ध्या समय तक ही पानी थम
गया था। तब वह बिना कमाई किये मटके को कन्धे पर उठाकर भीगे शरीर और
भारी मन से अपने घर पहुँचा था। एक भी कुल्फी न बिकने से उसका भारी
नुकसान हो गया था। जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नि सत्तो ने फुर्ती से कुल्फी
की डिब्बियों को भगोने में खाली कर डाला और शीघ्रता से उसे चूल्हे पर चढ़ा
दिया था। उसने अपने मन में सोचा था कि आज तेज बरसात से कुछ कमाई नहीं
हुई, इससे राशन व्यवस्था भी नहीं हो सकेगी, अतः वह कुल्फी के घोल को ही
पिलाकर अपने बच्चे की भूख को शान्त करने का प्रयास करेगी। लेकिन उसकी यह

अभिलाषा पूरी नहीं हुई, क्योंकि भगोने को थोड़ी-सी आँच लगते गया और वह पीने लायक नहीं रहा। इससे जेठू और सत्तो दोनों ह एवं अत्यन्त निराश आँखों से आकाश की ओर देखते रह गये थे आकाश में भी तेज हवा से बादल फट रहे थे।

विशेष—(i) लेखक ने निम्नवर्ग के अभावग्रस्त व्यक्ति की करुणापूर्ण चित्रण किया है। समाज से तिरस्कृत और दलित वर्ग की कभी पूरी नहीं हो पाती हैं और उनका जीवन सदा उत्पीड़ित रहता है

(ii) भाषा-शैली सरल एवं भावपूर्ण है। चित्रात्मकता द्रष्टव्य

(3) यह बात और है - - - - - - - - - गयी थी। (पृ.

प्रसंग—'एक और मौत' कहानी का नायक जेठूमल कुल्फी तैयार कर फेरी पर जाने के लिए तैयार हो गया। तभी टोपन की मृ इससे जेठू सोचने लगा कि उसे तुरन्त घर से मटका लेकर निकल ज क्योंकि घर में रहने पर तो टोपन की शव-यात्रा में जाना ही पड़ेगा अ रखी कुल्फी बरबाद हो जायेगी। परन्तु वह घर से बाहर नहीं जा सका। उसका मन द्वन्द्व से ग्रस्त हो गया था। इस अवतरण में उसी स्थिति हुआ है।

व्याख्या—जेठूमल टोपन की मृत्यु का समाचार सुनकर तुरन्त निकल जाना चाहता था और उस समय आदत के अनुसार उसके 'कुल्फी-मलाई' की टेर भी स्वतः फूट गई थी, परन्तु वह चाहता हुआ नहीं जा पा रहा था। क्योंकि उसको भट्ट ने घर में देख लिया था और उ टोका भी था कि टोपन गुजर गया है। अतः स्वयं चुपचाप निकल जाने रास्ता उसके पास नहीं था। वैसे भी टोपन की शव-यात्रा में जाना जरूर जात बिरादरी का मामला था। इस विचार से चुपचाप घर के बाहर हुआ जेठूमल वापस घर की ओर मुड़ गया। उस समय विवशता के क ऐसा लग रहा था कि जैसे उसके पैर बर्फ में धंसकर जम गये हैं और पैरों को आगे बढ़ाने के लिए उठा नहीं पा रहा है। उस समय उसके स ओर रोजी-रोटी का प्रश्न है तथा दूसरी ओर जात-बिरादरी का सवाल है

अन्ततः जेठूमल घर में लौट आया। उसने कुल्फी का मटका घ कोने में टिकाकर रखा। तत्पश्चात् वह जब खड़ा होने लगा तो उसे ऐस हुआ कि उसका अंग-अंग टूटकर गिरने लगा है। जैसे कल उसकी जम कुल्फी गलकर बिखर गई थी, वैसे ही इस समय उसका सारा शरीर टूटक क्षीण हो गया था। उसकी शरीर में शक्ति का संचार अचानक रुक-सा गय

विशेष—(i) कहानी के नायक जेठूमल की मनोदशा और च विशेषता का मार्मिक चित्रण किया गया है।

(ii) भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण एवं शैली मनोविश्लेषणात्मक-भ है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "उसे लगा था कि जैसे किसी बस्ती को डिबिया में बन्द करके
ास और धुंधल में छोड़ दिया था।"

जेठूमल को ऐसा क्यों लग रहा था?

उत्तर—उस दिन एकाएक ही उमस बढ़ गई थी, हवा का चलना बन्द हो ा था और बादलों की धुंध छायी हुई थी। इन सभी कारणों से सारा वातावरण दम घुटन से भरा और धुंधलके से घिरा था। अतः पानी बरसने की सम्भावना जेठूमल को ऐसा लग रहा था।

प्रश्न 2. सड़क की तपन भी जेठूमल को राहत क्यों पहुँचा रही थी?

उत्तर—सड़क पर तपन के स्पर्श से जेठूमल सोच रहा था कि इतनी गर्मी रही है, इसमें भला ठण्डी कुल्फी कौन नहीं खायेगा? ऐसे गर्म वातावरण में उसकी सारी कुल्फी उठ जायेगी और अच्छा लाभ रहेगा। इस तरह की आशा जेठूमल को सड़क की तपन में चलने पर भी राहत महसूस हो रही थी और वह ल्फी-मलाई' की टेर लगाता हुआ आगे बढ़ रहा था।

प्रश्न 3. "मन्दिर के आंगन में खड़े पीपल के पत्ते सिक्कों की तरह बज रहे ' लेखक ने पीपल के पत्तों से सिक्कों की आवाज निकालने का प्रयास क्यों किया

उत्तर—जेठूमल ने बड़ी आशा के साथ कुल्फी बेचने की योजना बनाई थी। ारी का दूध लाकर उसने कुल्फी तैयार की थी। वह चाहता था कि इस गर्मी मौसम में उसका पूरा माल बिक जाये, परन्तु अचानक आयी तेज वर्षा ने उसकी ाओं पर पानी फेर दिया। उस समय मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण उसे मन्दिर पीपल के पत्तों की आवाज सिक्कों की बजने की आवाज की तरह लग रही थी : उसका मन सोच रहा था कि उसकी कुल्फी बिकने पर इसी तरह उसकी जेब सिक्के खनकेंगे। अतः लेखक ने जेठूमल की अभिलाषा एवं पीड़ा को व्यक्त करने लिए इस तरह का मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है।

प्रश्न 4. "आधे आसमान पर चढ़कर तपने वाला सूरज गल-गलकर बह ता था।" इस कथन के सम्बन्ध में विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर—दिन का लगभग आधा समय हो गया था और गर्मी की ऋतु में धे आसमान पर चढ़ा हुआ सूर्य बहुत तपन बिखेर रहा था। परन्तु उस दिन ानक आँधी-तूफान के साथ बादलों के छा जाने और तेज वर्षा होने से वह तपने वाला सूर्य कहीं छिप गया था, अर्थात् अदृश्य हो गया था। मानो वह भी अधिक गर्मी से उसी तरह पिघल कर वर्षा के रूप में वह गया था, जैसे कि ूमल की जमी हुई कुल्फी बेमौसम की वर्षा से गल-गलकर बहने लगी थीं। इस ह लेखक ने श्लिष्ट वर्णन के द्वारा दोनों स्थितियों की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 5. "थोड़ी-सी आँच लगते ही दूध फट गया था
फटी-फटी आँखों से आकाश में फटते हुए बादलों को देखते रह गये थे।
पर जेठूमल तथा सत्तो का अत्यधिक दुखी होने का क्या कारण था?

उत्तर—जेठूमल की कमाई नहीं हुई थी और घर में अनाज
इस कारण सत्तो ने सोचा कि वह कुल्फी के घोल को ही पिलाकर बच
शान्त कर देगी, परन्तु वह घोल भी जब फट गया, तो अत्यधिक
व्यथा के कारण वे दोनों अत्यधिक दुखी हो गये।

प्रश्न 6. "उसे लगा, जैसे मौत का दरिया 'टोपन' के बाँध
कालोनी में घुस आया है, जिसमें सब लोग डिब्बियों में बन्द करके छोड़ दि
टोपन की मौत का सारी बस्ती पर क्या प्रभाव पड़ा? लिखिए।

उत्तर—इस बस्ती के सभी लोग दैनिक मजदूरी के सहारे अप
चलाते थे। उत्तूमल आलू-छोले का खोमचा लगाता था, दुलाना सब्ज
तथा अमरूद आदि का ठेला लगाता था, मूरजा स्कूली बच्चों के टिफि
का काम करता था। जेठूमल कुल्फी बेचने का काम करता था। इसी
लोग भी दैनिक मजदूरी से जीविका चलाते थे। वे टोपन की मौत से
काम पर नहीं जा सकते थे, सभी को टोपन की शव यात्रा में जाना था।
टोपन की मौत ने सारी बस्ती को इस तरह हिला कर रख दिया था,
बाढ़ का पानी वहाँ घुस आया हो। उससे सारी बस्ती में मातम छा गया

प्रश्न 7. "टोपन की अर्थी को कन्धा देते हुए जेठूमल
"कुल्फी-मलाई" की आवाज क्यों निकली? सबने उसकी ओर घृणा से क्यों

उत्तर—जेठूमल बेमौसम की वर्षा हो जाने से दो दिन से नुकसान
था। इस कारण उसके घर में चूल्हा भी नहीं जला था। टोपन की मौत
उस दिन की कमाई का भी नुकसान हो रहा था। फलस्वरूप उसकी
एकदम अस्थिर हो गई थी। इसलिए अर्थी पर कन्धा देकर ज्यों ही
सामने पहुँचा, तो प्रतिदिन की आदत की तरह उसके मुँह से अचान
मलाई" का स्वर निकल पड़ा। अर्थी को ले जाते समय भी जीविका का
एवं विवशता उसके मन को कचोट रही थी, परन्तु ऐसे मातम के क्षण
लोगों ने उसकी ओर घृणा से देखा और उसके अस्थिर स्वभाव को धिक्का

प्रश्न 8. "डॉ. आलम शाह की इस कहानी में उपेक्षित तथा उत्पी
के जीवन का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है।" इस कथन पर अपने वि
कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी में डॉ. आलम शाह ने ऐसा कथानक
जिसके सभी पात्र निम्न वर्ग के हैं। वे सब अभावों से ग्रस्त, उपेक्षित,
ध्वस्त आकांक्षाओं वाले हैं। वे दैनिक मेहनत-मजदूरी करके अपने पा
पालन बड़ी मुश्किल से चला पाते हैं, जिस दिन उनके काम में बाधा पड़त

दिन घर में चूल्हा जलना मुश्किल हो जाता है। बेमौसम की बरसात या बिरादरी से अचानक किसी की मौत हो जाने पर जब वे अपने काम पर नहीं जा पाते हैं, तो सारी बस्ती में ऐसा लगता है जैसे मातम छा गया है। प्रस्तुत कहानी में जेठूमल ऐसा ही अभावग्रस्त पात्र है। वह कुल्फी बेचने का काम करता है, परन्तु लगातार दो दिन से बेमौसम की बरसात से उसका काफी नुकसान हो जाता है। वह उधार से दूध आदि सामान लाता है, फिर अपनी लड़की की चाँदी की पायजेब गिरवी रखता है, कुल्फी जमाकर ज्यों ही फेरी पर जाना चाहता है, तभी टोपन की मौत हो जाती है। इस कारण उसका और भी नुकसान हो जाता है तथा घर में राशन न होने से भूख का सामना करना पड़ रहा है।

जेठूमल की तरह ही प्रस्तुत कहानी के अन्य पात्र भट्ट, उत्तूमल, दुलाना, भूरजा, झूमरमल आदि हैं जो अभावों में जीते हैं। आर्थिक कमजोरी, सामाजिक उपेक्षा, अपूरित अभिलाषा एवं जीविका का बड़ी मुश्किल से निर्वाह करने की विवशता से ये सभी पात्र अत्यन्त पीड़ित रहते हैं। लेखक ने इनकी पीड़ा का सजीव चित्रण कर उत्पीड़ित एवं उपेक्षित वर्ग की व्यथा-विवशता पर मार्मिक प्रकाश डाला है। मानवीय संवेदना एवं करुणा की दृष्टि से यह अत्यन्त प्रभावशाली कहानी है।

प्रश्न 9. "भूखे मनुष्य की करुणा समाप्त हो जाती है।" इस कहानी के आधार पर नीतिकारों के उक्त कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—संस्कृत का नीति वचन है कि भूखा व्यक्ति करुणाविहीन होकर क्या-क्या नहीं करता है? अर्थात् भूख की शान्ति के लिए प्राणी महान अनर्थ भी कर सकता है, वह अनुचित आचरण एवं संवेदना से रहित व्यवहार भी करने लग जाता है। प्रस्तुत कहानी का पात्र जेठूमल अभावग्रस्त है। प्रतिदिन कुल्फी-मलाई की फेरी लगाकर वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर पाता है। बेमौसम की बरसात से उसे नुकसान उठाना पड़ रहा है। इस कारण घर मे राशन नही है, दो दिन से खाना नहीं पका है। तभी बस्ती में टोपन की मौत हो जाती है। उसकी शव यात्रा में जाना भी जरूरी है, परन्तु जेठूमल चुपचाप वहाँ से कुल्फी का मटका उठाकर कहीं दूर चले जाना चाहता है। उस समय उसकी मानवीय सवेदना दब जाती है। तत्पश्चात् वह शवयात्रा में जाता है, परन्तु अर्थी को कन्धा देते हुए जब वह विद्यालय के सामने पहुँचता है तो अनायास प्रतिदिन की आदत के अनुसार "कुल्फी मलाई" की टेर लगाता है। इस तरह भूख ने उसकी मानवीय सवेदना और करुणा को समाप्त कर दिया है। अतः नीतिकारों का उक्त कथन इस कहानी से परिपुष्ट हो जाता है।

प्रश्न 10. "घुटनों पर हाथ रखकर चट की आवाज के साथ उठा"—इस उक्ति से कौन-सा भाव व्यक्त होता है?

उत्तर—(3) पोषण की कमी का।

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किस शब्द की वर्तनी सर्वाधिक शुद्ध है।

उत्तर—(1) डिब्बियों में।

पद्य खण्ड

1. सूरदास

कविता परिचय—यहाँ संकलित ये पद सूरदास द्वारा रचित 'भ्रम
लिये गये है। उद्धव गोपियों को ज्ञान-योग का उपदेश देने गये थे। इसी
गोपियाँ उनसे निगुर्ण ब्रह्म का अता-पता आदि पूछने लगीं। वे मथुरा क
की कोठरी और ब्रजभूमि में श्रीकृष्ण के दर्शनों के लिए लालायित रहती
पदों में इसी तरह के भाव व्यक्त किये गये हैं।

(1) निरगुन कौन - - - - - - - मति नासी। (पृ. 75)

शब्दार्थ—मधुकर=भौंरा। जनक=पिता। जननी=माता। गौंस
मति=बुद्धि।

व्याख्या—जब उद्धव ने गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की उपासना क
दिया तो वे उससे निर्गुण के सम्बन्ध में तरह-तरह के प्रश्न कर अनेक आ
लगीं। गोपियों ने उद्धव से प्रश्न किया कि हे उद्धव! जिस निर्गुण को अ
लिए तुम कह रहे हो, वह किस देश का निवासी है? हे मधुप! हम तुमसे
नहीं कर रही हैं, अपितु सच्चे मन से शपथ लेकर तुमसे पूछती हैं कि तुम
के साथ उस निर्गुण के सम्बन्ध में हमें पूरा परिचय बता दो। वह तुम्
बताया गया निर्गुण कहाँ रहता है, उसके पिता कौन हैं, उसकी माता का न
है, वह किस नारी का पति है और कौन उसकी दासी है? उस निर्गुण
और स्वरूप कैसा है, उसका भेष किस तरह का है और कौन-कौन से
रुचिकर हैं। इन सब प्रश्नों या शंकाओं के तुम सही-सही उत्तर दो, यदि
झूठ बोले तो हमसे दण्ड पाओगे। इस तरह की प्रश्नावली सुनकर उद्धव उ
में असमर्थ रहे और कुछ नहीं बोल सके। सूरदास कहते हैं कि गोपि
आकुलता एवं सरलता को देखकर उद्धव ठगा-सा खड़ा रहा और सोचने ल
इन सभी गोपियों की बुद्धि नष्ट हो गई है, अर्थात् ये ज्ञानपूर्ण उपदेश देने
नहीं हैं। या ज्ञान का बखान करने वाले उद्धव की समस्त बुद्धि नष्ट हो ग
वह ठगा हुआ-सा उन गोपियों को देखता रहा।

(2) बिलग जानि - - - - - - - - न्यारे॥ (पृ. 75)

शब्दार्थ—बिलग=अन्यथा, बुरा। सुफलकसुत=अक्रूर। भंवारे
कमलनयन=कमल के समान नेत्रों वाले श्रीकृष्ण। माट=मटका,
परवारै=धोना। कालिन्दी=यमुना।

व्याख्या—गोपियाँ श्रीकृष्ण, अक्रूर एवं उद्धव के काले वर्ण को लेक
करती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! आप हमारी बात को अन्यथा या बु
मानना क्योंकि हम एक तथ्य का उद्घाटन अपनी समझ के अनुसार कर र
वह तथ्य यह है कि मथुरा काजल की कोठरी है, इसलिए जो भी वहाँ से अ

ाह काला ही होता है। वहाँ से आने वालों का शारीरिक वर्ण एकदम काला होता ्है। उदाहरण के लिए देखा जाय तो तुम काले हो, अक्रूर (जो पहले आये थे) भी ाले थे; ये वहाँ से आये हुए तथा मँडराते हुये भौंरे भी काले हैं और श्रीकृष्ण भी तो काले ही हैं। मथुरा के सब कालों के बीच में कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाले नोहर श्रीकृष्ण और भी अधिक शोभित होते होंगे। ऐसा जान पड़ता है कि तुम बके सब मानो नीले-काले नील के मटके से निकाल कर यमुना के जल में क्षालित किये गये हों। आशय यह है कि कपड़ों पर नील चढ़ाने के लिए धोबी ाट में नील तैयार करता है व उसमें कपड़े डालकर उन्हें फिर साफ पानी से ोता है। मथुरा के निवासी श्रीकृष्ण, उद्धव, अक्रूर और भ्रमर का नीला वर्ण इसी ारण है कि मानो नील के माट से निकाले गये हैं। सूरदास कहते हैं कि गोपियो ने आक्षेपपूर्वक उद्धव से कहा कि इसी कारण यमुना का जल भी काला (श्याम वर्ण ा) हो गया है। अन्ततः श्याम (काले) के सारे गुण विलक्षण ही होते हैं।

विशेष—(i) समस्त कृष्ण काव्य में 'काले रंग' को लेकर अत्यधिक व्यग्य िया गया है। अन्य कवियों ने केवल श्याम वर्ण पर आक्षेप किया है, परन्तु ूरदास ने श्याम के आन्तरिक गुणों पर प्रकाश डाला है।

(ii) इसमें हेतूत्प्रेक्षा और तद्गुण अलंकार है।

(3) आयौ घोष - - - - - - - - - - - - **बिसाबह**। (पृ. 75)

शब्दार्थ—घोष=ग्वालों की बस्ती। हाटक=सोना। धुरही=प्रारम्भ से ही। ारी=पानी। साहुहिं=स्वामी को।

व्याख्या—मथुरा से उद्धव के आगमन पर गोपियाँ परस्पर वार्तालाप करती ुई कहती हैं कि आज तो ग्वालों की बस्ती (गोकुल-ब्रज) में बहुत बड़ा व्यापारी ा गया है। वह व्यापारी निर्गुण ब्रह्म और ज्ञान-योग की खेप (विक्रय वस्तु) ादकर ले आया और उसनें उस खेप को ब्रज में उतार दिया है। अब वह जवासियों को अपनी कुछ तुच्छ वस्तुएं देकर अर्थात् अपने व्यर्थ के ज्ञानोपदेश को ेकर हमसे बदले में प्रियतम कृष्ण के प्रेम रूपी स्वर्ण को माँग रहा है। इस तरह म मूल्य की वस्तु देकर वह हमसे अत्यधिक मूल्य की वस्तु को माँग रहा है और ुमें एकदम मूर्ख समझ कर इस तरह का सौदा करना चाहता है। यह व्यापारी तो ालूम पड़ता है कि प्रारम्भ से खोटी कमाई का अन्न खाता रहा है और अब भी पने सिर पर उस खोटे माल को लादकर घूम रहा है। इस ब्रज में ऐसा कौन है ो इसके कहने पर बहक जायेगा? यहाँ ऐसा अनाड़ी कौन है, अर्थात् ब्रज में ऐसा ासमझ कोई नहीं है, जो अपने शुद्ध मीठे दूध को छोड़कर खारे कुएं का पानी ीवे।

सूरदास कहते हैं कि तब गोपियों ने उद्धव से स्पष्ट कहा कि तुम यहाँ से ीघ्र ही अपना खोटा माल लेकर चले जाओ और इसके बदले खरा माल लेकर ाओ। तुम हमसे मुँह माँगी कीमत ले लो, परन्तु शीघ्र ही अपने शाह अर्थात ्वामी प्रभु श्रीकृष्ण को मथुरा से लाकर हमें दर्शन करा दो।

विशेष–(i) इसमें गोपियों ने उद्धव को व्यापारी, उसके निर्गु
उपासना हेतु दिये गये ज्ञान-योग उपदेश को विक्रय-वस्तु की खेप और
उसका शाह बताया है। उद्धव ज्ञान योग का उपदेश देकर गोपियों
समान अतीव मूल्यवान वस्तु प्रियतम श्रीकृष्ण के प्रेम का परित्याग कर
है।

(ii) अन्योक्ति तथा रूपक के साथ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग

(4) ऊधौ मोहिं - - - - - - - - - - - - जदुनाथ। (पृ. 7

शब्दार्थ–बिसरत=भूलना। छाहीं=छाया। सिरात=व्यतीत होना

व्याख्या–उद्धव के मुख से गोपियों के अनन्य प्रेम और विरह
समाचार सुनकर श्रीकृष्ण अपनी मनोदशा को व्यक्त करते हुए कहने
उद्धव मुझ से ब्रज की स्मृति भुलायी नहीं जा सकती। मुझे हर समय वृ
गोकुल के वन-उपवनों एवं सघन कुंजों की छाया का स्मरण आता रह
वहाँ के वन-उपवनो में मिलने वाले सुख और सघन छाया का आनन्द
सकता हूँ। वहाँ रहते हुए प्रातःकाल माता यशोदा और नन्द बाबा के
मन को अत्यधिक सुख मिलता था। वहाँ प्रतिदिन माता यशोदा मक्ख
साथ रोटी खिलाती थी, खाते समय उसका अतीव स्नेह मिलता था, जिस
आनन्द की अनुभूति होती थी। वहाँ गोपियों एवं ग्वाल-बालों के साथ
थे और सारा ही दिन हँसते-खेलते हुए व्यतीत हो जाता था। सूरदास क
वे ब्रज के निवासी बड़े भाग्यशाली हैं, जिनके कल्याण करने वाले श्रीकृष
हैं, अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान सदा ही ब्रजवासियों के हित का चिन्तन
हैं। इस कारण ब्रजवासी अतीव भाग्यशाली हैं।

विशेष–(i) इसमें स्मरण अलंकार है। ब्रजवासियों के प्रेमपूर्ण व
स्मरण करने से श्रीकृष्ण अपने मन की व्यथा प्रकट करते हैं। उन
कर्त्तव्य-निर्वाह का कठोर बन्धन है, इसी कारण वे ब्रज में नहीं जा पा र

(ii) इसी तरह का वर्णन अन्य कवियों ने भी किया है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो"
गोपियों के सहज प्रश्न सुनकर उद्धव मौन क्यों हो गए? स्पष्ट की

उत्तर–उद्धव इसलिए मौन हो गए कि वे गोपियों के अनन्य
भावुकता को देखकर सोचने लगे कि इनके ज्ञान-योग का उपदेश देना व
निर्गुण ब्रह्म की उपासना कदापि स्वीकार नहीं करेंगी, ये तो श्रीकृष्ण से
निष्ठा रखेंगी। इनको श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम करने से निवृत्त करना अत्यन्त
कार्य है। ऐसा एकनिष्ठ एवं समर्पित भावना वाला प्रेम-विश्वास मुझे प
दिखाई दिया है। इसलिये उद्धव कुछ भी उत्तर नही दे सके।

प्रश्न 2. गोपियों ने मथुरा को काजल की कोठरी क्यों कहा है?

उत्तर—मथुरा में जो भी रहता है, वह काले वर्ण का दिखाई देता है। उसका शरीर ही नहीं विचारधारा एवं हृदय भी काला होता है। उद्धव इसी कारण काले थे, पहले अक्रूर आये थे, वे भी काले वर्ण के थे और श्रीकृष्ण भी श्याम वर्ण के थे। इन सबका शारीरिक रंग या वर्ण काला होने से गोपियों ने मथुरा को काजल की कोठरी कहा है।

प्रश्न 3. गोपियों ने यमुना का श्याम रंग होने का क्या कारण बतलाया है?

उत्तर—गोपियों ने बतलाया कि नील के माट (मटके) से निकाले गये वस्त्र की तरह श्रीकृष्ण एवं अन्य श्यामवर्ण के मथुरावासी जमुना में धोये गये। इससे उनके शरीर का नील (काला) रंग (वर्ण) जमुना के पानी में मिल गया और उसका वर्ण श्याम (श्रीकृष्ण के वर्ण की तरह) हो गया।

प्रश्न 4. "फाटक देकर हाटक माँगत"
इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गोपियाँ उद्धव से कहती है कि तुम ज्ञान-योग रूपी तुच्छ वस्तु के बदले हमसे श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य-प्रेम रूपी सोने को माँग रहे हो। अर्थात् तुच्छ वस्तु के बदले सोना नहीं दिया जा सकता, उसी प्रकार निर्गुण ब्रह्म की उपासना के बदले साकार परम प्रिय श्रीकृष्ण से प्रेम नहीं छोड़ा जा सकता है। ऐसा करना सर्वथा अनुचित रहेगा। मूल्य के अनुसार वस्तु भी मिलनी ही चाहिए।

प्रश्न 5. "धुर ही ते खोटो खायो है"
गोपियों ने यह बात किस आधार पर कही है?

उत्तर—उद्धव ने आते ही ब्रजवासियों एवं श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल गोपियों को ज्ञान-योग का उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया था। इस तरह वह अपना अनाड़ीपन दिखा रहा था। इस कारण ही गोपियों ने कहा कि तुम प्रारम्भ से ही खोटी चीज का सेवन करते रहे हो, इसलिए तुम्हारी बुद्धि में भी वह खोटी चीज उपजती है। तुम सरल-साकार प्रेम-भाव की अपेक्षा अत्यन्त जटिल निराकार की उपासना का उपदेश इसी खोटी बुद्धि के कारण दे रहे हो।

प्रश्न 6. गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को किस पंक्ति में प्रकट किया है?

उत्तर—"ऊधौ जाहु सवारै - - - - - - - - - - - - दिखावहु" तथा "कमलनयन को- - - - - - - - गुन न्यारे" में गोपियों ने अपने अनन्य प्रेम को प्रकट किया है।

प्रश्न 7. कृष्ण ब्रजभूमि को क्यों नहीं भूल पा रहे हैं?

उत्तर—ब्रजवासियों के अनन्य प्रेम, ग्वाल-बाल का अनुपम सखा भाव और माता यशोदा की वत्सलता का स्मरण कर श्रीकृष्ण ब्रजभूमि को नहीं भूल पा रहें

है, वैसे भी ब्रजमण्डल के प्रति सहज आत्मीयता, श्रद्धाभाव एवं प्रेम के ब्रज भूमि को भूल नहीं पाते हैं तथा बार-बार उसका स्मरण करते रहते

प्रश्न 8. कृष्ण बाबा नन्द तथा माता यशोदा के सहज स्नेह व याद क्यों कर रहे हैं?

उत्तर—माता यशोदा बड़े प्यार-दुलार से उन्हें रोटी-मक्खन खिलाती थी, बाबा नन्द स्नेहपूर्ण व्यवहार करते थे। इस कारण श्रीकृ सहज स्नेह को बार-बार याद करते रहते हैं।

प्रश्न 9. सूरदासजी ने ब्रजवासियों के भाग्य की सराहना क्यों की

उत्तर—ब्रजवासियों का सौभाग्य इस कारण सराहनीय है कि तथा कल्याण के लिए भगवान श्रीकृष्ण सदैव चिन्तित रहते हैं। वे ब्रजव सदैव सानन्द और प्रसन्न देखना चाहते हैं और बार-बार उनका स्मरण हैं। सूरदासजी ने इसी कारण ब्रजवासियों के भाग्य की सराहना की है।

प्रश्न 10. "सूरदासजी ने भ्रमर गीत में सगुण भक्ति का महत्व किया है।" उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हिन्दी साहित्य में 'भ्रमर गीत' परम्परा का विशेष श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियों की विरह-व्यथा असह्य हो जात श्रीकृष्ण उद्धव को सन्देशवाहक के रूप में भेजते हैं। वे ब्रजभूमि में जाक को ज्ञान-योग और निर्गुण साधना का सन्देश देते हैं। इसी प्रसंग को 'भ्रम निरूपित किया गया है। सूरदास भक्तिकालीन कवियों में सगुण भक्ति पक्षधर थे। उन्होंने उद्धव के द्वारा दिये गये निर्गुण उपासना के उपदेश क के मुख से खण्डन कराया है तथा उसके ज्ञान-योग को बड़ी वाचालत अनुचित भी बतलाया है। उद्धव के द्वारा निर्गुण-उपासना की बात क पूछती हैं कि—

"निर्गुण कौन देश को वासी?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दें, बूझति साँच न हाँसी।"

वे निर्गुण उपासना को एक मानसिक व्यथा बतलाती हैं। इ रूखापन और अन्तर्दृष्टि की जरूरत पड़ती है, जबकि सूरदास की गोपि साकार प्रियतम श्रीकृष्ण के दर्शनों के लिए लालायित रहती हैं। वे स्पष्ट कि—

"ऊधौ मन नहीं दस बीस।
एक हुतो सो गयो स्याम संग को आराधै ईस?"

x x x

अंखियाँ हरि-दर्शन की भूखी।
कैसे रहें रूपरस रांची, ए बतियाँ सुन रूखी।"

इस प्रकार सूरदास ने 'भ्रमर गीत' में निर्गुण भक्ति का खण्डन भक्ति का प्रतिपादन किया है और अपने आराध्य की अनेक छवियो क अंकन किया है।

प्रश्न 11. "आयो घोष बड़ो व्यौपारी"
इस पंक्ति में कौनसा भाव व्यक्त हो रहा है?

उत्तर—(1) व्यंग्य।

प्रश्न 12. "कहिं रस में अभिलासी"
इस पंक्ति में 'रस' शब्द का प्रासंगिक आशय क्या होता है?

उत्तर—(3) रुचि

2. गोस्वामी तुलसीदास

कविता परिचय—इस संकलन में प्रथम दो पद 'कवितावली' से संकलित हैं। इन पदों में तुलसी ने वन मार्ग पर आगे बढ़ते हुए राम, लक्ष्मण तथा सीता का मनोहारी वर्णन किया है। अन्य दो पद 'विनयपत्रिका' से संकलित हैं, इनमें श्रीराम की भक्ति-भावना एवं अनन्यता का मार्मिक चित्रण किया गया है।

(1) सीस जटा - - - - - - - - - - - - - को है। (पृ. 78)

शब्दार्थ—सरासन=धनुष। सुठि=सुन्दर। तून=तरकस॥ रावरे=आपके। विलोचन=नेत्र।

व्याख्या—तुलसीदास कहते हैं कि जब सीता एवं लक्ष्मण के साथ श्रीराम वन-मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे, तो किसी ग्रामवधू ने सीता से पूछा कि हे सखि! जिसके सिर पर जटाएँ शोभायमान हैं, छाती अत्यन्त चौड़ी है, भुजाएँ विशाल हैं, नेत्र कुछ लाल और भौहें कुछ टेढ़ी है तथा जिसने कमर में तरकस और हाथों में धनुष-बाण पकड़ रखे हैं, जो वन मार्ग पर चलते समय अतीव शोभायमान हो रहे हैं और जो बड़े ही आदर के साथ बार-बार पवित्र दृष्टि से तुम्हारी ओर देखकर हमारे मन को मोह रहे हैं, वे साँवले वर्ण के आपके कौन हैं? अर्थात् ग्रामवधू बड़ी चालाकी से पूछती हैं कि साँवले से मनोहर स्वरूप वाले आपके क्या लगते हैं, उनसे आपका क्या पारिवारिक सम्बन्ध है? कृपया, यह हमें भी बता दो।

विशेष—श्रृंगार का सात्विक चित्रण किया गया है। प्रश्नोत्तर विधि प्रशंसनीय है। अनुप्रास अलंकार है।

(2) सुनि सुन्दर - - - - - - - - - - - कँजकली। (पृ. 74)

शब्दार्थ—बैन=वचन। सुधा=अमृत। साने=सने हुए, व्याप्त। सयानी=चतुर। सैन=इशारा। औसर=अवसर। लोचन लाहु=आँखों का लाभ। तड़ाग=तालाब। भानु=सूर्य। कंज=कमल।

व्याख्या—तुलसीदासजी वर्णन करते हुए कहते हैं कि उस ग्रामवधू के सुन्दर तथा अमृत के रस से भरे हुए मधुर वचन को सुनकर सीता ने समझ लिया कि यह बड़ी चतुर एवं अच्छी समझदार है। इसलिए उसके उक्त प्रश्न का उत्तर देने के लिए सीता ने अपनी आँखों को तिरछा करके कुछ संकेत किया और उसी

संकेत से समझाकर मुस्कराने लगी। तुलसीदास कहते हैं कि उस अव सबकी सुन्दरता देखने योग्य थी तथा उस को देखने से नेत्र धारण क लाभ मिल गया था। अर्थात् जिसने भी उस मनोरम दृश्य का सौन्द आँखें धारण करने का सुफल मिल गया। उस समय वह दृश्य ऐसा ल मानो प्रेम के सरोवर में सूर्य के उदय होने से सुन्दर कमल की कली खि

विशेष—प्रेम पर सरोवर का आरोप, सीता एवं ग्रामवधुओ के पर खिले हुए कमल का आरोप किया गया है। इस कारण यहाँ रूपक त अलंकार है। भारतीय नारी पति का नाम नहीं लेती है या स्पष्टतः कह करती है। यहाँ भारतीय नारी का यह आदर्श व्यक्त हुआ है।

(3) माधव! मोह - - - - - - - - - - - - पावै कोई। (पृ.

शब्दार्थ—करिय=करने पर । आभ्यन्तर=भीतर, मन। ग्रं कराह=कडाहा। कलप सत=सौ कल्प। औटत=उबालना। उरग=सर्प। बाल्मीकि=बिल या बॉबी।

व्याख्या—गोस्वामी तुलसीदास अपने आराध्य से निवेदन करते हैं कि हे माधव! मेरी यह सांसारिक मोह की फाँसी कब टूटेगी? सांसारिक माया-मोह से छुटकारा कब मिलेगा? बाहर से चाहे कोई क करे, पर भीतर की गाँठ उन बाहरी उपायों से कैसे खुल सकेगी? अ अन्तर्मन की गाँठ खोलने के लिए तो तदनुरूप उपायों की जरूरत है। व्यक्ति का अन्तःकरण शुद्ध नहीं होगा, तब तक बाहरी कर्मकाण्ड या मनुष्य माया के बन्धनों से मुक्त नहीं हो सकता है। घी से भरे हुए चन्द्रमा का जो प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, वह सौ कल्प तक आग जला उबालते रहने पर भी नष्ट नहीं हो सकता, जब तक कड़ाहे में घी रहेग चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाई देता रहेगा। इसी प्रकार मन में मोह रहे तक भेद-बुद्धि भी बनी रहेगी।

किसी पेड़ के खोखले (कोटर) में रहने वाला पक्षी वृक्ष को क नहीं मरता, उसी प्रकार बाहरी उपाय करने पर भी बिना विवेक के मन शुद्ध नहीं हो पाता है। जिस प्रकार बॉबी पर चाहे कितने ही प्रहार उससे उसके भीतर बैठा सर्प नहीं मरता, उसी प्रकार बाहर से शरीर ही स्वच्छ और सजा हुआ रखें, किन्तु मन की मलिनता इससे नष्ट नह और वह विषय-वासना में अत्यधिक आसक्त रहता है। अतः अन्तर्मन परमावश्यक है। इसलिए तुलसीदास अपने आपको सम्बोधित करते हुए कि भगवान और गुरु की कृपा के बिना विशुद्ध आत्मज्ञान नहीं हो सकता ज्ञान या विमल विवेक के बिना कोई भी व्यक्ति संसार रूपी घोर-गम्भीर पार नहीं कर सकता है।

विशेष—इस पद मे अपने आराध्य और गुरु की कृपा से मोह-मा होने की भावना व्यक्त हुई है। यह संसार मिथ्या है और उसके बाह्य सा के कारण हैं। विमल विवेक से मन शुद्ध हो सकता है। रूपक और अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(4) जाके प्रिय न - - - - - - - - - - हमारो। (पृ. 79)

शब्दार्थ—वैदेही=सीता। ताहि=उसकी। कोटि=करोड़। महतारी=माता। कन्त=पति। वनितन्हि=वनिताओं ने। सुहृद=मित्र। मतो=मत या सिद्धान्त।

व्याख्या—अपनी अनन्य भक्ति-भावना व्यक्त करते हुए गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि जिसे श्रीराम और सीता प्रिय नहीं हैं, उसे करोड़ों शत्रुओं के समान समझकर छोड़ देना चाहिए, चाहे वह हमारा अत्यन्त प्रियजन ही क्यों न हो, उसका शत्रुवत परित्याग कर देना चाहिए। उदाहरण के लिए देखिए—भक्त प्रहलाद ने अपने पिता हिरण्यकश्यप को, विभीषण ने अपने भाई रावण को, भरत ने अपनी माता कैकेयी को, राजा बलि ने अपने गुरु शुक्राचार्य को और ब्रज की गोपियों ने अपने-अपने पति को भगवद्-भक्ति में बाधक समझकर छोड़ दिया और ऐसा करना इन सबके लिए आनन्द तथा कल्याण देने वाला हुआ। इस ससार मे जहाँ तक अपने मित्र और माननीय जन हैं, उन सबको श्रीराम से प्रेम और भक्ति भाव रखने के सम्बन्ध से ही अपना मानना चाहिए। यदि वे श्रीराम की भक्ति मे बाधक हों तो उनका त्याग कर देना अपेक्षित है। क्योकि जिस प्रकार अंजन को लगाने से आँख फूट जाय, तो वह अंजन किस काम का? उसी प्रकार भक्ति मे रुकावट डालने वालों से कहाँ तक सम्बन्ध रह सकता है? बस अब अधिक क्या कहूँ इतने में ही समझ लीजिए। अन्त में तुलसीदास कहते हैं कि जिसके कारण श्रीराम के चरणों में प्रेम हो, वही सब प्रकार से परम् हितकारी, पूजनीय और प्राणो से अधिक प्यारा है। बस यही हमारा मत अथवा सिद्धान्त है।

विशेष—कहते हैं कि यह पद तुलसीदास ने मीराँ के उस पत्र के उत्तर मे लिखा था, जिसमें इस बात की प्रार्थना की थी कि उन्हें परिवार वाले बहुत तग कर रहे हैं, इसलिए उसे अब क्या करना चाहिए? इसमें अनन्य आस्था एव भक्ति-भावना का सुन्दर चित्रण हुआ है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "सादर बारहिबार सुभाय चिते तुमत्यो हमरो मन मोहे" इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वन मार्ग में चलते हुए श्रीराम बड़े आदरपूर्वक बार-बार सीता की ओर पवित्र-आकर्षक दृष्टि से देख रहे थे। उनका इस तरह देखने का अभिप्राय यह था कि वन मार्ग में सीता चल भी पा रही है या नहीं, अथवा मार्ग में उन्हें कितना कष्ट हो रहा है। श्रीराम के इस तरह के सुन्दर दृष्टिपात से ग्रामवधुओं का मन अतीव मोहित-आनन्दित हो रहा था।

प्रश्न 2. ग्रामवधुओं के वचन को "सुधारस साने" क्यों कहा है?

उत्तर—ग्रामवधुओं ने बड़े स्नेह और अपनत्व-भाव के साथ सीता से पूछा कि ये साँवले वर्ण के आपके क्या लगते हैं? उनके मधुर और मन को अनन्दित करने वाले वचन को इस कारण 'सुधारस साने' कहा है।

प्रश्न 3. "अनुराग-तड़ाग में मानु उदै बिगसी मनो मंजुल कंज कली।
इस पक्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—अनुराग रूपी तालाब में प्रसन्नता रूपी सूर्य का उदय होने का मुख रूपी कमल खिल उठा। अर्थात् सीता के मनोरम उत्तर को देख सभी ग्रामवधुओं और सीता का मुख प्रसन्नता से खिल उठा। उस समय के मुख खिले हुए कमल के समान शोभायमान हो रहे थे।

प्रश्न 4. "आभ्यन्तर" ग्रन्थि से कवि का क्या आशय है?

उत्तर—"आभ्यन्तर" ग्रन्थि से आशय अन्तःकरण में अज्ञान की है। बाहरी प्रयास करने से अन्तःकरंण की गाँठ नहीं खुल सकती, वह तो आलोक से ही खुल सकती है।

प्रश्न 5. चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब तथा बिल में छिपे हुए सांप का उदा गोस्वामी जी क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर—कड़ाहे में घी के रहने तक चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाई दे और बॉबी को कूटने पर भी उसमें छिपा सौंप नहीं मरेगा। इसी प्रकार या हृदय में व्याप्त अज्ञान एवं भेद-बुद्धि और माया-मोह बाहरी उपाय दूर नहीं हो सकेगा। इस उदाहरण से गोस्वामी तुलसीदास कहना चाह बाहरी उपाय की अपेक्षा अपने मन की भेद-बुद्धि दूर करो, ज्ञान औ अपनाकर भगवद्-भक्ति में मन लगाओ। अन्तःकरण के विशुद्ध हो माया-मोह के बन्धन स्वतः दूर हो जायेंगे। इसलिए विषयी मन को श श्रेयस्कर है।

प्रश्न 6. विवेक की प्राप्ति के लिए तुलसीदास ज़ी ने भगवान तथा करुणा को आवश्यक क्यों माना है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—तुलसीदासजी ने बतलाया है कि गुरु की कृपा से ज्ञान होती है, मन का अज्ञान मिट जाता है, तत्पश्चात् ज्ञान से विवेक बुद्धि होती है। इसी प्रकार भगवान की भक्ति करने से भक्त के हृदय में विषय कम हो जाती है, वह सांसारिक माया-मोह से मुक्त होने का प्रयास क अन्ततः भगवान अपने भक्त पर कृपा करते हैं और उसे सांसारिक बन्धनों कर देते हैं, इस तरह गुरु की कृपा से मन पवित्र होता है, ज्ञान-प्राप्ति और भगवत्कृपा से सांसारिक माया-मोह से मुक्ति मिलती है।

प्रश्न 7. संसार रूपी सागर को विवेक के बल पर किस प्रकार पार सकता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गोस्वामी तुलसीदास ने स्पष्ट किया है कि ज्ञान की प्राप्ति मन से भेद-बुद्धि दूर हो जाती है। तब व्यक्ति कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को भ पहचानने लगता है और उसकी बुद्धि विवेकशील बन जाती है। विवेक आत्मचिन्तन से व्यक्ति माया-मोह, विषय-वासना एवं सांसारिक आ

धीरे-धीरे छुटकारा पाता है। इस प्रक्रिया से वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है। इस तरह विवेक बल पर व्यक्ति संसार रूपी सागर को पार कर लेता है।

प्रश्न 8. राम तथा सीता से विमुख व्यक्तियों को तुलसीदास ने शत्रु मानकर छोड़ने के लिए क्यों कहा है?

उत्तर—क्योंकि ऐसे लोगों को साथ में रखने पर भगवद्भक्ति में बाधा पड़ती है तथा उनका साथ छोड़ देने पर अपना कल्याण होता है तथा भगवान की भक्ति का आनन्द मिलता है। भगवान राम और सीता के चरणों में प्रेम-निष्ठा रखने के लिए यह जरूरी है।

प्रश्न 9. "सांसारिक सम्बन्धों को छोड़कर राम की भक्ति में स्वयं को लगाने वालों का सदैव भला ही हुआ है।" इस कथन को उदाहरण देकर समझाइये।

उत्तर—गोस्वामी तुलसीदास का यह कथन सही है कि राम की भक्ति करने वालों का सदैव कल्याण हुआ है। उदाहरण के लिए प्रहलाद ने अपने पिता का साथ छोड़ा, तो भगवान ने उसका कल्याण किया। इसी प्रकार विभीषण ने अपने भाई रावण का, भरत ने अपनी माता कैकेयी का, राजा बलि ने अपने गुरु शुक्राचार्य का और ब्रज की स्त्रियों अर्थात् गोपियों ने अपने-अपने पति से सासारिक सम्बन्धों का परित्याग किया, इससे उन पर भगवान की पूर्ण कृपा हुई और इन सभी का परम कल्याण हुआ।

प्रश्न 10. "बूझित ग्रामवधू" इस प्रयोग में बूझति शब्द का क्या आशय है?

उत्तर—(2) पूछती है।

प्रश्न 11. 'अभ्यन्तर' शब्द का सर्वाधिक शुद्ध-विग्रह क्या होता है?

उत्तर—(2) अभि+अन्तर।

3. बिहारी

कविता परिचय—रीतिकाल के महाकवि बिहारी की 'सतसई' में भक्ति, नीति और श्रृंगार रस से परिपूर्ण सात सौ से अधिक दोहे हैं। प्रस्तुत संकलन में उक्त भावों पर आधारित कुछ प्रमुख दोहे संकलित किये गये हैं।

(1) मेरी भव-बाधा - - - - - - - - - - - - होय। (पृ. 82)

शब्दार्थ—भव-बाधा=सांसारिक कष्ट। नागरि=चतुर। झांई=प्रतिबिम्ब। हरित=प्रसन्न।

व्याख्या—अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में मंगलाचरण के रूप में कविवर बिहारी राधिका जी की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि—

(1) वे चतुर राधाजी मेरे सांसारिक कष्टों का निवारण करें, जिनके शरीर पर प्रतिबिम्ब पड़ने से भगवान् कृष्ण के शरीर की आभा भी निष्प्रभ (हरित द्युति) हो जाती है।

(2) वे चतुर राधाजी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें
परछाई को देखकर ही श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व हरित (प्रसन्न) हो जाता है
जिन राधाजी का ध्यान करने (झाई परैं) मात्र से समस्त प्रकार के दुःख
निष्प्रभ हो जाते हैं।

विशेष—(i) कवि पर राधावल्लभ सम्प्रदाय का विशेष प्रभाव रह
कारण राधा की उपासना पर बल दिया है। यह नमस्कारात्मक मंगला
इसमें गौर व श्याम वर्ण के मिश्रण से हरित वर्ण, अर्थात् हरे रंग का वर्णन
रंगों के ज्ञान का परिचायक है। 'हरा होना' प्रसन्नता सूचक मुहावरा है।

(ii) इसमें श्लेष, काव्यलिङ्ग, अतिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकार

(2) अधर धरत - - - - - - - - - होति।

शब्दार्थ—ओढ दीठि=अधर व दृष्टि। पट जोति=वस्त्र की आभा।

व्याख्या—नायिका वंशी-वादन के समय श्रीकृष्ण को देख लेती
उनकी तात्कालिक शोभा को देखकर अपनी सखी से कहती है कि जैसे ही
अपने अधरों पर वंशी रखते हैं, वैसे ही उनके अधर, दृष्टि तथा पीता
आभा उस हरे रंग की बाँसुरी पर पड़ती है, जिससे वह वंशी इन्द्रधनुष
दिखाई पड़ने लगती है।

विशेष—इन्द्रधनुष बहुरंगी होता है। वंशी का हरा, अधरों का ला
का पीत नेत्रों का श्वेत, अरुण तथा श्याम होता है। इन सभी के मि
इन्द्रधनुषी आभा बन जाती है।

(3) या अनुरागी - - - - - - - - - होय। (पृ. 82)

शब्दार्थ—अनुरागी=प्रेमी, लाल। स्याम=कृष्ण, काला। उज्जवल
पवित्र।

व्याख्या—कवि श्रीकृष्ण की उपासना पर बल देता हुआ कहता है
अनुरागपूर्ण हृदय की गति से कोई परिचित नहीं है। जैसे-जैसे यह श्य
(कृष्ण-प्रेम, काला रंग जो कि पापों का प्रतीक है) में डूबता है, वैसे-वैसे यह
उज्जवल (पवित्र, शुभ) हो जाता है।

विशेष—(i) श्याम या काले रंग में डुबोने पर वस्तु श्वेत नहीं हो
पर श्याम-श्रीकृष्ण के प्रेम में मन उज्जवल हो ही जाता है। यही अनुरागी
विशेषता है। यहाँ "बूड़े" शब्द से संकेत किया गया है कि मन तब तक शु
होता, जब तक कि वह निजत्व को छोड़कर अपने आराध्य में तदाकार
जाता।

(ii) श्लेष, पुनरुक्ति, अनुप्रास और विरोधाभास अलंकार है।

(4) सीस मुकुट - - - - - - - - - - लाल।

शब्दार्थ—उर=छाती। एहि=यही। बानिक=वेशभूषा या छवि।

व्याख्या—कवि बिहारीलाल अपनी भक्ति-भावना प्रकट करते हुए
कि जिनके सिर पर मोर पंखों का मुकुट है, कमर में कच्छा बँधा हुआ

छाती पर माला शोभायमान है, ऐसी ही श्रीकृष्ण की मधुरतम छवि मेरी आँखों में सदा निवास करे। अर्थात् मैं श्रीकृष्ण के उक्त माधुर्यपूर्ण रूप की सदैव उपासना करता रहना चाहता हूँ।

विशेष—इसमें भक्ति-भावना एवं अनन्य-निष्ठा का चित्रण हुआ है।

(5) नहि पराग - - - - - - - - - - - - - हवाल। (पृ. 82)

शब्दार्थ—पराग=सौरभ। विकास=प्रस्फुटन। अली=भौंरा, मित्र। हवाल=दशा।

व्याख्या—यह अन्योक्ति जयपुर के राजा जयसिंह को लक्ष्य करके लिखी गई है जो अपनी नव-विवाहित रानी के मोह में राजकार्य भी भूल गया था। कवि कहता है कि न तो इसमें अभी पराग आया है, न मधुर मधु है और न अभी इसके खिलने-विकसित होने का ही काल आया है। अतः अरे भ्रमर! अभी तो यह एक कली है, इस पर ही तू इतना रीझ रहा है, तो जब यह खिलकर फूल का रूप ले लेगी, तब तुम्हारी कैसी दशा होगी?

अर्थात् नायिका अभी कच्ची उम्र की है, इसमें पूर्ण यौवन नही आया है, शरीराङ्गों का पूरा विकास नहीं हुआ है, तब भी तुम उस पर इतना रीझ रहे हो, तो जब पूर्ण यौवन वाली होगी, तब तुम्हारी कैसी दशा होगी।

विशेष—(i) इसमें बिहारी की समाहार-शक्ति और थोड़े मे बहुत कुछ कह देने की विशेषता व्यक्त हुई है।

(ii) दीपक, विभावना, अन्योक्ति तथा अनुप्रास अलंकार है।

(6) बतरस लालच - - - - - - - - - - जाय।

शब्दार्थ—बतरस=बात रूपी रस। लुकाय=छिपाकर।

व्याख्या—एक सखी अपनी दूसरी सखी से कहती है कि नायिका ने नायक की अथवा चतुर गोपी ने श्रीकृष्ण की मधुर-मधुर बातों के रस के लालच से उनकी मुरली को छिपाकर रख दिया। जब वह उस नायिका से मुरली देने के लिए कहते हैं तो वह कभी न लेने की शपथ खाती है और कभी भौंहें टेढ़ी करके हँस जाती है और मुरली देने के लिए कहने पर स्पष्टतः नट जाती है।

विशेष—(i) नायिका की श्रृंगार-भावना का चित्रण हुआ है।

(ii) रूपक, दीपक तथा अनुप्रास अलंकार है।

(7) पत्रा ही - - - - - - - - - - उजास। (पृ. 82)

शब्दार्थ—पत्रा=पंचाङ्ग। पून्यौ=पूर्णिमा। आनन=मुख।

व्याख्या—किसी नायिका के मुख की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि उस नायिका के घर के चारों ओर तिथियों का ज्ञान पंचाङ्ग से ही हो पाता है; क्योंकि उस नायिका के मुख रूपी पूर्ण चन्द्रमा के उज्जवल प्रकाश के कारण वहाँ पर सदा पूर्णिमा की ही तिथि मालूम पड़ती है। अर्थात् भ्रान्ति होने से अन्य तिथियों की जानकारी के लिए पंचाङ्ग देखना पड़ता है।

विशेष—(i) नायिका के मुख की पूर्ममासी के चन्द्रमा से उपमा दी ग

(ii) अभेदात्मक ऊहा से यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है तथा काव्य
है।

(8) **वियो सुसीस** - - - - - - - - - - - **फेरि**। (पृ. 82)

शब्दार्थ—सुसीस=उसे सिर पर। अएरि=फिर ।

व्याख्या—कवि नीति-सम्मत बात कहता है कि ईश्वर की तरफ
गया जो कुछ मिल जाता है, उसे सहर्ष स्वीकार कर लो और यह अच्छी
समझ लो कि जिससे सुख चाहते हो, उसको फिर कभी स्वयं दुःख मत दो
सुख की कामना करने पर स्वयं को भी दूसरों के साथ वैसा ही आचरण
चाहिए।

विशेष—सकारण कथन से काव्यलिङ्ग अलंकार है।

(9) **बढ़त-बढ़त** - - - - - - - - - - - - - **कुम्हलात**।

शब्दार्थ—सलिल=पानी। पुनि=फिर। बरू=जबकि। समूल=जड़ से।

व्याख्या—कवि कहता है कि सम्पत्ति रूपी जल के निरन्तर बढ़ते
मन रूपी कमल भी बढ़ता रहता है, परन्तु जल के पुनः घट जाने पर तो
रूपी कमल घटता नहीं है अपितु जड़ से मुरझा जाता है। अर्थात् सम्पत्ति के
पर मन उदारता आदि गुणों से विशाल हो जाता है, परन्तु सज्जन व्य
सम्पत्ति कम होने पर तो वह ओछा या कृपण न होकर स्वयं समूल नष्ट हो
है।

विशेष—यमक, रूपक तथा अनुप्रास अलंकार है।

(10) **अति अगाध** - - - - - - - - - **बुझाय**। (पृ. 83)

शब्दार्थ—अगाध=गहरा। ओथरो=उथला। सर=तालाब। बाय=बावड़ी

व्याख्या—कवि कहता है कि नदी, कुआ, तालाब, या बावड़ी इनमें
कोई अत्यन्त गहरा हो या अत्यन्त उथला अर्थात् बहुत कम पानी वा
जिसकी प्यास जिससे बुझती है, वह उसके लिए जल का समुद्र है। आशय
कि जिससे काम निकलता है, वही अन्यों की अपेक्षा श्रेष्ठ है।

विशेष—(i) छोटे-बड़े या गहरे-उथले का चिन्तन नहीं करके क
जाने की उपयोगिता को महत्त्वपूर्ण मानना चाहिए।

(ii) पुनरुक्ति, अनुप्रास तथा यथासंख्य अलंकार है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. **"जा तन की झाँई परे स्याम हरित-दुति होय" इस पंक्ति क
स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर—जिस राधा के शरीर की उज्जवल कान्ति के पड़ते ही श्रीकृ
श्याम कान्ति वर्ण अर्थात् प्रसन्नता से युक्त हो जाती है। गौर वर्ण या रंग के

से श्याम वर्ण अर्थात् काला रंग हरा हो जाता है। यहाँ 'हरित दुति' का आशय हरा होना अर्थात् प्रसन्न होना भी है।

प्रश्न 2. हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के समान क्यों दिखाई देती है?

उत्तर—बाँस की बाँसुरी हरे रंग की है। अधरों का लाल रंग, वस्त्रों का पीला रंग और नेत्रों के श्वेत, अरुण तथा श्याम रंग की चमक उस बाँसुरी पर पड़ती है। इससे वह बाँसुरी इन्द्रधनुष की तरह बहुरंगी लगती है।

प्रश्न 3. बिहारी ने प्रेमी मन की गति को विचित्र क्यों कहा है?

उत्तर—श्याम अर्थात् काले रंग में डूबने पर वस्तु काली हो जाती है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण के प्रेम-रंग में डूबने पर मन को भी स्याम होना चाहिए, परन्तु वह तो और भी उज्जवल तथा पवित्र हो रहा है। इस कारण कवि ने अनुरागी चित्त की गति विचित्र बतलायी है।

प्रश्न 4. बिहारी अपने मन में कृष्ण के किस रूप को बसाना चाहते हैं?

उत्तर—बिहारी अपने मन में श्रीकृष्ण के उस बाल रूप को बसाना चाहते है, जिसमें उन्होंने सिर पर मोर-मुकुट धारण कर रखा है, कमर में काछनी और छाती पर वनमाला शोभायमान है तथा जो रूप मन को अतीव आकर्षित करने वाला है।

प्रश्न 5. नायिका के घर के पास तिथि का पता लगाना कठिन क्यों है?

उत्तर—नायिका का मुख पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान है। उसकी छवि के कारण उसके घर के पास नित्य ही पूर्णिमा तिथि की भ्रान्ति बनी रहती है। इसलिए वहाँ पर वास्तविक तिथि का पता नहीं लगा पाता है और पत्रा से ही इस भ्रान्ति का निवारण होता है।

प्रश्न 6. "अली कली ही सो बन्ध्यो"
इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अली का अर्थ भौंरा तथा मित्र है। भौंरा यदि कली पर ही मँडराता रहे तो उसे वह आनन्द नहीं मिलता है जो कि एक खिले हुए फूल पर बैठने से मिलता है। अन्योक्ति रूप में कली अल्प-वयस्क की नायिका है और भौंरा उस पर आसक्त नायक। यौवन जिसमें नहीं आया है ऐसी नायिका पर आसक्त रहने वाला नायक भविष्य में जवानी चढ़ने पर तो और भी आसक्त रहेगा।

प्रश्न 7. "बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय"
इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—किसी गोपिका या नायिका ने नायक की मीठी-मीठी बातों को सुनने के लोभ में उसकी मुरली छिपा दी। क्योंकि मुरली के न मिलने से नायक वहीं पर रुका रहेगा और तब तक नायिका को उसकी मीठी-मीठी बातों का आनन्द मिलता रहेगा। इसमें नायिका का श्रृंगार-विलास प्रकट हुआ है। वह नायक की बातों का रस लेकर अपनी आसक्ति पूर्ण करना चाहती है।

प्रश्न 8. बिहारी ने सुख-दुःख को समान रूप से सहन करने की ब कही है?

उत्तर—ईश्वर ही सुख प्रदान करता है और वही दुःख देता है। क्षणों में किसी को दुःख या कष्ट नहीं देना चाहिए और विपरीत स्थिति में अत्यधिक अभिलाषा नहीं करनी चाहिए। ये दोनों ईश्वर-प्रदत्त होने से इन्हें रूप से सहन करना चाहिए। वैसे भी सुख-दुःख का क्रम चलता रहता मानकर अतिवाद से बचना चाहिए।

प्रश्न 9. 'बरू समूल कुम्हलाइ'—इस अंश का भाव स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—वह जड़ से मुरझाना अच्छा मानता है अर्थात् सज्जन व्यि सम्पत्ति बढ़ने पर तो उसका मन कमल के फूल के समान खिल जाता है— उदार हो जाता है, परन्तु उसकी सम्पत्ति जब एकदम घट जाती है, त कृपणता दिखाने की अपेक्षा अपने सम्पूर्ण जीवन को ही नष्ट कर देना श्रेष्ठ है। जैसे पानी के घटने पर कमल घटता नहीं है, अपितु वह तो जड़ से जाता है।

प्रश्न 10. "सो ताको सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाय।"
इस पंक्ति के मूल भाव को स्पष्ट करते हुए सन्तोष की महिमा बताइए

उत्तर—व्यक्ति के हृदय में पवित्रता एवं सन्तोष रहे, तो वह कम ल दशा में अथवा वस्तु की अल्प प्राप्ति में भी सुखी रह सकता है। नदी, कुआ, त और बावड़ी में से जो भी प्यास बुझाने के लिए सामने पड़े, वही प्यासे के समुद्र जैसा अत्यधिक जल वाला हो जाता है। इस कारण सन्तोषशील व्यि हालत में प्रसन्न रहने की चेष्टा करता है।

प्रश्न 11. "बिहारी के दोहों में भक्ति, नीति तथा श्रृंगार का अपूर्व स है।" उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।

उत्तर—बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनकी 'स मुख्यतः श्रृंगार रस की रचना है, फिर भी इसमें नीति एवं भक्ति-भावना क समावेश मिलता है।

(1) **भक्ति भावना**—बिहारी ने भक्ति-भाव से पूर्ण अनेक दोहे लिरं बिहारी की भक्ति किसी दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाली नहीं इसमें किसी सम्प्रदाय विशेष का आग्रह भी नहीं है। वे तो राधावल्लभ सम्प्रद आस्था रखने के कारण श्रीकृष्ण की भक्ति के साथ-साथ श्रीराम की भी भक्ति हैं। इसी प्रकार वे निगुर्ण-सगुण का अन्तर न करके सामान्यतः नन्दकिशो अपना आराध्य मानते हैं। यथा—

> सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
> एहि बानिक मो मन बसो, सदा बिहारी लाल॥

(2) **नीति-वर्णन**—बिहारी ने नीति-वर्णन के दोहों में अधिक सफ प्राप्त की है। उनके नीति के दोहों में लोक-व्यवहार का ज्ञान और

अनुभूतियों का सम्मिश्रण दिखाई देता है। उन्होंने सजनों के स्वभाव तथा दुर्जनों की निन्दा के साथ अन्योक्ति रूप में कुछ सामान्य सिद्धान्तों का भी उल्लेख किया है। यथा—

बढ़त-बढ़त सम्पत्ति सलिल, मन-सरोज बढ़ि जात।
घटत-घटत पुनि ना घटे, बरु समूल कुम्हिलात॥

बिहारी के नीति-सम्बन्धी दोहे अतीव मार्मिक हैं, इनमें राजनीति का भी समावेश दिखाई देता है।

(3) **श्रृंगार वर्णन**—बिहारी के दोहों में श्रृंगार के दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण हुआ है। उन्होंने संयोग-वर्णन में नायिका के नख-शिख सौन्दर्य का चमत्कारी वर्णन किया है। वियोग-वर्णन में उन्होंने स्वाभाविकता के साथ नायिकाओं की सभी विरह-व्यथाओं के चित्र उतारे हैं। बिहारी की नायिकाएँ श्रृंगार-विलास में अत्यधिक पटु हैं, उनमें काम-क्रीड़ा, कटाक्ष-निक्षेप, सरस दृष्टि-विलास आदि सभी कुछ है। बिहारी ने विविध प्रकार की नायिकाओं और नायकों के श्रृंगार-चित्रण को उक्ति-चमत्कार, अतिशयोक्ति और ऊहाओं से सजाया है। इस दृष्टि से समस्त रीतिकालीन कवियों में बिहारी बेजोड़ कवि माने जाते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट कहा जा सकता है कि बिहारी के दोहों मे भक्ति नीति और श्रृंगार का अपूर्व समन्वय है।

प्रश्न 12. "राधा नागरी" प्रयोग में नागरी शब्द का सही आशय क्या होगा?

उत्तर—(2) चतुर।

प्रश्न 13. "ज्यों-ज्यों बूड़त स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जवल होय।"
इस पंक्ति में कौन-सा भाव व्यक्त हो रहा है?

उत्तर—(1) परस्पर विरोध का।

4. मैथिलीशरण गुप्त

कविता परिचय—प्रस्तुत संकलन में गुप्तजी की प्रथम कविता 'साकेत' काव्य से ली गई है। इसमें उर्मिला के विरह-वर्णन का चित्रण मार्मिकता के साथ हुआ है। द्वितीय कविता 'यशोधरा' काव्य से संकलित है। जब बुद्धत्व प्राप्त कर सिद्धार्थ वापिस नगर में लौटे, तो उस समय यशोधरा के मन में ऊहापोह हुआ, उसका इस कवितांश में सुन्दर वर्णन हुआ है।

दोनों ओर प्रेम पलता है

(1) **सखि, पतंग** - - - - - - - - - - - - विह्वलता ह। (पृ. 85)

शब्दार्थ—आली=सखी। दहता=जलता है।

व्याख्या—विरह-व्यथा से पीड़ित उर्मिला कहती है कि हे सखी! पतंगा दीपक से प्रेम करके उसकी लौ पर पड़कर जलता है और दीपक स्वयं भी जलता

रहता है। हे सखी, दीपक के जलने में जीवन की सार्थकता है, उसमें निरन्तर रहने अर्थात् कष्टों को सहते हुए भी संघर्षपूर्ण जीवन-यापन करने की उमंग है, परन्तु पतंगे की तो भाग्य की लिपि ही काली है, उसके भाग्य में तो जीवन समाप्त करने का लेख लिखा हुआ है। अतः अदृश्य भाग्य पर किसका चलता है? अर्थात् भाग्य पर किसी का वश नहीं चलता है।

उर्मिला कहती है कि दीपक अपनी शिखा या सिर को हिलाकर प कहता है कि हे बन्धु, तुम व्यर्थ ही स्वयं को क्यों जलाते हो? इस प्रकार तुम ही अपना जीवन क्यों समाप्त करते हो? लेकिन पतंगा तो ऐसा व्याकुल प्रे कि वह अपनी जीवन-लीला ही समाप्त कर देता है।

विशेष—दीपक के जलने में जीवन की लालिमा निहित है, परन्तु प जलने में तो घोर व्याकुलता है। वैसे दीपक और पतंगा दोनों ही जलते हैं। इ प्रेम के कारण विरह-व्यथा दोनों प्रेमी-प्रेमिका को भोगनी पड़ती है। कवि तुकान्तता एवं सरलता द्रष्यव्य है।

(2) **बच कर - - - - - - - - - - - - - - पलता है**। (पृ. 8

शब्दार्थ—प्रणय=प्रेम। जगती=संसार। वणिक्-वृत्ति=स्वार्थी-वृत्ति।

व्याख्या—उर्मिला कहती है कि यदि पतंगा जलकर अपने प्राणो को त्यागे, तो वह जीवित रहकर क्या करे? यदि वह प्रेम करता है तो क्या उसे दे और एकदम कायर बनकर अपने प्राणों की रक्षा करने की चिन्ता करे? क्या जल नहीं सके; तो यों ही तड़पता हुआ अपने प्राण त्याग दे? आशय यह प्रेम का निर्वाह करने के लिए पतंगा अपने आपको दीपक की लौ में समर्पित देता है। वह प्रेम के सामने जीवन को तुच्छ समझता है। यह कितनी विवश अर्थात् व्यक्ति न चाहता हुआ भी विरह-व्यथा भोगता रहता है।

यह संसार वणिक-वृत्ति अर्थात् एकदम स्वार्थी व्यवहार रखती है। केवल स्वार्थ को प्राथमिकता देते हैं, इसलिए यह संसार जिसे चाहता है अ स्वार्थी-वृत्ति जिसके लिए लालायित रहती है, उसे चखती है अर्थात् उ उपभोग करती है। यह काम का महत्व नहीं देखती है, यह तो केवल परिणाम का लाभकारी पक्ष देखती है। संसार की यह स्वार्थी प्रवृत्ति मुझे अ कष्टदायी लगती है। वस्तुतः प्रेम की प्रवृत्ति स्वार्थ पर नहीं चलती है, उसके कष्ट सहने पड़ते हैं, आत्म-सुख का परित्याग करना पड़ता है और फल की देखे बिना समर्पण के लिए तैयार रहना पड़ता है। ऐसा होने पर ही दोनों ओर पलता है, उसका संवर्धन होता रहता है।

विशेष—प्रेमी हृदय की परवशता और संसार की स्वार्थी-वृत्ति पर शब्दों में प्रकाश डाला गया है। प्रेम की उभयनिष्ठा को श्रेष्ठ बतलाया गया है

रे मन आज परीक्षा तेरी

(1) **विनती करती - - - - - - - - - - - - अंधेरी**। (पृ. 86)

शब्दार्थ—निग्रह=वश में रखना। भेरी=नगाड़ा। अन्धेरी=निराशा।

व्याख्या—जब सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त करके नगर में आये, तो सारे लोग स्वागत के लिए उमड़ पड़े और उनके दर्शन करने के लिए जाने लगे। परन्तु यशोधरा सोचने लगी कि जब वे मुझे छोड़कर स्वयं गये थे तो उन्हें ही मेरे पास आना चाहिए। इसलिए वह अपने मन को समझाती है कि हे मन, से विनती करती हूँ कि तुम अधीरता में स्वयं उनके पास मत चले जाना, री बात मत बिगाड़ देना। उन्होंने स्वयं मेरा परित्याग किया था, अतः मेरे मान की रक्षा के लिए तुम दृढ बने रहना। अब तक मैं प्रियतम के दर्शनों के सलिए उत्सुक नहीं थी और इस कारण मेरा मन अपने वश में था कि की समीपता का अभाव था, वे मुझसे बहुत दूर विद्यमान थे। उस स्थिति में सिद्धार्थ के दर्शन करने का कोई लोभ भी नहीं था और इस तरह उनका मने आने से स्वयं लाभ भी नहीं मिल रहा था। अर्थात् कल तक प्रियतम दूर थे, इसलिए विवशता आदि के कारण उनके दर्शन करने तथा उनसे ाने की उत्सुकता नहीं थी। परन्तु अब आज उनके स्वागत के लिए यहाँ गर में नगाड़े बज रहे हैं, जिससे मन को वश में रखना कठिन हो गया है। अरे मन, आज तुम्हारे धैर्य की परीक्षा का अवसर है, तुम्हें धैर्य धारण पड़ेगा।

यशोधरा कहती है कि आज वह प्राण-धन (सिद्धार्थ) मुझ से दो कदम स्थित हैं अर्थात् अत्यधिक निकट उपस्थित हैं, उस प्राण-धन प्रियतम पर ही ह जीवन आश्रित है। परन्तु क्या करूँ, मैं उनके पास जाने के लिए समर्थ । वे मुझे राजप्रासाद में सोती हुई छोड़कर घने अन्धकार में चुपचाप ण कर गये थे, परन्तु आज उनके निर्मोही व्यक्तित्व एवं गृहस्थ-आश्रम से (विरक्त) जीवन को देखकर मैं स्वयं निराशा के अन्धकार से घिरी हुई हूँ। आज मेरे मन के धैर्य की परीक्षा है।

(2) यदि वे चल - - - - - - - - - - - - - - तेरी। (पृ. 86-87)

शब्दार्थ—दरस=दर्शन। परस=स्पर्श। निःश्रेयस=कल्याण। चेरी=दासी।

व्याख्या—यशोधरा अपने मन से कहती है कि जब प्रियतम सिद्धार्थ तपोवन कर स्वयं इतनी दूर इस नगरी में आ गये हैं, तो उन्हें मेरे समीप आने में दो लने पर कितना कष्ट होगा? अर्थात् वे यदि आना चाहें तो यह बहुत कम । उन्होंने स्वयं निष्क्रमण किया था, इसलिए आना भी उन्हें ही चाहिए, मेरे लिये तो उनके पास स्वयं जाना अत्यधिक भारी लग रहा है। जब मेरी उन्होंने ही पहले पीठ फेरी, तो अब उन्हें ही पहले मेरे समीप आना परन्तु मेरे स्वयं जाने से तो स्वाभिमान को ठेस लगेगी। इसलिए हे मन, री परीक्षा की घड़ी है।

यशोधरा कहती है कि आज बुद्धत्व को प्राप्त सिद्धार्थ के दर्शन करने का पाकर सभी नगरवासी अपने-अपने सौभाग्य की सराहना करें और स्वयं मानें, चाहे वे उनके दर्शन, चरण-स्पर्श या शरीर स्पर्श से स्वयं कल्याण के ं, परन्तु मैं उनके पास नहीं जाऊँगी। यदि चाहें तो वे प्रभु बुद्ध स्वयं मेरा

उद्धार करने के लिए मेरे पास आवें, परन्तु मैं उनकी दासी यहीं पर स्थिर र
अर्थात् उनके पास स्वयं नहीं जाऊँगी। इसलिए हे मन, आज तेरे धैर्य की प
है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "दोनों ओर प्रेम पलता है" कविता में कौन पतंगा है और दीपक?

उत्तर—प्रस्तुत कविता पतंगा और दीपक प्रतीक रूप में प्रयुक्त हुए पतंगा तो उर्मिला अथवा उसके समान विरह-व्यथा से पीड़ित नारी है और दी लक्ष्मण, अथवा तदनुरूप नायक है। अर्थात् प्रेमिका पतंगा तथा प्रेमी दीपक है।

प्रश्न 2. कवि ने पतंगे की भाग्य-लिपि को काली क्यों बताया है?

उत्तर—पतंगे को आत्म-त्याग का रास्ता अपनाना पड़ता है। वह र विरह-व्यथा अथवा प्रेमासक्ति का शिकार होता है तथा दीपक की लौ पर मँडरा वह अपने प्राण गँवा देता है। इसलिए कवि ने उसकी भाग्य-लिपि को क बताया है।

प्रश्न 3. पतंगे को परवशता के भाव की अनुभूति क्यों हो रही है?

उत्तर—क्योंकि पतंगा प्रेम की खातिर स्वयं को परवश मानता है बार-बार वह दीपक पर मँडराता रहता है। वह स्वयं को दीपक से दूर नहीं पाता है। यही उसकी परवशता की अनुभूति है।

प्रश्न 4. संसार में वह कौन-सी वाणिक्-वृत्ति है जो उर्मिला को खलती है

उत्तर—संसार की यह वणिक्-वृत्ति अर्थात् स्वार्थी प्रवृत्ति है कि जिसको चाहती है, उसे चख लेती है। अर्थात् संसार त्याग-भावना समर्पणशीलता की अपेक्षा स्वार्थ को अधिक महत्त्व देता है और काम की अपे उसके परिणाम का पहले विचार करता है। यही प्रवृत्ति उर्मिला को खलने लग है।

प्रश्न 5. "क्या भारी वह मुझको जितना?" कथन के प्रकाश में बताइये बुद्ध से मिलने जाना यशोधरा के लिए भारी क्यों हो रहा है?

उत्तर—बुद्ध ने यशोधरा को सोती हुई छोड़कर अर्थात् उससे पूछे बिना कुछ कहे बिना ही चुपचाप घर से निष्क्रमण किया था। इस तरह चले जाने यशोधरा ने अपना अपमान समझा। जब बुद्ध परम ज्ञान प्राप्त करके पुनः नगर लौट आये और लोगों को उपदेश देने लगे, तो यशोधरा अन्य लोगों की त उनके दर्शन करने नहीं गई। क्योंकि उसका मानना था कि मेरी कोई गलती न है, बुद्ध ने ही चुपचाप निष्क्रमण कर गलती की थी, इसलिए मेरे जाने से अ स्वाभिमान को ठेस पहुँचेगी। इसीलिए उसे बुद्ध से मिलने जाना भारी लग र था।

प्रश्न 6. यशोधरा ने अपने आत्म-सम्मान की रक्षा किस प्रकार की?

उत्तर—जब बुद्ध ज्ञान प्राप्त करके लोगों को उपदेश देने हेतु नगर में ल आये, तो सभी लोग उनके दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े। इस समय यशोधरा

के दर्शन करने के लिए अत्यन्त उत्सुक थी, परन्तु वह अपने मन को वश में कर नहीं गई। इस तरह अपने स्थान या निश्चय पर दृढ रहकर उसने म-सम्मान की रक्षा की।

प्रश्न 7. आज का दिन यशोधरा के लिए परीक्षा की घड़ी क्यों बन गया

उत्तर—बुद्ध अपने ज्ञान का उपदेश देने के लिए नगर में आये थे। नारी भाव के कारण यशोधरा का मन अपने प्रियतम के दर्शन के लिए अतीव ावला हो रहा था, परन्तु वह पूर्व घटना का स्मरण कर अपने मन को वश में ने पर लगी हुई थी। पहले निष्क्रमण करते समय बुद्ध ने उससे अनुमति नहीं ली या गृह-त्याग की इच्छा प्रकट नहीं की थी। इससे यशोधरा के आत्म-सम्मान धक्का लगा था। अतः वह आत्म-सम्मान की खातिर बुद्ध के पास स्वयं नहीं ना चाहती थी और स्वयं को अबला नारी नहीं दिखाना चाहती थी। यही सकी परीक्षा की घड़ी थी।

प्रश्न 8. 'दोनों ओर प्रेम पलता है' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'दोनों ओर प्रेम पलता है' कविता गुप्तजी के प्रबन्ध-काव्य 'साकेत' ली गई है। 'साकेत' में उपेक्षिता उर्मिला का विरह-वर्णन गुप्तजी की विशेष देन । उर्मिला यद्यपि यौवन-सम्पन्न तथा नव-विवाहिता है, परन्तु वह अपने पति के र्तव्य-मार्ग में बाधक नहीं बनना चाहती। इसलिए वह वियोगिनी होते हुए भी रव का अनुभव करती है तथा विरह-व्यथा के लिए अपने प्रियतम लक्ष्मण को षी न मानकर प्रेम की उभयत्र स्थिति स्वीकार करती है। उर्मिला का यह न्तव्य है कि प्रेम दोनों ओर से होता है, इसलिए विरहानुभूति भी दोनों को होती । पतंगा और दीपक का दृष्टान्त इसका श्रेष्ठ प्रमाण है। इसलिए उर्मिला को तनी विरह-व्यथा भोगनी पड़ रही है, लगभग वही स्थिति वन में लक्ष्मण की ी हो सकती है, परन्तु लक्ष्मण पुरुष होने से अधिक धैर्यशील बने रहते हैं, जबकि ारी स्वभाव के कारण उर्मिला को विरह अधिक व्यापता है। यही प्रेमासक्ति र्शाना इस कविता का मूल भाव है।

प्रश्न 9. "गुप्तजी के दोनों गीत अत्यन्त सरस और सरल हैं।" इस उक्ति ी सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर—गुप्तजी के प्रथम गीत में उपेक्षिता उर्मिला के जीवन को आधार नाकर नारी के प्रति करुणा और सहानुभूति जागृत की है। द्वितीय गीत में शोधरा की व्यथा भी उपेक्षित होने से अत्यन्त मार्मिक बन जाती है। गुप्तजी के ोनों गीत यद्यपि भावात्मक दृष्टि से अत्यन्त अनुभूतिमय और मार्मिक हैं, परन्तु नमें प्रयुक्त शब्दावली अत्यन्त सरल-सुबोध है और उसमें जरा भी क्लिष्टता नहीं ै। नारी की प्रेमानुभूति, विरह-व्यथा, पुरुष द्वारा उपेक्षा और विवशता आदि का ोनों गीतों में समावेश होने से पर्याप्त सरसता है। इनमें करुण-विप्रलम्भ श्रृंगार स का अच्छा परिपाक दिखाई देता है। नारी हृदय की कोमल अनुभूतियों एवं

स्वाभिमानी भावों की भी इन गीतों में व्यंजना हुई है। अतः इन गीतों के सम्बन्ध में कहा गया उक्त कथन एकदम सार्थक सिद्ध होता है।

प्रश्न 10. 'विह्वलता और परवशता' शब्दों का अर्थ-भेद स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—मन का अत्यधिक व्याकुल या परेशान होना विह्वलता कहलाता है। यह मन की व्याकुल स्थिति का सूचक है। परवशता उसे कहते हैं जिसमें व्यक्ति स्वयं अपने वश में नहीं होता है। वह मन से अथवा शरीर से पराश्रित रहता है।

प्रश्न 11. किस शब्द में 'निः' उपसर्ग अन्य सबसे भिन्न अर्थ का प्रयुक्त हो रहा है?

उत्तर—(1) निग्रह।

प्रश्न 12. "रे मन आज परीक्षा तेरी"
कविता में निःश्रेयस शब्द का प्रासंगिक आशय क्या है?

उत्तर—(2) बिना स्वार्थ के।

5. जयशंकर प्रसाद

कविता परिचय—प्रसादजी की प्रथम कविता 'ओ चिन्ता की पहली रेखा' उनके 'कामायनी' महाकाव्य से ली गई है। इसमें सृष्टि में जल-प्रलय आने के बाद की स्थिति का चित्रण हुआ है। द्वितीय कविता 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' प्रसादजी के प्रसिद्ध नाटक 'चन्द्रगुप्त' से संकलित की गई है। इसमें भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम अतीत के साथ मानवतावादी दृष्टिकोण का समावेश किया गया है।

ओ चिन्ता की पहली रेखा

(1) **ओ चिन्ता - - - - - - - - - - - - रेखा। (पृ. 89)**

शब्दार्थ—व्याली=सर्पिली। चपल=चंचल। खल=टेढ़ी।

व्याख्या—जल-प्रलय के बाद हिमगिरि के शिखर पर स्थित मनु का हृदय अत्यन्त अशान्त एवं चिन्तित रहता है। उसी समय एकाकी मनु सोचने लगता है कि अरी चिन्ता की पहली लकीर, अरी संसार रूपी वन में विचरण करने वाली भयंकर विषैली सर्पिणी तथा ज्वालामुखी के फटने से होने वाले प्रथम विस्फोट के भीषण कम्प की तरह मदमस्त होने वाली तुम्हारे प्रभाव से सारा संसार ग्रस्त है। मेरे मानस में तुम्हारे कारण अत्यधिक हलचल मच रही है।

कवि प्रसाद वर्णन करते हैं कि मनु सोचते हुए कहने लगे—हे अभावों की चंचल बालिका अर्थात् अभाव की स्थिति में मानस में चंचलता से उत्पन्न होने वाली चिन्ता, अरी ललाट की वक्र व कुटिल रेखा ओ जल-माया की चलायमान रेखा जैसी चिन्ता, तेरी निरन्तर अस्थिरता एवं मन उपस्थिति से मेरा अन्तःकरण अशान्त हो रहा है।

(2) इस ग्रह - - - - - - - - - - - सुन्दर पाप।

शब्दार्थ—गरल=विष। जरा=बुढापा। सूत्रधारिणी=उपस्थित करने वाली। ाधि=मानसिक रोग।

व्याख्या—एकाकी मनु सोचने लगता है कि यह चिन्ता तो मेरे मानस को तीव अस्थिर कर रही है। मानो यह इस पृथ्वी ग्रह की आन्तरिक कक्षा में सदा वीन हलचल करने वाली कोई अज्ञात शक्ति है, अथवा यह इस संसार में विष की चल तथा छोटी-सी लहर है जिसके कारण सभी प्राणी बेहोश-से रहते हैं या यह ान्ता इस अमर जीवन के लिए असमय पर आने वाली वृद्धावस्था है और कुछ ी न सुनने वाली कोई बहरी स्त्री जैसी है। अर्थात् इस धरती पर चिन्ता के अनेक रूप हैं।

मनु सोचता है कि अरी चिन्ता, तुम तो मानव के शरीर मे रोगो को नस्थित करने वाली हो, तुम ही इनके लिए मानसिक व्यथाओ का सृजन करने ली है और तुम मधुमय अर्थात् आनन्द से परिपूर्ण एव सुखमय जीवन के लिए भिशाप जैसी हो। तुम इस मानव के हृदय रूपी आकाश मे विचरण करने वाली मगल सूचक धूमकेतु के समान हो। इस तरह तुम इस सृष्टि मे सुन्दर पाप की ह विद्यमान हो। अर्थात् तुम्हारे कारण यह सुन्दर सृष्टि पापमय-सी लगती है।

विशेष—(i) चिन्ता के लिए नये-नये उपमानों और प्रतीकों का प्रयोग किया ाा है।

(ii) भाषा तत्सम-प्रधान एवं भावात्मक है।

(3) मनन करायेगी - - - - - - - - - धन सी। (पृ. 89-90)

शब्दार्थ—लहलहे=हरे-भरे। कटका=बिजली। घन=बादल।

व्याख्या—हिमगिरि के शिखर पर एकाकी चिन्ता-मग्न मनु सोचने लगे कि चिन्ता तो मनुष्य के हृदय को न जाने कितना मथ डालती है। इसके कारण तो य में मनन-चिन्तन का क्रम निरन्तर चलता ही रहता है। निश्चिन्त स्वभाव के क्ति भी इससे उद्विग्न एवं अशान्त रहते हैं और चिन्ता में घुल-घुलकर मर ते हैं। इसलिए मनु कहता है कि अरी चिन्ता, तू कितनी गहरी नीव डाल रही तेरी इस गहरी नींव से अर्थात् गहरी चिन्ताग्रस्तता से तो दीर्घ जीवन पाने ना व्यक्ति भी शीघ्र ही मर जायेगा।

अरी चिन्ता, क्या तू प्राणियों के आनन्द-उल्लास से व्याप्त हरे-भरे खेतों ो हृदयों पर बादलों की बिजली बनकर गिरेगी? अर्थात् बादलों से हरे-भरे ों पर बिजली पड़ने से जो हानि होती है, वैसी ही हानि तुम समस्त प्राणियों के य पर पड़कर करना चाहती हो? जिस तरह गुप्त धन सब तरफ से छिपा या क्षित रहता है, उसका अता-पता औरों को नहीं चलता है, उसी प्रकार तुम ति् चिन्ता भी सभी प्राणियों के अन्तरतम अर्थात हृदय में सदा छिपी रहेगी? ा यह है कि मानव हृदय में चिन्ता-भाव की स्थिति सदा रहती है और वह ा नाना प्रकार का चिन्तन करता रहता है।

विशेष—(i) चिन्ता से ही जीवन क्षीण हो जाता है और इसी से मानव हृदय सदा परेशान रहता है। चिन्ता हृदय में बिजली की तरह कौंधती रहती और हृदय रूपी खेत को हानि पहुँचाती है।

(ii) नवीन उपमान योजना, गेयता एवं भावानुभूति प्रशस्य है।

(4) **बुद्धि, मनीषा** - - - - - - - - - - **भर दे।** (पृ. 90)

शब्दार्थ—मनीषा=बुद्धि। अवसाद=मानसिक दुःख। नीरवता=शान्ति।

व्याख्या—मनु कहने लगा कि अरी चिन्ता, तुम्हारे बुद्धि, मनीषा, म आशा आदि कितने ही नाम हैं। अरी चिन्ता, तू साक्षात् पाप है, इसलिए तू पास से दूर चली जा; अब तेरा यहाँ कुछ भी काम नहीं है। अर्थात् अब मैं चि से आक्रान्त नहीं रहूँगा।

इसलिए मनु कहता है कि अरी विस्मृति, तुम आकर मेरे मन को घेर ताकि मैं चिन्ता को एकदम भूल जाऊँ। अवसाद अर्थात् मानसिक वेदना मेरे को आक्रान्त कर दे। अरी नीरवता, तुम अब मेरे मन की अशान्त स्थिति को शा कर दो और अरी चेतनता, तुम भी मेरे हृदय से चली जाओ तथा मेरे अन्तरतम आज जड़ता से भर दो। अर्थात् अब मैं जरा भी चिन्ता-ग्रस्त नहीं होना चाह हूँ।

विशेष—(i) चिन्ता के विविध नाम उसकी चित्तगत दशा के अनुसार बत गये हैं। मन में विस्मरण, अवसाद, शान्ति, चेतनता एवं जड़ता आदि की स्थिति यह बतलाया गया है कि ये हृदय या बुद्धि तत्व के धर्म हैं। इस कारण इन साथ-साथ मन में चिन्ता भी रहती है।

(ii) भाषा तत्सम-प्रधान, भावपूर्ण एवं पद-योजना गेय है।

(5) **चिन्ता करता** - - - - - - - - - - - - - - **हुए।** (पृ. 90)

शब्दार्थ—अनन्त=आकाश या हृदय। सर्ग=सृष्टि। मीन=मछली।

व्याख्या—एकाकी बैठा मनु सोचने लगता है कि मैं जितनी अधिक चिन् करता हूँ, उतना ही मेरे द्वारा अतीत मे भोगे गये सुख विलीन हो जाते हैं और मे हृदय रूपी आकाश में उतनी ही अधिक दुःख रेखाएँ बनती जाती हैं। आशय य है कि निरन्तर चिन्ता करने से अतीत की सुखानुभूति समाप्त हो जाती है त वर्तमान व भविष्य के लिए अनेक अज्ञात दुःख मँडराने लगते हैं। इसलिए अधि चिन्ता करने से अपना ही अहित हो रहा है।

दुःख की बात है कि जल-प्रलय से सृष्टि का विनाश हो गया। अतः इ बात का चिन्तन कर मनु कहता है कि हे सृष्टि के अग्रदूत! तुम इस सृष्टि क संरक्षण करने में असफल रहे, तुम्हारे ही कारण देव-संस्कृति विलीन हुई है। सृषि के अन्य जीव भी तुम्हारे ही कारण जल-प्रलय में विलीन या नष्ट हो गये। तु चाहे स्वयं को भक्षक समझो या रक्षक, चाहे तुम जो कुछ भी समझो, तुम छोटी मछलियों को निगलने वाली बड़ी मछली की तरह अपनी ही सृष्टि के लि घातक सिद्ध हुए हो।

विशेष—जल-प्रलय के बाद मनु अपने अशान्त मन को स्थिर करने लगा। प्रसंग में कवि ने सृष्टि के विनाश और निर्माण के लिए एक ही तत्व को मूल ण बतलाया है तथा चिन्ता से दुःखों की ही वृद्धि होती है, यह शाश्वत सत्य ारा है।

(6) अरी आँधियो - - - - - - - - - - - - - हविष्य। (पृ. 90-91)

शब्दार्थ—प्रत्यावर्तन=लौटना। महामेघ=महान यज्ञ। हविष्य=हवन सामग्री।

व्याख्या—जल-प्रलय के समय जो भयंकर आँधी-तूफान आया और उससे महाविनाश हुआ, उसी को लक्ष्य करके मनु कहता है कि अरी प्रलयकालीन धियो! तथा ओ बिजली की प्रखर चमक, प्रलय-काल के समय तुम्हारा न-रात नाचना और ताण्डव करना सृष्टिगत नियम रहा है। इस सृष्टि मे हारा यह संस्कार पूर्वतः रहा है, इस कारण तुम अपने पूर्व सस्कारो की उपासना अर्थात् उन्हें अपनाते हुए इस तरह वापिस आकर ससार का सहार कर डालते ।

मनु कहता है कि अरे निराशापूर्ण भविष्य! तू मणि-दीपों के धूमिल काश में अन्धकार से घिरा हुआ-सा लगता है। आशय यह है कि जल-प्रलय के द मनु को अपने भविष्य के प्रति घोर निराशा होने लगती है। इसलिए वह अपने विष्य को निराशापूर्ण कहता है। मनु आगे कहता है कि इस जल-प्रलय रूपी हायज्ञ में, देव-संस्कृति का जो दम्भ था, वह सब कुछ हवन सामग्री की तरह मर्पित हो गया है और अब देव-संस्कृति का कुछ भी अवशेष नही रह पाया है।

विशेष—(i) जल-प्रलय को महायज्ञ और देव-सस्कृति को उसका भविष्य तलाकर भविष्य की उज्जवलता का सकेत किया गया है।

(ii) रूपक एवं प्रतीक योजना प्रशस्य है।

(7) अरे अमाता - - - - - - - - - - - - - अपार। (पृ. 91)

शब्दार्थ—दुर्जेय=मुश्किल से जीतने योग्य। तिरते=पार होते। नद=बड़ी दी। विभव=ऐश्वर्य, सम्पत्ति। नाद=शब्द।

व्याख्या—मनु देव-संस्कृति के प्रतीक को सम्बोधित कर कहता है कि अरे मरता के चमकीले पुतलो! आज जल-प्रलय होने पर तुम्हारे वे पहले तक घोषित होने वाले जय-जयकार के स्वर कहाँ चले गये है? आज तुम्हारे जयनाद की ध्वनि तो साक्षात् नहीं है अर्थात् अब देव-संस्कृति नष्ट हो गई है; इसलिए अब उसकी प्रतिध्वनि मानो दीनता और विषाद बनकर इस सृष्टि में काँप रही है— भयभीत हो रही है। आशय यह है कि जल-प्रलय से पहले देव-संस्कृति का जो दम्भपूर्ण जयघोष था, वह अब एकदम समाप्त हो गया है तथा चारों ओर प्रलय का विनाश दीन-विषाद को प्रकट कर रहा है।

मनु कहता है कि जल-प्रलय से सम्पूर्ण देव-संस्कृति विनष्ट हो गई। उससे पूर्व हम सब अपने सांस्कृतिक वैभव के घमण्ड में मदमस्त थे, परन्तु हम यह

भूल गये थे कि प्रकृति को जीत पाना मुश्किल है, वह दुर्जेय है। वस्तुतः प्रकृति शक्ति से हम अपरिचित थे, हम इतने भोले थे कि सब के सब विलासिता विशाल नदी में अपना जीवन पार लगा रहे थे। अर्थात् देव-संस्कृति में विला व्याप्त थी और सभी उसमें मस्त होकर उसे ही वास्तविक जीवन मानने लगे थे

इसलिए मनु सोचते हुए कहता है कि अत्यधिक विलासिता में मग्न से समग्र देव-संस्कृति डूब गई, उनके अपरिचित ऐश्वर्य एवं विलास के साधन जल-प्रलय में डूब गये और उनसे यह समुद्र व्याप्त हो गया। अब तो जल-प्रलय देव-संस्कृति के सुखों को अपने में समेटकर दुःख रूपी सागर को तरंगित क प्रारम्भ कर दिया है, जिससे उसके उमड़ने-घुमड़ने का घनघोर नाद चारो व्याप्त हो रहा है।

विशेष—(i) देव-संस्कृति के विनाश तथा जल-प्रलय की घटना पर प्रक डालते हुए मनु ने प्रकृति को अपराजेय बतलाया है। इसमें चिन्ता का त्याग दुख-जलधि को पार करने की प्रेरणा दी गई है।

(ii) अनुप्रास, रूपक, काव्यलिंग और उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग तथ तत्सम-प्रधान शब्दावली भावानुरूप है।

अरुण यह मधुमय देश हमारा

(1) अरुण यह - - - - - - - - - - - - - भर तारा। (पृ. 91)

शब्दार्थ—तामरस=स्वर्णिम। सुरधनु=इन्द्रधनुष। अनन्त=आकाश, समुद्र। हेमकुम्भ=सोने का घड़ा, रक्तिम सूर्य। मदिर=नशीले।

व्याख्या—यह स्वर्णिम आभा वाला एवं अमृत के समान आनन्ददायी हमारा देश भारत है। इसकी सीमा पर पहुँचकर अनजान क्षितिज को सहारा मिलता है, अर्थात् धरती और आकाश का मिलन-क्षेत्र यहाँ पर पूर्ण हो जाता है। हमारे देश में स्वर्णिम आभा वाली धरती के गर्भ में सुन्दर-मनोहर वृक्षावली डोल रही है। यहाँ का प्रातःकालीन वातावरण अतीव सुन्दर लगता है। भारत की धरती पर हरे-भरे खेत एवं प्राकृतिक हरियाली लहलहाती है, यहाँ के लोगों का जीवन खुशियों से भरा हुआ है। इस कारण यहाँ सर्वत्र मंगल कुमकुम बिखरा हुआ-सा प्रतीत होता है। प्रातःकालीन सूर्य की कुमकुम तुल्य अरुण किरणें जब पत्तों पर पड़ी हुई ओस कणों पर पड़ती है, तो उससे छोटे-छोटे इन्द्रधनुषों की चमक चारों ओर फैलने लगती है और साथ में मलय पर्वत की शीतल हवा बहती रहती है।

महाकवि प्रसाद कहते हैं कि जिस ओर पक्षी अपना मुँह किये हुए उड़कर आते हैं और जिसे अपना प्यारा घोंसला या आश्रय-स्थल मानते हैं, वह हमारा ही भारत देश है। यहाँ बरसाती आँखों वाले अर्थात् बिजली की चमक वाले बादल करुणा पूर्ण अश्रु रूपी जलधारा बरसाते रहते हैं और समुद्र की लहरें जहाँ पर अन्तिम किनारा पाकर अनन्त से अर्थात् आकाश के अन्तिम छोर से टकराती रहती है, वही हमारा मधुमय देश भारत है। यहाँ प्रातः काल के समय उषा सोने का

घड़ा लेकर (स्वर्णिम आभा वाले सूर्य को लेकर) सारे सुख ढुलकाती है और रात्रि के समय सारे तारे नशे में मस्त होते हुए से निरन्तर ऊँघते रहते हैं, अर्थात् मन्द प्रकाश में चमकते रहते हैं। भाव यह है कि हमारे देश में सूर्योदय का प्राकृतिक वातावरण अतीव सुखकारी लगता है और रात्रि का वातावरण भी मनमोहक रहता है। ऐसी प्राकृतिक शोभा अन्य देशों में नहीं दिखाई देती है।

विशेष—(i) भारतीय परिवेश के प्रति अपनत्व एवं प्रेम के उद्‌गार व्यक्त किये गये हैं। इसमें भारत के गौरव एवं वैभव की अलंकृत एवं छायावादी मधुर झांकी उपस्थित की गई है।

(ii) तत्सम प्रधान शब्दावली, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, लाक्षणिकता तथा प्रभावात्मकता के साथ सरस भावानुभूति प्रशस्य है। यह गीत गेयता गुणों से मण्डित एवं अत्यन्त भावपूर्ण है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द दीजिए।

उत्तर—चपल	—	स्थिर
विषाद	—	हर्ष
अनन्त	—	अन्त
चेतनता	—	अचेतनता
मधुमय	—	विषमय
उषा	—	सन्ध्या

प्रश्न 2. 'महामेघ' शब्द में कौनसा समास है?

उत्तर—(ग) कर्मधारय समास।

प्रश्न 3. चिन्ता के लिए कवि ने जो उपमान जुटाये हैं, उनकी सूची बनाइये।

उत्तर—'चिन्ता' के लिए कवि प्रसाद ने ये उपमान अपनाये हैं—

(1) विश्व-वन की व्याली। (2) ज्वालामुखी-स्फोट की कम्प। (3) अभाव की चपल बालिका। (4) ललाट की खल रेखा। (5) ग्रह-कक्षा की हलचल। (6) बहरी। (7) व्याधि की सूत्रधारिणी। (8) आधि। (9) मधुमय अभिशाप। (10) धूमकेतु। (11) सुन्दर पाप। (12) तरल लघु लहरी।

प्रश्न 4. अचेतन का चेतनीकरण किस पंक्ति में हुआ है?

उत्तर—(ख) अरी विश्व-वन की व्याली।

प्रश्न 5. "देव-दम्भ के महामेघ में, सब कुछ ही बन गया हविष्य।" इस पंक्ति के अर्थ को सरल भाषा में समझाकर लिखिए।

उत्तर—देवताओं को अपनी संस्कृति और वैभव-विलास का दम्भ था, लेकिन जल-प्रलय रूपी महायज्ञ में वे सब हवन की लकड़ी की तरह नष्ट हो गये थे। महायज्ञ में हविष्य की तरह देव-संस्कृति जल प्रलय में विनष्ट हो गई थी।

**प्रश्न 6. "अरी व्याधि की सूत्रधारिणी!
अरी आदि, मधुमय अभिशाप!"
उक्त पंक्तियों का अर्थ बताइए।**

उत्तर—चिन्ता को सम्बोधित कर मनु ने कहा है कि अरी चिन्ता, तु शारीरिक रोगों को उत्पन्न करने वाली सूत्रधारिणी, मानसिक व्यथा देने वाली औ अमृतमय अभिशाप से जीवन को वेदनामय बनाने वाली हो।

**प्रश्न 7. "उड़ते खग जिस ओर मुँह किये, समझ नीड़ निज प्यारा।"
इस पंक्ति के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर—समस्त पक्षी जिसे अपना प्यारा घोंसला समझकर जिसकी ओर अपना मुख करके उड़ते हुए विश्राम करने के लिये आते हैं। इसका प्रतीकार्थ यह है कि सारे संसार के मानवतावादी लोगों के लिये हमारा देश भारत पक्षियों के घोंसले की तरह आश्रय-स्थल है तथा सभी लोग इसमें आश्रय पाने के लिए लालायित रहते हैं। पक्षी शान्ति के प्रतीक माने जाते हैं, अतः विश्व के शान्तिप्रिय लोग भारत को अपना आश्रय मानते हैं।

प्रश्न 8. पठित कविताओं के आधार पर सिद्ध कीजिए कि प्रसाद की कल्पना-शक्ति अत्यन्त उर्वर थी।

उत्तर—श्री जयशंकर प्रसाद न केवल आधुनिक युग के अपितु समस्त हिन्दी साहित्य के बेजोड़ कवि एवं लेखक सिद्ध होते हैं। वे महाकाव्यकार, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार, समालोचक, गीतकार एवं निबन्धकार आदि सभी तरह की प्रतिभा से सम्पन्न हैं। देखा जाय तो यह उनकी उर्वरा कल्पना-शक्ति का ही परिणाम है। प्रसाद छायावादी काव्य-परम्परा के प्रवर्तक और उन्नायक रहे हैं। प्रस्तुत संकलन में दो कविताएँ संकलित हैं। इन दोनों कविताओं में इनकी कवित्व-शक्ति और कल्पनाशीलता का अच्छा समावेश हुआ है। 'कामायनी' से सम्बन्धित कविता में प्रसाद ने निराशा, वेदना, प्रकृति सुषमा, रहस्यात्मकता एवं मानवतावादी विचारधारा व्यक्त की है। इसमें चिन्ता जैसे मनोभाव का विस्तृत वर्णन उनकी कल्पना—शक्ति का परिचायक है। इसी प्रकार 'चन्द्रगुप्त ' नाटक से संकलित गीत में प्रसाद ने छायावादी काव्य—शैली का अच्छा समावेश किया है। इसमें प्रकृति पर मानव—व्यापारों का आरोप किया गया है, साथ ही भारतीयता को गौरवमय गुणगान और इसके उदात्त सांस्कृतिक स्वरूप के लिए अत्यन्त गम्भीर ललित भावाभिव्यक्ति एवं अलंकृत शैली इस लघु गीत की परम विशेषता है। इस तरह कम शब्दों में अधिक गम्भीर भावों की अभिव्यक्ति तथा नवीन शिल्प सौन्दर्य आदि सभी दृष्टि से प्रसाद की काव्य प्रतिभा अनुपम है।

प्रश्न 9. प्रसाद की काव्य भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर—प्रसाद के काव्य का जो शिल्प है, वह समूचे छायावाद की विशेषताओं से युक्त है। प्रसाद की कविताओं में भाषा का सहज प्रवाह तथा शब्द चयन की क्षमता दर्शनीय है। तत्सम शब्दावली एवं समस्त पदों का प्रयोग इनकी

कविताओं में अधिक हुआ है। इनके काव्य की भाषा अत्यन्त प्रोढ और प्रांजल है, उसमें कोमलता, स्निग्धता एवं प्रभावात्मकता है। साथ ही प्रसाद के काव्य में लाक्षणिक, व्यंजनात्मक और चित्रात्मक शब्दों के प्रयोग से भाषा अधिक चमत्कारी और आकर्षक बन गई है। नूतन उपमान चयन, प्रतीक विधान, मूर्त–अमूर्त विधान, विशेषणं –विपर्यय तथा मानवीकरण आदि सभी छायावाद काव्य प्रवृत्तियों की दृष्टि से इन्होंने नपी–सधी भाषा का प्रयोग किया है तथा इसमें भी पात्रों और प्रसंगों का पूरा ध्यान रखा है। इस तरह संक्षेपतः कहा जा सकता है कि प्रसाद की काव्य भाषा छायावादी काव्य-शिल्प के अनुरूप एवं सशक्त भावाभिव्यक्ति से मण्डित है।

6. सुमित्रानन्दन पन्त

कविता परिचय–'नौका विहार' कविता में कविवर पन्त ने सैकत शैया पर दुग्ध-धवल तन्वंगी गंगा का सजीव चित्रण किया है। चांदनी रात मे गगा पर नौका विहार का एक विशेष आनन्द है। काला कांकर के पास बहने वाली गंगा पर यह दृश्य अत्यन्त जीवन्त लगता है। इस कविता में जीवन को भी एक नोका विहार माना गया है।

(1) शान्त स्निग्ध ––––––––––––क्षण भर। (पृ. 94)

शब्दार्थ–ज्योत्स्ना= चॉंदनी। तन्वगी =सुन्दरी। श्रान्त = थकी हुई। कुन्तल= केशराशि। वर्तुल = गोलाकार । सत्वर= शीघ्र । सिकता = रेत राशि। तरणि = नाव। पर= पंख । शुचि = पवित्र । रजत= चौंदी।

व्याख्या–कवि गंगा नदी के प्रवाह का वर्णन करते हुए कहता है कि रात्रि के समय शान्त वातावरण में स्निग्ध और उज्ज्वल चौंदनी विस्तृत आकाश तथा सुनसान धरती पर फैली हुई है। ऐसे शान्त–स्निग्ध वातावरण में ग्रीष्म ऋतु में कम जल वाली गंगा रूपी सुन्दरी दूध के समान धवल रेत राशि रूपी शैया पर लेटी हुई है। वह अत्यधिक थकी हुई, वेदना युक्त तथा निश्चल है। गगा उस समय ऐसी लगती है कि मानो वह तपस्वी की पुत्री हो, निर्मल चन्द्रमा उसका मुख हो और उसकी आभा से गंगा के सुकोमल हाथ प्रकाशित हो रहे हों। लहरें उसको वक्षस्थल पर बिखरने वाले कोमल केश हैं और उसके गोरे शरीर पर नीला आकाश रूपी पतला–झीना तथा लहराता हुआ चंचल अर्थात् हिलने-डुलने वाला वस्त्र-सा पहना हुआ है। उसकी साड़ी पर लहरों के रूप में मानो सिकुड़न आ गई है, जिस पर चन्द्रमा की सुन्दर-सुकोमल चौंदनी की छटा बिखर रही है और गोलाकार रूप में उसकी लहरें मानों स्वयं सिमटी हुई–अपने अंगों को सहेज कर रखती हुई-सी प्रतीत होती हैं।

कवि पन्त कहते हैं कि रात्रि का प्रथम प्रहर था, चौंदनी बिखरी हुई थी। हम नाव पर सवार होकर शीघ्र ही गंगा की धारा में सैर के लिए चल पड़े। वह नाव श्वेत रेतराशि रूपी चमकती हुई सीपी पर मोती की चमक रूपी जलधारा के

रूप में विचर रही थी। जलधारा में आगे बढ़ने पर नाव की पालें चढा दी थीं औ उसका लंगर खोल दिया था। तब वह छोटी-सी नाव अत्यन्त मन्द-मन्द औ अत्यन्त धीमी गती से हंसिनी की तरह गंगा की धारा मे तैरने लगी। उस समय उसने अपने पंख जैसे पाल खोल लिये थे और वह निरन्तर विचरण कर रही थी गंगा का शान्त जल-प्रवाह पवित्र तथा निर्मल दर्पण की तरह लग रहा था औ उस पर रेतराशि वाले तट के प्रतिबिम्ब उभर रहे थे, जो कि ऐसे लग रहे थे कि मानो वे तट क्षण भर दुगुने ऊँचे हो गये हों।

(2) काला कांकर ----------------प्रदीप। (पृ. 94-95)

शब्दार्थ—प्रमन = शान्त मन से। विस्फारित =फैले हुए। तारक= तारे। अन्तस्तल = हृदय,भीतरी भाग। अविरल = निरन्तर या अत्यधिक । कचों = बालों। तिर्यक = तिरछा। चपला = बिजली । कगार = तट। अराल = तिरछी। उर्मिल = तरंगों वाला।

व्याख्या—कवि पन्त काला कांकर के प्राकृतिक वातावरण की ओर संकेत करते हुए वर्णन करतें हैं कि काला कांकर का राजमहल रात्रि में गंगा के जल में इस तरह प्रतिबिम्बित हो रहा था कि मानो वह शान्त मन से सो रहा हो। उसके पलकों में ऐश्वर्य के अनेक स्वप्न उठ रहे थे। उस समय नाव हिलोर लेकर आगे बढ़ रही थी, उससे जल-प्रवाह तरंगित हो रहा था और नदी की धारा में प्रतिबिम्बित अकाश के ओर-छोर भी हिलने लग गये थे। आकाश में तारे चमक रहे थे, मानो वे अपनी निश्चल आँखों को फैलाकर कुछ खोज रहे थे और इसके लिए वे गंगा की जल धारा के भीतरी भाग को अपनी चमक से प्रकाशित कर रहे थे। जल-धारा में तारों के प्रतिबिम्ब छोटे चंचल दीपकों के समान प्रतीत हो रहे थे तथा उन्हें निरन्तर अपने आंचल की ओट में लिये हुए लहरें लुक-छिप कर हर क्षण इधर-उधर फिर रही थीं। सामने की तरह शुक्रग्रह से उतरती हुई-सी और चमचमाती हुई-सी परी चंचल जल में उतर रही थी और वह गंगा की सुन्दर काली लहर रूपी केशराशि में ओझल हो रही थी।

गंगा की धारा में दशमी के चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब ऐसा लगा था कि मानो वह मुग्धा नायिका का रूप दिखलाता हुआ और घूँघट में अपना मुख कुछ तिरछा करता हुआ रुक-रुक कर आ रहा हो। अब तो बिजली भी गंगा की जल-धारा के मध्य पहुँच गई थी और चाँदनी वाला किनारा भी छिप गया था। गंगा की धारा के दोनो तट काफी दूरी पर थे, लेकिन एक जगह पर धारा पतली थी, इस कारण उसके समीप आये हुए दोनों तट मानो परस्पर आलिंगन करने के लिए उद्यत भुजाओं की तरह लग रहे थे। उस जल-धारा से काफी दूरी पर क्षितिज पर वृक्षों की पंक्ति दिखाई दे रही थी, जो धरती की तिरछी विभाजक रेखा-सी लग रही थी। आकाश अपनी नीली और विशाल आंखों से एकटक होकर इस दृश्य को देख रहा था। गंगा की जलधारा के समीप ही एक द्वीप इस प्रकार स्थित था जैसे कि कोई बालक माता की छाती पर सोया हुआ हो। वह द्वीप गंगा के तरंगों वाले प्रवाह को कुछ विपरीत गति वाला या तेज गति वाला कर रहा था।

(3) **वह कौन - - - ·· - - - - - - - - - नौका विहार (पृ. 95)**

शब्दार्थ—कोक = चकवा। कोकी = चकवी। प्रतनु= अत्यल्प। मुक्ता = ती। फेनिल = झाग वाला। सरिता = गंगा नदी। सहोत्साह = उत्साह के साथ। = तारे।

व्याख्या—कवि कहता है कि रात्रि के समय यह कौन पक्षी विचरण कर है ? क्या यह अत्यन्त व्याकुलता से अपने विरह-शोक को दूर करने के लिए वा उड़ रहा है? इसने रात्रि की काली छाया को ही अपनी प्रिया चकवी मान या है और इस कारण उड़ता हुआ छाया के पीछे जा रहा है। तत्पश्चात् वार को घुमाकर अत्यल्प भार वाली वह नाव जल-प्रवाह की विपरीत दिशा मे ी। उस समय नाव डांडों के रूप में अपनी अस्थिर हथेलियों को फैलाकर उनसे तियों के दानों के समान फेन की राशि को फैला रही थी, अर्थात् हाथों से उठा बिखेर रही थी। वह पानी में उस भाग को चमचमाते हुए हार की तरह ेर रही थी। इससे ऐसा लग रहा था कि जल-धारा में सफेद-सफेद चाँदी से ाये गये सांपों की रेलपेल हो रही हो और प्रवाहमान धारा मे किरण रूपी परियाँ नाच रही हो तथा वे सरल रेखाओं की तरह लम्बी लकीर बनकर तैर हों। जलधारा की लहरें रूपी लताओं में सैकड़ों प्रतिबिम्बित चन्द्रमा और ड़ों तारे झिलमिल कर रहे थे और जल राशि में झाग के रूप में फूल बिखर थे। इसके पश्चात् गंगा का जलप्रवाह कुछ उथला आ गया, तो कवि कहता है हम नौका को उत्साह के साथ घाट की ओर ले आये और डण्डे से उसको एक ाह रोकने का प्रयास करने लगे।

अन्त में कवि पन्त नौका विहार के द्वारा जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालते कहते हैं कि इस तरह ज्यों-ज्यों नाव तट पर आकर रुकने लगती है, वैसे-वैसे मन में अनेक विचार उठने लगते हैं। उस समय मैं सोचने लगा कि गगा की ा के समान ही इस जगत का क्रम भी शाश्वत चलता रहता है, जल-प्रवाह के ान जीवन का उद्गम भी शाश्वत है तो इसकी गतिशीलता और मिलन भी श्वत है। आकाश में नीलेपन की आभा भी शाश्वत रहती है और चन्द्रमा का ी की तरह शुभ्र चाँदनी रूपी हास भी सदा फैलता रहता है। इसी प्रकार गंगा छोटी-छोटी लहरों का विकास भी सदा होता रहता है अर्थात इस सृष्टि में त्ति, विकास, गति एवं अन्त में विनाश का क्रम सदा चलता रहा है। इसलिए परमात्मा को सम्बोधित कर कहता है कि हे सांसारिक जीवन के कर्णधार! सृष्टि में चिर काल से चले आ रहे जन्म-मरण के क्रम के मध्य में प्राणियो की न रूपी नौका का विहार सदा होता रहे। अर्थात् परमात्मा रूपी नाविक ारी जीवन रूपी नौका को ठीक तरह से चलाता हुआ इसे उचित स्थान तक ाने का कार्य करता रहे, यही हमारी अन्तिम प्रार्थना है।

विशेष—(i) छायावादी शैली के अनुसार सम्पूर्ण प्रकृति पर मानव-व्यापारों आरोप किया गया है। इस वर्णन में लाक्षणिकता, चित्रात्मकंता, वक्रता एवं ति का मूर्त विधान आदि सभी छायावदी काव्य-प्रवृत्तियाँ मिल जाती हैं।

(ii) रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, काव्यलिंग और मानवीकरण का प्रयोग द्रष्टव्य है। भाषा तत्सम-प्रधान, प्रौढ़-प्राञ्जल एवं प्रवाहपूर्ण है। गेयता एवं मुक्त छन्द की तुकान्त दर्शनीय है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. उन पंक्तियों का शुद्यान्तर कीजिए जिनमें गंगा का रूपक तापस बाला से बाँध दिया गया है?

उत्तर—"तापस बाला गंगा, निर्मल, राशि-मुख से दीपित मृदु करतल, लहरें उर पर कोमल कुन्तल।

गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार तरल सन्दर,

चंचल अंचल-सा नीलाम्बर।"

इन पंक्तियों में गंगा को तापस बाला बताकर उसके मुख, करतल अंग-प्रत्यंग तथा परिधान आदि का बिम्बात्मक-चित्रात्मक वर्णन किया है।

प्रश्न 2. "निश्चल जल के शुचि दर्पण पर, बिम्बित हो रजत पुलिन निर्भर, दुहरे ऊँचे लगते क्षण भर!" इन पंक्तियों में (1) जल की उपमा किससे दी गई है? क्यों?

(2) दुहरे ऊँचे लगने वाले कौन हो सकते हैं। दुहरे ऊँचे क्यों कहा गया होगा?

उत्तर—(1) जल की उपमा स्वच्छ दर्पण से की गई है क्योंकि जल में दर्पण की तरह रेतीला तट प्रतिबिम्बित हो रहा था।

(2) ये दुहरे ऊँचे लगने वाले नदी के रेतीले तट थे, क्योंकि पानी उनके प्रतिबिम्ब कुछ अधिक लम्बे आकार के थे, इसलिए वे दुगुने ऊँचे लग रहे थे। इसी कारण कवि ने ऐसी कल्पना की है।

प्रश्न 3. नौका से उठती जल हिलोरों से नभ कैसे हिल उठता है?

उत्तर—गंगा के जलप्रवाह में नभ का प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। अतः जब नाव चलने लगी, तो जल भी हिलने लगा, उसमें छोटी तरंगें उठने लगी। इससे जल में आकाश का प्रतिबिंम्ब भी हिलने लग गया। इसे ही कवि ने नभ का हिलना बताया है।

प्रश्न 4. "लहरों को टिमटिमाते दीप आंचल में छिपाए" बताकर कवि ने किस प्रकार का बिम्ब उभारा है?

उत्तर—आकाश में चमकते हुए तारों के प्रतिबिम्ब जलधारा में पड़ने पर छोटे-छोटे टिमटिमाते हुए दीपक लग रहे थे। जल-धारा में छोटी-छोटी चलायमान तरंगें उन्हें हिला रही थीं। इससे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लहरें अपने नीले आँचल में टिमटिमाते दीपकों को छिपा रही थी, ताकि वे हवा से बुझे नहीं।

प्रश्न 5. 'शुक्र' तो पुल्लिंग का प्रयोग है, तब कवि ने उसकी उपमा 'परी' से कस आधार पर दी होगी?

उत्तर—कवि ने यह उपमा इस आधार पर दी कि जल के अन्दर आकाश तारों के जो बिम्ब उभर रहे थे, वे सुन्दर चलायमान लहरों में कभी-कभी मिल पड़ जाते थे। इस कारण शुक्र तारे का बिम्ब भी परी की तरह अस्पष्ट ाकृति का लग रहा था। इसी अस्पष्ट प्रतिबिम्ब के कारण कवि ने इस तरह का र्णन किया है।

प्रश्न 6. "चाँदनी का कगार" किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? उसके लिए विता में अन्य प्रयोग कौन-सा हुआ है?

उत्तर—उठती हुई एवं चमकने वाली जल-लहरों को 'चाँदनी का कगार' हा गया है। इसके लिए कविता में 'चाँदी के साँपों की रलमल' तथा 'लहर तिकाओं में खिल' आदि कई अन्य प्रयोग हुए हैं।

प्रश्न 7. "इस धारा-सा ही जग का क्रम"—इस रूपक की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—जिस प्रकार जल-धारा निरन्तर बहती रहती है, उसी प्रकार यह ीवन रूपी धारा भी निरन्तर गतिशील रहती है। गंगा की धारा का उद्गम, वाह और संगम जिस प्रकार होता है, उसी प्रकार जीवन की उत्पत्ति, गति और रम तत्व में मिलन होता रहता है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित का प्रासंगिक आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(1) **नीरव भूतल**—रात्रि के समय धरती का वातावरण एकदम ान्त एवं शब्द-रहित था।

(2) **हंसिनी-सी सुन्दर**—जैसे हंसिनी जल-प्रवाह में धीरे-धीरे चलती रहती है, उसी प्रकार वह छोटी-सी सुन्दर नाव जलधारा में मन्द गति से तैर रही थी।

(3) **चपला**—चंचल स्वभाव की, इसका अर्थ बिजली होता है, परन्तु यहाँ लाक्षणिक अर्थ चंचल चमकती हुई लहरे हैं।

(4) **डांडों के चल करतल**—जैसे कोई हथेली भर कर मोती के दानों को फैलाता है, उसी प्रकार नाव भी अपनी पतवार रूपी दोनों हथेलियों से फेन राशि को चारों ओर फैला रही थी।

प्रश्न 9. भाषिक पर्याय लिखिए।

उत्तर—रजत हास—चांदी की तरह शुभ्र हास। कर्णधार—प्रमुख नियन्त्रक। महोत्साह—उत्साहयुक्त। उडु फेनिल—तारे रूपी झाग। स्फार—चौड़ा, विस्तृत फैलाना। प्रतनु भार—अत्यल्प भार। दूरस्थ—दूर स्थित। कृश—दुर्बल, क्षीण। तिर्यक—तिरछा, वक्र।

प्रश्न 10. "साड़ी की सिकुड़न सी"

इसमें साड़ी शब्द किसका चित्र व्यक्त कर रहा है?

उत्तर—(1) गंगा की लहरों का।

प्रश्न 11. 'कर्णधार' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर–(3) नाविक।

7. महादेवी वर्मा

कविता परिचय–'मैं नीर भरी दुःख की बदली' शीर्षक की कविता में महादेवी वर्मा ने अपनी करुणा एवं वेदना की अनुभूति को व्यापक रूप देकर यह भाव प्रकट किया है कि निजी स्वार्थों की उपेक्षा कर व्यक्ति को लोकहित के लिए अपनी अस्मिता का समर्पण कर देना चाहिए। दूसरी कविता 'वह कौन है' में अज्ञात प्रेमी अर्थात् परमात्मा के प्रति विविध भावों का चिन्तन किया गया है।

मैं नीर भरी दुःख की बदली

(1) स्पन्दन में - - - - - - - - - - - - बन निकली। (पृ. 98)

शब्दार्थ–स्पन्दन=धड़कना। दुकुल=रेशमी वस्त्र। अविरल=निरन्तर।

व्याख्या–महादेवी वर्मा अपने जीवन को लक्ष्य करके कहती हैं कि मैं पानी से भरी हुई छोटी-सी बदली (बादल का टुकड़ा) हूँ, जिसके थोड़े से धड़कन मात्र में संसार का सनातन निस्पन्द अर्थात् स्थिरतः बसी हुई है और जिसके करुण-क्रन्दन में सारे पीड़ित विश्व का उपहास भरा हुआ है। इस तरह अतीव मानवीय करुणा से मेरी आँखों में वेदना के दीपक जलते रहते हैं और मेरी पलकों से अश्रुधारा छोटी नदी की तरह निरन्तर बहती रहती है।

कवयित्री कहती है कि मेरे जीवन का पग-पग संगीत से भरा हुआ है, अर्थात् मेरा भविष्य खुशहाल है। मेरी श्वास-प्रश्वास में मधुर स्वप्नों की सुवास भरी हुई है। मेरे मनोभाव तो आकाश के विशाल क्षेत्र में रेशमी वस्त्र बुनते रहते हैं, अर्थात् बादली के नीचे आकाश में इन्द्रधनुषों की छटा बिखरती रहती है और मेरी छाया में मलयाचल की सुगन्धित हवा बहती रहती है।

मैं ऐसी बदली हूँ जो क्षितिज रूपी भौंहों पर बरसने के लिए धूमिल होकर घिर आयी हूँ और निरन्तर धरती पर जल-कण बरसाने की चिन्ता लेकर उमड़-घुमड़ रही हूँ। मैं रेत के कणों पर जल-कण के रूप में बरसी और धरती से नवीन जीवन रूपी अंकुर में उग आयी हूँ अर्थात् जनहित के लिए मैं अपना जीवन समर्पित करने वाली बादली हूँ, जिससे धरती पर नव-जीवन का संचार होता है।

(2) पथ को न - - - - - - - - - - - - आज चली। (पृ. 98-99)

शब्दार्थ–आगमन=आना। सुख की सिहरन=सुख की अनुभूति।

व्याख्या–महादेवी वर्मा स्वयं को नीर भरी दुःख की बदली मानती हुई कहती हैं कि न तो मुझे जीवन-पथ को मलिन करना आता है और न ही अपने पद-चिन्ह अंकित करते जाना जाता है अर्थात् मैं अपने निजी स्वार्थों को लेकर जीवन-पथ पर नहीं चलती हूँ, मैं तो इस संसार में अपने आगमन की सुधि लेकर चली आती हूँ और अन्ततः सभी के लिए सुख की अनुभूति प्रदान करती हूँ।

स्वयं को दुःख की बदली बतलाती हुई कवयित्री कहती है कि इस विशाल नभ में मेरा अपना कोई निश्चित स्थान या स्वार्थ नहीं है और कभी अपना

भी नहीं सकता है। मेरी अस्मिता का मात्र इतना ही परिचय है ... वन का इतना ही इतिहास है कि कल में उमड़ कर आकाश में छा गई थी ... ज लोक-हित के लिए अपने अस्तित्व को करुणापूर्ण जलवर्षण से मिटा चुकी है।

विशेष—करुणा-भावना की सशक्त अनुभूति, प्रकृति से अभेदात्मक सम्बन्ध र संगीतानुकूल गेयता इस कविता की परम विशेषता है। कोमल-सरल दावली, हृदयगत भावों की कोमल अभिव्यक्ति एवं टेक की विविधता से यह त प्रशस्य है।

वह कौन है?

(1) कुसुम-दल से -- - - - - - - - - - - - कौन है? (पृ. 99)

शब्दार्थ—अनिल=हवा। नैश=रात्रि का। सघन=गहरी। तड़ित=बिजली।

व्याख्या—कवयित्री परमात्मा रूपी अज्ञात-अस्पष्ट प्रेमी की ओर संकेत रती हुई कहती है कि जब मैं अपनी वेदना के दाग को सुकोमल पुष्पों के पत्तों के दृश मनोभावों से पोंछना चाहती हूँ और अपनी अश्रुधाराओं को भी जब आशा नी रश्मियों से पोंछती हूँ, जब मैं तेज हवा के चलने से सहसा चौंक जाती हूँ र मुझे आकाश के छोटे-छोटे आश्चर्यचकित से जान पड़ते हैं, तब न जाने वह न है जो कि मुझे पर्दे के उस पार से अर्थात् अज्ञात स्थान से बुलाने लगता है। सका बुलाना दूर से सुनाई देने वाले संगीत की तरह यद्यपि अस्पष्ट होता है, र भी उसमें मनोरम आकर्षण एवं प्रेमानुभूति रहती है।

कवयित्री कहती है कि जब सूने विस्तृत नभोमण्डल पर रात्रि के धकार में दुख के भार के समान घनघोर काली घटा छा जाती है, अर्थात् रात्रि घनघोर अन्धेरा सारे आकाश में व्याप्त हो जाता है और जुगनुओं की पंक्ति का नकना भी एकदम बन्द हो जाता है और एकाकी वेदना से पीड़ित जब मेरी खों में आँसुओं की धारा हार की तरह चमकने लगती है, तब अपनी अज्ञात नक से—अज्ञात प्रेम से अचानक ही बिजली की चमक (मुस्कान) के रूप में मेरे ों को न जाने कौन मूँद लेता है। अर्थात् वह अज्ञात प्रेमी अपना प्रेम-सन्देश नकर मुझे आश्वासन देता रहता है, परन्तु वह वास्तविक रूप में कौन है, यह नहीं कहा जा सकता।

विशेष—यहाँ परमात्मा को अज्ञात प्रेमी बतलाकर रहस्यवादी भावना का चय दिया गया है। शब्दावली प्रतीकात्मक एवं लाक्षणिक है और भावानुभूति ज्ञासा-भाव पर आधारित है।

(2) अवनि अम्बर - - - - - - - - - कौन है? (पृ. 99-100)

शब्दार्थ—अवनि=धरती। अम्बर=आकाश। जलधि=समुद्र। पारावार=समुद्र। क-धारा=स्वर्णिम वर्षा। यवनिका=पर्दा।

व्याख्या—कवयित्री कहती है कि जब धरती और आकाश रूपी सुन्दर एवं णीय सीप में समुद्र रूपी तरल मोती काँपता है, अर्थात् क्षितिज के मध्य में समुद्र

की तरंगें उठती रहती हैं और बर्फ के पुंज की तरह श्वेत तथा काले-चि
बादल जब चाँदनी रूपी चाँदी के समुद्र में तैरते रहते हैं तब मुझे सुगन्ध बन
नींद के उच्छ्वास की तरह न जाने कौन मधुर थपकियाँ देता रहता है। अथ
वह अज्ञात प्रेमी अपने मधुर भावों की अभिव्यक्ति विविध प्राकृतिक उपादानों
करता है, परन्तु स्वयं अस्पष्ट-अज्ञात रहता है। उसका रहस्य हमें मालूम नहीं है

जब सारी रात विरह-व्यथा से कट जाती है और प्रातःकाल रूपी बाल
के कोमल कपोल रूपी गुलाब पर पड़े ओस के छोटे-छोटे कण सूखने से लगते
और जब प्रातःकाल की सूर्य की स्वर्णिम-अरुणिम किरणों की स्वर्णमयी जलधारा
नहाकर पेड़-पौधों पर उगे हुए मुकुल (कुड्मल) मोतियों की तरह चमकने ल
हैं, तब मेरे स्वप्नों के प्रकोष्ठ में अज्ञानता का पर्दा डालकर जो मेरी आँखों
खोलता है, अर्थात् प्रातःकाल के समय नींद से जगाकर मुझे सचेतन बनाता है,
कौन है?

विशेष—(i) कवयित्री ने स्पष्ट बतलाया है कि प्रकृति के विविध उपाद
से उस प्रेमी की स्थिति का संकेत तो मिलता है, परन्तु वह सारा काम पर्दे के पी
रहकर करता है, इस कारण वह परमात्मा रूपी प्रेमी मेरे लिए अज्ञात है।

(ii) रहस्यात्मकता, लाक्षणिकता, विशेषण-विपर्यय, वचन-वक्रता ए
ध्वन्यात्मकता के साथ चित्रात्मकता का समावेश हुआ है। छायावादी काव्य-शै
इसमें द्रष्टव्य है। भाषा सरल एवं भावानुरूप है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'तड़ित' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर—विद्युत, चपला, सौदामिनी।

प्रश्न 2. "तैरते घन मृदुल हिम के पुंज से" पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

उत्तर—(क) उपमा।

प्रश्न 3. 'सूखते नक्षत्र जल के बिन्दु से' पंक्ति में नक्षत्र-जल से क्या अभिप्राय है?

उत्तर—नक्षत्र-जल से अभिप्राय 'ओस के कणों' से है।

प्रश्न 4. क्षितिज और भृकुटि में क्या समानता है?

उत्तर—धरती से कुछ ऊपर उठे हुए भौगोलिक स्थान को क्षितिज कह
है, यह दूर से वक्राकार तथा धूल से धूमिल-सा दिखाई देता है। धरती औ
आकाश का मिलन-बिन्दु क्षितिज कहलाता है। भृकुटि नेत्रों के ऊपर रहती है, उ
कुछ टेढ़ी होती है तथा इस पर उगे हुए बालों के कारण यह कुछ काली भी हो
है। इस तरह वक्रता और धूमिल आकृति के कार इन दोनों में समानता है।

प्रश्न 5. "अवनि अम्बर की रुपहली सीप में
यहाँ सीप को 'रुपहली' क्यों कहा गया है?

उत्तर—धरती और आकाश के मध्य सृष्टि की सम्पूर्ण मनोरम प्राकृतिक
मा विद्यमान रहती है। सृष्टि की रमणीय छटा इन दोनों के मध्य में परिवर्तित
ती रहती है। इसलिए धरती और आकाश रूपी सीप के मध्य भाग को रुपहली
ति् सौन्दर्यमयी कहा गया है।

प्रश्न 6. "तब बुला जाता मुझे <u>उस पार</u> जो।"
पंक्ति के रेखांकित (स्थूलाक्षर) अंश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'उस पार' का अर्थ है, सृष्टि रूपी पर्दे के पीछे। परमात्मा की
ात एवं अस्पष्ट स्थिति या सत्ता को कवयित्री ने 'उस पार' कहकर संकेतित
या है।

प्रश्न 7. "मैं नीर भरी दुख की बदली" कविता के मूल भाव को समझाकर
िए।

उत्तर—प्रस्तुत कविता में महादेवी वर्मा ने अपने करुणापूर्ण भावों का
ुभूतिमय चित्रण किया है। कवयित्री अपने जीवन को ऐसी बदली अर्थात्
टा-सा बादल मानती है, जिसका जीवन व्यथा-वेदना से परिपूर्ण है, जो सदा
ुधारा बहाती है, लेकिन वह बदली उमड़-उमड़ कर लोक-हित के लिए जल
वर्षा करना नहीं भूलती है। इस संसार में लोग प्रायः स्वार्थ को लेकर चलते हैं
र पहले अपने दुःखों का निवारण करने की चेष्टा करते हैं, परन्तु कवयित्री ने
गीत में यह भाव व्यक्त किया है कि निजी स्वार्थों की उपेक्षा करके व्यापक
क-हित में अपनी अस्मिता का समर्पण करना ही मानवता है। छोटी-सी बदली
न-वर्षण करके यही कहती है, भले ही उसका अस्तित्व मिट जाता है, उसका
समर्पण के लिए इतिहास में नाम नहीं आता है, परन्तु लोकहित के समर्पित
ना चाहती है। इस तरह प्रस्तुत गीत का मूल भाव मानवीय करुणा पर
धारित है, जिसे कवयित्री ने मार्मिकता से व्यक्त किया है।

प्रश्न 8. "कुसुम-दल से वेदना के दाग को" कविता में छायावाद की कौनसी
त्ति विशेष रूप से लक्षित होती है?

उत्तर—इस कविता में छायावाद की प्रमुख प्रवृत्ति रहस्यात्मकता लक्षित
ती है। इस कविता में महादेवी ने अज्ञात प्रियतम अर्थात् परमात्मा के प्रति स्नेह
ट कर अपनी जिज्ञासा प्रकट की है। इसमें रहस्यवाद उनके आत्मनिवेदन के
में प्रकट हुआ है। यह छायावादी काव्य-शैली की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। इसी
रण छायावादी कवियों पर जीवन में पलायन करने का आरोप भी लगाया गया
परन्तु इस प्रवृत्ति से विरहिणी आत्मा की रसानुभूति मर्मस्पर्शी रूप में दिखाई
ी है।

प्रश्न 9. "परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।"
बदली का यह आत्म-कथ्य क्या मनुष्य-मात्र के लिए भी सही है?

उत्तर—मानवतावादी दृष्टिकोण और लोक-हित के सर्वोपरि चिन्तन के
ए यह आत्म-कथ्य सभी मानवों के लिए सही और आचरण करने योग्य है।

केवल स्वार्थी लोग बदली के इस आत्म-कथ्य का पालन नहीं करते हैं। करुणा-विहीन, मानवीय चेतना से रहित एवं लोक-हित से विमुख होते हैं।

प्रश्न 10. "मैं नीर भरी दुख की बदली"

इस कविता के मूल भाव को प्रकट नहीं करने वाली पंक्ति कौनसी है?

उत्तर—(3) सुख की सिहरन हो अन्तखिली।

8. रामधारीसिंह 'दिनकर'

कविता परिचय—"समर शेष है" कविता दिनकरजी की ओजस्वी रचना इसमें स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी ग्रामों की दशा में सुधार न होने से, साम जन-समस्याओं का निराकरण न होने से कवि ने अपना आक्रोश प्रकट किया और देश में स्वराज्य को सही रूप में लाने का आह्वान किया है।

(1) ढीला करो - - - - - - - - - - **हिन्दुस्तान। (पृ. 102)**

शब्दार्थ—तरकस=बाण रखने का तूणीर। वह्नि=आग। समर=युद्ध।

व्याख्या—कवि आक्रोश के स्वर में कहता है कि किसने कहा कि तुम धनुष की डोरी (प्रत्यन्चा) ढीली कर दो और तरकस की रस्सियाँ भी खोल दो किसने कहा कि युद्ध की बेला चली गई है और शान्ति से बोलने का समय गया है? यह किसने कहा कि हृदय को अग्नि बाणों से मत बेधो और कि तुमसे कहा है कि अब युद्ध समाप्त हो गया है और हँसी-खुशी की अभिव्यक्ति लिए इस भारत भूमि को फूलों से सजा दो और कुंकुम तथा केसर से देशवासि का शान्तिपूर्ण स्वागत करो? अर्थात् हमारे देश में अभी यह स्थिति नहीं आयी इस कारण मैं किस पर कुंकुम का लेप करूँ और किसको अपना सुमधुर स्वा गीत सुनाऊँ? क्योंकि अभी पूरा स्वराज्य नहीं आया है, अभी तो हमारी आँखों आगे अर्थात् प्रत्यक्ष रूप में भारत भूखा तड़प रहा है। आशय यह है कि भारत अधिकतर जनता अत्यन्त गरीब है, उनका परिपूर्ण विकास हो जाने पर स्वराज्य का पूरा लाभ जनता को मिल सकेगा।

विशेष—देशवासियों की स्थिति में सुधार न होने तक दिनकर ने स्वरा के युद्ध को शेष माना है। तत्सम एवं खड़ी बोली की शब्दावली तथा गेयता द्रष्ट है।

(2) वह संसार - - - - - - - - - - - - **स्वराज? (पृ. 102-103)**

शब्दार्थ—अन्तस्तल=हृदय। लज्जावसन=लज्जा ढकने के लिए वस्त्र क्षीर=दूध। अकाज=बेरोजगार।

व्याख्या—कवि कहता है कि हमारे देश में अभी तक कई ऐसे क्षेत्र हैं ज अभी तक स्वराज्य रूपी सूर्य की किरणों का प्रकाश नहीं फैला है, अभी तक कई स्थान हैं जहाँ का क्षितिज वीरानी के कारण मौन है और जहाँ का आका अभी भी अन्धकार पूर्ण एवं निराशाओं से घिरा हुआ है। ऐसे गरीब जनता निवास-स्थान अर्थात् निम्न वर्ग के लोगों की बस्तियाँ हैं, पिछड़े क्षेत्रों के ग्राम जिनमें इतने करुणापूर्ण दृश्य दिखाई देते हैं, ऐसे पीड़ित एवं अभावग्रस्त लो

ाई देते है जिन्हें देखकर हृदय करुणा से काँपने लगता है। हमारे देश में ऐसे गरीब लोग हैं, जिनमें माताओं को अपनी लज्जा ढकने के लिए वस्त्र उपलब्ध हैं और अबोध बच्चों को दूध नहीं मिलता है। ऐसे क्षेत्रों में चारों ओर र-बेरोजगार (लोगों को देखकर आश्चर्यचकित होकर हमारा समाज पूछ रहा क स्वराज्य को मिले तो कई वर्ष हो गये, परन्तु वह अभी तक गरीब जनता के नहीं पहुँचा। वह स्वराज्य बीच रास्ते में कहाँ अटक गया है?

विशेष—देश के पिछड़े क्षेत्रों एवं निम्न वर्गों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश कर उन्हें स्वराज्य का लाभ न मिलने पर आक्षेप किया गया है। देश के धारों को इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए और समस्या का समाधान करने में नशील रहना चाहिए।

(3) अटका **कहाँ** - - - - - - - - - - - - **महाव्रज** टूटेगा। (पृ. 103)

व्याख्या—कवि दिनकर कहते हैं कि स्वराज्य का फल गरीब जनता को ना चाहिए परन्तु उन्हें नहीं मिल रहा है। यह बड़ी सोचनीय तथा दुःख की है। इसलिए कवि देश की राजधानी दिल्ली से पूछता है, कि अरी दिल्ली, ाज्य बीच रास्ते में कहाँ अटक गया है,इस सम्बन्धामें तू ही हमें कुछ बता ती है। इस सम्बन्ध में तू क्या कहती है? देश की रानी अर्थात् स्वराज्य को ने वाली राजधानी तू बन गई है, परन्तु जनता को अभी तक वेदना क्यों ी पड़ रही है तुझ ने ही सारे देशवासियों के भाग्य अपने हाथ से दबा रखे हैं। हों वर्षों के बाद भारत स्वतन्त्र आकाश से जो आजादी की रोशनी अथवा सुन्दर त्त धरती पर उतरी थी, वह आज किस घर में बन्दिनी बन गई है, तुम बताओ कहाँ रोक दी गई है? इसलिए जब तक भारत के प्रत्येक गरीब-असहाय ्वार या घर में आजादी का प्रकाश नहीं पहुंचता है, इसे बन्दीगृह से सच्ची ् नहीं मिलती है, तब तक स्वतन्त्रता संग्राम अधूरा ही है। अगर तुम इस बात नहीं बतलाओगी तो तुझ पापिनी पर क्रान्ति का महावज्र टूट पड़ेगा।

विशेष—भारत की राजधानी दिल्ली को लक्ष्य कर शासन-तन्त्र में उच्च पर आसीन अधिकारियों और राजनेताओं पर आक्षेप किया गया है। गरीब ता को स्वराज्य का लाभ न मिलने में इन लोगों का बहुत बड़ा दोष है। स्वार्थ भ्रष्टाचार ने स्वराज्य को अपने घर में बन्दी बना लिया है। भाषा ओजस्वी प्रवाहपूर्ण है।

(4) **समर शेष** - - - - - - - - - **बह जायेंगे**। (पृ. 103)

शब्दार्थ—न्यास=धरोहर। सत्वर=शीघ्र। मग=रास्ता।

व्याख्या—देशवासियों का आह्वान करते हुए कवि दिनकर कहते हैं कि स्वराज्य प्राप्ति का युद्ध शेष है, इस स्वराज्य को हमें सत्य बनाना होगा। यह तभी पूरा हो सकता है, जब हम इसे उन लोगों तक शीघ्र पहुँचा दें, जिनकी यह धरोहर है। धरोहर को लौटाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। लेकिन इस ाज्य की धारा के मार्ग में अनेक बाधक तत्व पर्वतों की तरह खड़े हुए हैं, वे मार्ग को रोक रहे हैं। इसलिए कवि आक्रोश और उत्साह के साथ कहता है

कि मार्ग में जो इन्द्र (स्वार्थी पूंजीपतियों एवं साम्राज्यवादियों) के हाथी स्वराज्य धारा को रोकने के लिए अड़े हुए है, उन्हें कह दो कि वे मार्ग से हट जायें। अ वे हट जायेंगे तो बहुत ही यश पायेंगे, परन्तु यदि वे नहीं हटते है तो वे बाध तत्व रूपी ऐरावत पत्तों की तरह जन-गंगा की धारा में आसानी से बह जायेंगे।

विशेष—(i) पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों को स्वराज्य की धारा त जनगंगा के पथ में बाधक पर्वत एवं हाथी बताया गया है। इन्हें अवरोधक न बन की चेतावनी दी गई है। कवि का समाजवादी दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है।

(ii) प्रतीक एवं उपमान योजना प्रशस्य है। शब्दावली भावानुरूप है।

(5) **समर शेष** - - - - - - - - - - - - - - - जंजीर। (पृ. 103)

शब्दार्थ—ज्योतियों=प्रकाश पुंज। खण्ड-खण्ड=टुकड़े।

व्याख्या—कवि उद्बोधन एवं आह्वान के ओजस्वी स्वर में कहता है कि अभी स्वराज्य की वास्तविक प्राप्ति के लिए चलने वाला युद्ध शेष है, अर्था स्वतन्त्रता संग्राम अभी पूरा नहीं हुआ है। इसलिए जन गंगा को अर्थात् जनता क ओजस्वी भावनाओं को खुलकर लहराने दो। इस जनगंगा की तीव्र धारा साम्राज्यवादियों के बड़े-बड़े महल डूब जाने दो और सामन्तवादियों वैभव-विलास के सूचक कीमती मुकुट भी बह जाने दो। हम जनगंगा को लह कर समाज में ऊँचे-नीचे तथा पथरीले टीलों को पाट देंगे, अर्थात् समाज में व्याप विषमता को समाप्त कर देंगे। हम सामाजिक जीवन में समता स्थापित किये बिन तथा समतल को पाटे बिना स्वाधीनता-संग्राम की भूमि को नहीं छोड़ेंगे। इसलि हे देशवासियो अभी समर शेष है, तुम सब समता स्थापित करने वाले प्रकाश-पु रूपी तारों को बरसाते रहो, जिनसे समाज में व्याप्त विषमता रूपी काली जंजी के टुकड़े-टुकड़े होकर वह धरती पर गिर जाये, अर्थात् समाज से विषमता समाप्त हो जाये।

विशेष—(i) समता की स्थापना और विषमता की समाप्ति के लिए किया गया आह्वान कवि की मानवतावादी एवं राष्ट्रवादी चेतना का परिचायक है।

(ii) प्रतीक योजना, उपमान-विधान एवं भावानुकूल शब्दावली के प्रयोग के साथ कविता की तुकान्तता और गेयता प्रशस्य है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि ने धनुष की डोरी ढीली करने का विरोध क्यों किया?

उत्तर—युद्ध की स्थिति न होने पर धनुष की डोरी ढीली की जाती है। कवि का कथन है कि अभी जनता को वास्तविक स्वराज्य नहीं मिला है, इस कारण स्वराज्य प्राप्त करने के लिए चलाया गया युद्ध अभी बाकी है। अतः कवि ने धनुष की डोरी को ढीली करने का विरोध व्यक्त किया है।

प्रश्न 2. "तड़फ रहा आँखों के सामने भूखा हिन्दुस्तान।" इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—स्वतन्त्रता प्राप्त हुए इतने वर्ष बीत गये, परन्तु अभी भी हमा पिछड़े क्षेत्रों, ग्रामीण इलाकों और निम्न वर्ग के लोगों की रोटी की समस्या हे ों हुई है। देश की अस्सी प्रतिशत आबादी इन्हीं लोगों की है जो कि भूख के कार हैं। इसलिए कवि ने हिन्दुस्तान को भूखा कहा है।

प्रश्न 3. "जन-जन देख अकाज।" का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इसका आशय है, सारे देश में बेरोजगारी की समस्या व्याप्त है। ज देश के हर साधारण व्यक्ति के सामने बेकारी-बेरोजगारी है और सर्वत्र इस मस्या से लोग अत्यधिक परेशान हैं।

प्रश्न 4. स्वतन्त्रता के प्रकाश को मुक्त करवाने के लिये क्या किया जाना क्षित है?

उत्तर—स्वतन्त्रता के प्रकाश को मुक्त करवाने के लिए हमें निर्धन वर्ग, म्न वर्ग तथा पिछड़े हुए लोगों की दीन दशा का समाधान करना चाहिए। अपने श से विषमता एवं आर्थिक शोषण को समाप्त करना चाहिए तथा समतावादी माज की स्थापना कर सभी का जीवन-स्तर ऊँचा उठाना चाहिए। पूँजीपतियो, मान्तवादियो, साम्राज्यवादियो और भ्रष्ट स्वार्थी तत्त्वो का पूर्ण विरोध करके देश समता की स्थापना करने से जनता स्वतन्त्रता के प्रकाश को मुक्त करा सकती है।

प्रश्न 5. "और नहीं तो तुझ पर पापिन महावज्र टूटेगा।" इस पंक्ति में हवज्र टूटने से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इसमें कवि ने संकेत किया है कि अगर समय रहते सभी को वराज्य का प्रकाश नहीं मिला, अगर समाज से विषमता समाप्त नही हुई, तो एक एक दिन अवश्य ही जन-क्रान्ति होगी। इस क्रान्ति से उन लोगों का विनाश ोगा, जो स्वतन्त्रता के प्रकाश पर एकाधिकार जमाये हुए हैं। अतः इस पंक्ति में हावज्र टूटने से कवि का आशय जन-क्रान्ति घटित होना है।

प्रश्न 6. "इस स्वराज्य को सत्य बनाना होगा"—इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इसका आशय यह है कि वास्तविक स्वराज्य तभी माना जा सकता है, जब देश के निम्न तथा पिछड़े वर्ग को इसका लाभ मिले। अभी तक स्वतन्त्रता का लाभ केवल शहरी सम्पन्न वर्ग को ही मिला है। स्वराज्य को सत्य बनाने के लिए जन-जन तक इसका लाभ पहुँचना चाहिए।

प्रश्न 7. "समर शेष है जनगंगा को खुलकर लहराने दो।" जनगंगा को खुलकर लहराने को कवि ने विशेष महत्त्व क्यों दिया?

उत्तर—जनगंगा अर्थात् देश की समस्त जनता जब खुलकर वास्तविक स्वराज्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेगी, तो इससे सामाजिक विषमता एवं असमानता समाप्त हो जायेगी और सभी को स्वराज्य प्राप्ति का पूरा लाभ मिल

सकेगा। हमारे समग्र राष्ट्रीय जीवन में समता स्थापित करने के लिए कवि ने जनगंगा को खुलकर लहराने को विशेष महत्त्व दिया है। ऐसा होने पर ही जन-क्रान्ति होगी तथा सामन्तवादी-साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का अन्त होकर सच्चा समाजवाद आ सकेगा।

प्रश्न 8. "ज्योतियों के तीर" तथा "विषमता की काली जंजीर" का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–देश में आम जनता को स्वराज्य का लाभ पहुँचाने के लिए नवीन क्रान्ति की आवश्यकता है। यह क्रान्ति मानवतावादी दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। कवि ने इस मानवतावादी क्रान्ति को ज्योतियों के तीर कहा है और हमारे सामाजिक जीवन में व्याप्त विषमता को काली जंजीर कहा है। तीर से जंजीर के टुकड़े-टुकड़े किये जा सकते हैं, इसी प्रकार जन-क्रान्ति से आर्थिक-सामाजिक विषमता समाप्त की जा सकती है।

प्रश्न 9. विषमता की जंजीर को तोड़ने के लिए किन-किन प्रयासों की आवश्यकता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–हमारे राष्ट्र में विद्यमान विषमता की काली जंजीर को तोड़ने के लिए सर्वप्रथम जन-क्रान्ति की आवश्यकता है। इसके द्वारा समाज के गरीब, पिछड़े हुए, बेरोजगार एवं असहाय लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारी जाये और समाज में धन का इस तरह वितरण हो कि कोई अभावग्रस्त न रहे। सभी लोग समान रूप से अपनी उन्नति करें और परस्पर सह-अस्तित्व की भावना विद्यमान रहे। शोषण, उत्पीड़न, अन्याय एवं वर्ग-भेद को समाप्त करके पूर्णतया मानवतावादी विचारधारा के अनुसार ऐसे अनेक प्रयास किये जायें, जिनसे देश में व्याप्त विषमता समाप्त हो सके।

प्रश्न 10. "तड़प रहा आँखों के सामने भूखा हिन्दुस्तान।"
इस पंक्ति का मूलभाव कौनसा है?

उत्तर–(4) आक्रोश।

प्रश्न 11. कविता में आये हुए 'पर्वत' और 'गज' के लिए कौनसा प्रतीक उपयुक्त नहीं रहेगा?

उत्तर–(3) किसान।

9. शिवमंगलसिंह 'सुमन'

कविता परिचय–'सुमनजी' की प्रस्तुत 'दीपावली' कविता में भारतीय जन-जीवन में प्रचलित राम-कथा और दीपावली के प्रसंग को नये सन्दर्भ में निरूपित किया गया है। राम कृषि-सभ्यता के युग के प्रतिनिधि थे, उनके प्रयासों से ही कृषकों को उनके श्रम का पूरा लाभ मिलने लगा, जिसकी प्रसन्नता दीपावली के रूप में उस काल से निरन्तर अभिव्यक्त की जा रही है।

(1) तुम मनाते - - - - - - - - - - - सड़न सी। (पृ. 106)

शब्दार्थ—अमा=अमावस्या। मृत्तिका=मिट्टी। क्लिन्न=दुःखी।

व्याख्या—श्री शिवमंगलसिंह सुमन दीपावली का परिचय देते हुए कहते हैं जिसे तुम लोग आज 'दीपावली' का उत्सव कहकर मनाते हो, यह कोई नयी निराली प्रथा नहीं है। यह तो पुरानी परम्परा है। दीपावली का प्रकाश फैलाते ने पर भी आज भी अमावस्या की काली रात रहती है और नये निर्मित मिट्टी पात्र (दीपक आदि) स्नेह (तेल या मानव स्नेह) से खाली दिखाई देते हैं। अर्थात् पावली मनाने से मानव-कल्याण का मार्ग प्रशस्त नहीं हो पाया है, प्राकृतिक यति भी वही पहले जैसी है।

कवि कहता है कि आज समाज में गरीब किसानों के ओठ सूखे हुए हैं, ल पिचके हुए और आँखें एकदम दीन व नेत्रगर्तों में लीन हैं। उनके वेदनाग्रस्त न निरन्तर छटपटाते रहते हैं, उनके घायल पंख विच्छिन्न पड़े रहते हैं। सारे नव-समाज में मुर्दानी का अर्थात् अत्यन्त उदासी का वातावरण छाया हुआ है, र्वत्र धुएं की घूमती हुई घुटन-सी व्याप्त है। जगह-जगह आज ऐसी बदबू फैली ई है कि मानो कोई बहुत बड़ा शव सड़-गल रहा हो। आशय यह है कि वर्तमान मय में सामाजिक व्यवस्था समाप्त हो गई है और मानव-जीवन का वातावरण कदम सड़न एवं बदबू से भर गया है। इस कारण आज दीपावली का उत्सव नाने से कोई प्रयोजन नहीं रह गया है।

विशेष—कवि का आक्रोश ओजस्वी भाषा में व्यक्त हुआ है। शब्द-चयन र प्रभावान्विति श्रेष्ठ है।

(2) युगों पहले - - - - - - - - - बिछलती थी। (पृ. 106-107)

शब्दार्थ—यायावरों=एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमने वाली जातियों। नाकी=शिव। ज्या=प्रत्यञ्चा।

व्याख्या—कविवर सुमन दीपावली का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करते ए कहते हैं कि आज से अनेक युग पहले एक समय ऐसा आ गया था कि इस रती पर चारों ओर अन्धेरा हो गया था। सूर्य, चन्द्रमा और सभी तारे सहसा छप गये थे और सहसा सवेरा भी खो गया था। तब एक काला हाथ प्रातःकालीन षा की लालिमा को दबाकर समग्र प्रकाश को समाप्त करने लगा था। आशय यह कि उस समय इस सृष्टि में जो घटित नहीं होना चाहिए था, वह घटित हो या था और न चाहते हुए भी सर्वत्र अन्धकार फैल गया था।

कवि कहता है कि वह ऐसा समय था, जब कृषि-सभ्यता का नया दौर ारम्भ हुआ था और राम उस कृषि-सभ्यता के युग का सूत्रपात करने वाले थे। स समय जो जातियाँ एवं कबीले यायावरों की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान पर रन्तर चलते रहते थे, वे समूह रूप में एक स्थान पर बसने और अपनी गृहस्थी माने लग गये थे। उस समय झोपड़ियों में अर्थात् सामान्य जन-जीवन में मानव

सभ्यता का दीपक प्रकाश फैलाने लग गया था और धरती की पुत्री सीता एव आदर्श राम की विवाहिता पत्नि बनकर आ गई थी। अर्थात् कृषि-सभ्यता के उस युग में उत्पादन का एकमात्र साधन धरती थी और सभी लोग कृषि-कार्य को प्राथमिकता देते थे। इसी से उनके जीवन की खुशहाली थी।

कृषि-सभ्यता के उस काल में राजा जनक ने स्वयं धरती जोती थी अर्थात् स्वयं हल चलाया था और स्वयं बीज बोया था। इसी क्रम में एक दिन उनके हल की नोंक में धरती के अन्दर से खोयी हुई लक्ष्मी की तरह एक लड़की उलझकर बाहर निकली थी, अर्थात् हल की नोक से उलझ कर धरती के गर्भ से सीता प्रकट हुई थी। वह पराक्रम और बाहुबल का युग था, पराक्रमी के साथ स्वयंवर के रूप में युवतियों का विवाह-सम्बन्ध सम्पन्न होता था। इसलिये सीता के विवाह का स्वयंवर रचा गया और उसमें यह शर्त रखी गई कि शिवजी के धनुष पर जो प्रत्यंचा चढ़ायेगा, उसी को धरती की पुत्री सीता वरमाला पहनायेगी। इस तरह स्वयंवर-सभा में सीता वरमाला लेकर चलती थी, जोकिं अँधेरे में स्वर्णिम प्रकाश बिखेरती हुई स्वर्णिम दीपक की चलायमान लौ जैसी शोभा पा रही थी।

विशेष—ऐतिहासिक-पौराणिक कथानक को सरलता से चित्रित किया है।

(3) गड़ा धन पा - - - - - - - - - होती थी। (पृ. 107)

शब्दार्थ—ज्योतिष्क=चमकते हुए। तमस=अन्धकार।

व्याख्या—कवि कहता है कि वह कृषि सभ्यता का युग ऐसा था कि चारों ओर खेती ऐसी लहलहाती थी और इतना अनाज उत्पन्न होता था कि मानव मानो धरती से गढ़ा धन पा गया था। खेतों में गेहूँ अत्यधिक मात्रा में उपजता था, मक्का भी भरपूर मात्रा में होता था, अरहर की खेती सरसराती थी और बाजरा खूब खिलाता था, सरसों-अलसी की खेती आँखों को अच्छी लगती थी और जौ तथा ज्वार भी पर्याप्त रूप में उत्पन्न होती थी। इस प्रकार सभी प्रकार का अनाज उस युग में अत्यधिक उग आता था।

अधिक अनाज एवं कृषि पैदावार की उपज से किसान प्रसन्न होते थे, तब प्रत्येक घर-घर में दीपों का यह नया त्यौहार अर्थात् दीपावली जगमग करती थी। सभी लोग आपस में स्नेह-भाव से मिलते थे और नयी-नयी धुन में मंगल गीत गये जाते थे। उस युग में न केवल मानव-समाज में हंसी-खुशी थी, अपितु सर्वत्र प्रकृतिक वातावरण में भी मस्ती थी। हवा, बड़ी नदियाँ, छोटी नदी, झरने आदि में अनुपम गति थी। कली, भौंरा, पेड़ एवं लता आदि सभी में यौवन ही यौवन था, अर्थात् सर्वत्र उमंग और उल्लास का वातावरण रहता था।

कवि कहता है कि उस युग में नये चमकते हुए ग्रह-नक्षत्रों के सम्मुख अन्धकार की एक भी नहीं चलती थी। उस समय समाज में रोग व्याधि का कोई भी दुष्प्रभाव नहीं था। सामाजिक जीवन में विषमता, दीनता, करुणा, भूख आदि का कोई अस्तित्व नहीं था और जनता के सम्पन्न और समृद्ध जीवन को देखकर,

ीपावली के उत्सव का प्रकाश देखकर इन सामाजिक बुराइयों के ह
ोती थी। आशय यह है, उस युग में विषमता, शोषण आदि सामाजि
हीं थी और सर्वत्र उल्लास और समृद्धि छायी रहती थी।

विशेष—कवि ने कृषि-सभ्यता के युग की सामाजिक दशा का सुन्दर चित्र उभारा है। भाषा प्रवाहपूर्ण, कविता की गेयता एवं नाद सौन्दर्य श्रेष्ठ है।

(4) कि जो जग - - - - - - - - जाता था। (पृ. 107-108)

शब्दार्थ—ध्वंस=विनाश। जल-प्लावन=बाढ़। नन्दिनी=पुत्री। दहल कर=घबरा कर। बन्दिनी=कैदी।

व्याख्या—कृषि-सभ्यता युग का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि उस काल में जब समाज में विषमता, वेदना, करुणा आदि को कोई जगह नहीं मिली, तो यो सब मानो ईर्ष्यावश संसार को रुलाने के लिए पापी रावण को बुला लायी। अत्यधिक नीच कार्य करने वाले, क्रूर निर्दयी और विध्वंस मचाने वाले रावण को ये बुरी प्रवृत्तियाँ इस तरह बुला लायीं, जिस तरह कि हरी-भरी खेती और आबादी में जल की विनाशकारी बाढ़ आ जाती है। वह दुष्ट रावण ऐसा क्रूर कार्म करने वाला था कि जिसने सभी का शोषण एवं उत्पीड़न कर संसार को भयभीत करते हुए स्वयं के लिए सोने की लंका बनायी थी। उसने हजारों घर उजाड़े थे अर्थात् लोगों को वह अनावश्यक पीड़ित एवं भयभीत करता रहता था और स्वय दीवाली की तरह खुशियाँ मनाता था। उसने अपनी सोने की लंका में जो चमकते हुए स्वर्ण-कलश लगाये थे, वे गरीबों की कमाई का शोषण करके बनाये गये थे। अन्य सामान्य लोगों की तो बात ही क्या, स्वयं यमराज उसके दरवाजे पर बन्दी बनकर अनेक जुल्म सहता रहता था। वह ऐश्वर्य-भोग-विलास वाले देवताओं को जिस तरह रखना चाहता था, उसी तरह वे सभी मजबूरन रहते थे। उस पापी रावण ने करोड़ों शवों के ढेरों पर अर्थात् अत्यधिक हिंसा एवं रक्तपात करके अपना राजसिंहासन बनाया था।

जिस रावण के घमण्ड से घबरा कर सभी लोग जिसको दस सिरों वाला (दशानन या दशशीश) कहते थे अर्थात् उसका सिर तो एक ही था, पर घबराहट में लोग उसे दशशीश कहते थे। उसका इतना प्रबल आतंक था कि लोग उसकी दो भुजाओं को बीस भुजाएं कहते थे। उस समय हवाएँ भी उससे घबराती थीं, समुद्र भी उसे देखकर थरथराता था और उसे देखकर खड़ी खेती को भी पाला मार जाता था। अर्थात् उसके अत्याचारों से समस्त चर-अचर जगत अत्यन्त पीड़ित था।

(5) धरा को कैद - - - - - -- - - -- - कहते थे। (पृ. 108)

शब्दार्थ—धरा=धरती। प्रवासी=घर से बाहर रहने वाले।

व्याख्या—वह रावण इस धरती को कैद करके भी आराम या शान्ति से नहीं रह सकता था, अर्थात् वह बहुत असन्तोषी और दम्भी था। दूसरी ओर मनुष्य भी उसके इस क्रूर शोषण को बहुत दिनों तक नहीं सह सकता था। इस तरह स्वयं

अन्याय ने अर्थात् रावण के अत्याचारों ने पीड़ित को दलित से मिलाया था, अर्थात् श्रीराम को अपने भाई से उत्पीड़ित सुग्रीव से मिला दिया था, विभीषण को भी उनसे मिला दिया था। तब प्रवास में रह रहे राम ने रावण के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह का बीड़ा स्वयं उठाया था।

कवि कहता है कि उस समय इस नये संघर्ष की शक्ति धरती ने जगाई थी और उस रावण का मुकाबला करने के लिए राजा दशरथ या राजा जनक की कोई सेना नहीं आयी थी। अर्थात् रावण के विरुद्ध संघर्ष करने वाले सभी साधारण लोग थे, वे सब कृषि-सभ्यता से जुड़े हुए थे। वे लोग ऐसे थे कि सुबह से शाम तक राक्षसों के अन्याय सहते रहते थे, जिन्हें सब लोग जंगली जीव या बन्दर और भालू कहते थे।

विशेष—रीछ और बन्दरों की सेना को कृषि-सभ्यता से जुड़े लोगों का वनवासी समूह बताया गया है। मानव-सभ्यता के विकास की कहानी की ओर संकेत हुआ है।

(6) उधर भी - - - - - - - - - - - - - - दिवाली थी। (पृ. 108)

शब्दार्थ—दुर्धर=अत्यन्त तीव्र; वश में न होने वाले। जर्जर=टूटी-फूटी, पुरानी। भर्सिया=शोक गीत।

व्याख्या—राम और रावण की सेना की स्थिति का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि रावण की सेना अनेक दुर्धर अर्थात् वश में न होने वाले यन्त्र-आयुधों से संगठित थी, जबकि इधर राम की सेना ऐसी थी कि जिनमें बन्दर भालू हाथों से केवल पेड़-पत्थर लेकर शत्रु दल को हुँकार रहे थे। राम की सेना के पास वैसे अचूक हथियार नहीं थे, परन्तु उनके हृदय में एक आदर्श था कि स्वयं जीओ और दूसरों को भी सम्मान से जीने दो तथा जरूरत पड़ने पर पुरानी जर्जर सामाजिक व्यवस्था को स्वयं मिटकर मिटाने की प्रबल आकांक्षा एवं संकल्प रखो। इस आकांक्षा के अनुसार ही राम की सेना अपनी शक्ति प्रदर्शित कर रही थी।

इस युद्ध में युगों की साधना की तरह शक्ति-बाण को जब राम ने छोड़ा था, तो वह ऐसी शक्ति थी जिसने किसी पुरानी जर्जर व्यवस्था की पुरानी और विकट चट्टान को तोड़ दिया था। उस शक्ति-बाण से कटे हुए सिर की तरह रावण धरती पर छटपटाता हुआ पड़ गया था। उस पापी एवं अत्याचारी रावण की मृत्यु पर पुराना युग शोक गीत गा रहा था और नया युग आनन्दोल्लास के गीत गा रहा था।

इस प्रकार अन्यायी रावण का अन्त होने पर तथा श्रीराम की बनवास की अवधि पूर्ण होने पर अयोध्या में नये युग को बुलाने की उत्सुकता व्याप्त थी और उसी निमित्त वहाँ स्वागत की जो सजावट हुई थी उससे पहली दीवाली का उत्सव सजा गया था। आशय यह है कि उसी समय से दीपावली के उत्सव का शुभारम्भ हुआ और वनवास से लौटने पर श्रीराम के स्वागत में लोगों ने पहली बार दीपावली मनायी थी।

विशेष—ऐतिहासिक प्रसंग को नवीन सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत किया गया है। भाषा ओजगुण प्रधान एवं व्यंजनात्मक है।

(7) आज तुम - - - - - - - - - है जवानी। (पृ. 10

शब्दार्थ—विगत=बीते हुए। विरानी=परायी।

व्याख्या—वर्तमान कालीन प्रसंग को लक्ष्य करके कविवर सुमन बतलाते हैं कि आज हम दीपावली मनाने की उस पुरानी प्रथा को केवल दुहरा रहे हैं, आज इस उत्सव में निहित भावना के अनुसार घर-घर में स्नेह-व्यवहार नहीं है और आज जन-जन में उस पवित्र प्रकाश-पुंज का बल भी नहीं है। आज तो दीपावली के स्नेह-दीपक विवश होकर बुझते जा रहे हैं। अर्थात् वर्तमान काल में दीपावली मनाने का मूल उद्देश्य समाप्त हो गया है और यह केवल परम्परा-निर्वाह रह गया है।

यह दीपावली आज बीते हुए युग की खण्डहर के अवशेषों की तरह निशानी मात्र है। आज के मानव दीपावली के इस ऐतिहासिक आख्यान को स्वप्न की कहानी की तरह मान लेते हैं। यह हमारी पुरानी परम्परा की निशानी आज हमें एकदम परायी लग रही है।

लेकिन आज समाज में जन-जागृति बढ़ती जा रही है, हमारे सामाजिक जीवन में नयी चेतना फैल रही है, इससे अब नयी आकर्षक बत्ती फिर जल उठेगी और सर्वत्र मंगलमय प्रकाश फैलेगा। आज दीपावली के दीपक जल रहे हैं और हम सबकी जवानी भी नवीन चेतना से जागृत हो रही है।

विशेष—कवि ने वर्तमान युग में सामाजिक जीवन में व्याप्त नव-चेतना का संकेतात्मक चित्रण किया है। शब्दावली प्रवाहपूर्ण एवं भावाभिव्यक्ति वर्ण्य-विषय की दृष्टि से प्रशस्य है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाये।

उत्तर—(1) दाल न गलना—जनता की जागरूकता से अब भ्रष्टाचार करने वालों की दाल नहीं गल रही है।

(2) सिर धुन कर रोना—ओले पड़ने से खड़ी फसल का जो नुकसान हुआ, उसे देखकर किसान सिर धुन कर रोने लगे।

(3) हवा उड़ना—पुलिस की अनावश्यक डाँट-डपट से किसी भी भोले आदमी की हवा उड़ जाती है।

(4) पाला मार जाना—अक्सर खेती को पाला मार जाता है।

(5) बीड़ा उठाना—समाज-सुधार का बीड़ा उठाना कोई सरल काम नहीं

प्रश्न 2. "चमकते स्वर्ण-कलशों में गरीबों की कमाई थी" इस पंक्ति में निहित विचार को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इस पंक्ति में कवि ने रावण को साम्राज्यवादी, सामन्तवादी तथा शोषण करने वालों का प्रतीक बताकर यह विचार प्रकट किया है कि उसकी लंका में जो सोने के कलश लगे हुए थे, वे गरीबों की कमाई का शोषण करके लगाये गये थे। इसमें कवि की प्रगतिवादी विचारधारा व्यक्त हुई है।

प्रश्न 3. "कारवाँ यायावरों का बस रहा था, जम रहा था।" इस कथन के प्रकाश में बताइये कि रामकालीन कृषि-युग से पूर्व भारत में कौन-सा युग चल रहा था?

उत्तर—इतिहासवेत्ताओं के अनुसार रामकालीन कृषि-युग से पूर्व भारत में प्राग्-ऐतिहासिक पाषाण-युग चल रहा था और अधिकतर मानव सभ्यता पर्वत-कन्दराओं में निवास करती थीं।

प्रश्न 4. जग को रुलाने के लिए रावण को बुला लाने का कार्य किन शक्तियों ने किया?

उत्तर—विषमता, दैन्य, करुणा, भूख आदि ऐसी शक्तियाँ थीं, जो जग को रुलाने के लिए रावण को बुला लाई थी। मानव-सभ्यता का विनाश करने वाली, प्राकृतिक आपदाओं—बाढ़, अकाल आदि को लाने वाली तथा साधारण जनता का शोषण करने वाली जो राक्षसी प्रवृत्तियाँ थीं, वे ही रावण को बुला लाई थीं।

प्रश्न 5. प्रस्तुत कविता के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि सुमनजी आशा और आवेश के कवि हैं।

उत्तर—श्री शिवमंगलसिंह 'सुमन' प्रगतिवादी काव्य-धारा के गायक कवि हैं। उनकी कविताओं में अपने समाज में व्याप्त रूढ़ियों और विषम वातावरण के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त हुआ है। वे समाज में व्याप्त विषमता, अन्याय एवं शोषण के प्रबल विरोधी तथा मानवता के पक्षधर हैं। इस कारण उनकी कविताओं में आशा और निराशा का स्वर, आक्रोश और आवेश की अभिव्यक्ति साथ-साथ मिलती है। प्रस्तुत 'दीपावली' शीर्षक कविता में उन्होंने राम-कथा को नये रूप में उपस्थित कर बतलाया है कि उस समय कृषि-सभ्यता का प्रसार हो रहा था, परन्तु रावण ऐसा सामन्तवादी-साम्राज्यवादी था कि उसने हर तरह से सबका शोषण-उत्पीड़न किया। उसके भय से भूलोक और देललोक भी काँपता था। सोने की लंका उसके शोषण और अन्याय की प्रतीक थी। इसलिए कवि ने इस प्रसंग में सामन्तवादी एवं शोषणकारी प्रवृत्तियों के प्रति ओजस्वी शब्दावली में आक्रोश प्रकट किया है। साथ ही भावावेश में आकर स्पष्ट कहा है कि आज हम 'दीपावली' का उत्सव केवल पुरानी प्रथा का निर्वाह करने के लिए मना रहे हैं, आज हम इसमें निहित लोक-हित की भावना को भूल गये हैं। हमें इस बात का अवश्य ही चिन्तन करना चाहिए। कवि के इस तरह के भावों से स्पष्ट हो जाता है कि वे आशा और आवेश के कवि हैं।

प्रश्न 6. 'एक काला हाथ ऊषा की ललाई धो गया था।" इस पंक्ति के भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—प्रतीकात्मक रूप में कवि ने बतलाया है कि रामकालीन कृषि-सभ्याता के युग में रावण एक ऐसा अत्याचारी शासक था, जिसने इस धरती की खुशहाली को अपने कठोर हाथों से नष्ट कर दिया था। उसने सारे भूलोक में अन्याय, अत्याचार तथा उत्पीड़न का ताण्डव मचा रखा था। इस कारण उससे सभी लोग भयभीत थे, ऋषि-मुनि भी त्रस्त थे और देवता उसके करदाता थे। उसने सब की खुशियाँ छीन रखी थीं।

प्रश्न 7. कवि ने किन आधारों पर यह कहा है कि "आज भी जग में अमा की रात काली?"

उत्तर—आज भी मानव-सभ्यता में शोषण, उत्पीड़न, सामन्तवाद एवं साम्राज्यवाद अपना अस्तित्व बनाये हुए है। इससे सामान्य जनता का जीवन व्यथा-वेदना से घिरा हुआ है, गरीब जनता की खुशियाँ नष्ट हो गई है, विषमता एवं शोषण का बोलबाला है तथा भ्रष्टाचार से लोगों में निराशा छाई हुई है। इन्हीं सब स्थितियों को देखकर कवि ने कहा है कि आज भी संसार मे अमावस्या की काली रात विद्यमान है। खुशहाली की प्रतीक दीपावली का प्रकाश तो आज एकदम लुप्त हो गया है।

प्रश्न 8. दीपावली के त्यौहार को प्रगतिवादी कवि ने जो नया मोड़ दिया है, उससे आप कहाँ तक सहमत हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

उत्तर—हम कविवर सुमन के इस प्रगतिवादी चिन्तन से सर्वथ सहमत हैं। किसानों को उनकी फसल का पूरा लाभ मिले, गरीबों का शोषण न हो, सभी का जीवन खुशहाल रहे और जनता में परस्पर स्नेह-भाव रहे, यही दीपावली के त्यौहार का मूल लक्ष्य या उद्देश्य रहा है। प्राचीन काल में रावण जैसी आसुरी शोषक शक्ति पर राम द्वारा विजय प्राप्त करने और जन-भावनाओं का आदर करने के लिए दीपावली का आयोजन किया जाता था। उस आयोजन में परस्पर प्रेम और कल्याण-भावना रहती थी। आज भी इसी तरह की भावना आवश्यक है, तभी दीपावली को मनाना सार्थक रहेगा। कवि की यह प्रगतिवादी विचारधारा व्यापक लोक-हित की दृष्टि से उचित है।

प्रश्न 9. "आज तुम दुहरा रहे हो प्रथा केवल" कवि के ऐसा कहने का आधार क्या है?

उत्तर—हमारे देश में आज भी प्रतिवर्ष दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है, परन्तु अब लोगों में वह पहले जैसा प्रेम-भाव एवं जन-कल्याण का भाव नहीं रह गया है। केवल प्रथा का निर्वाह होता है, यही प्रधानता रह गई है। गरीब, दलित एवं पीड़ित लोगों के कल्याण का चिन्तन कोई नहीं करता है तथा सर्वत्र शोषण का चक्र चलता रहता है। इससे सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन की खुशहाली नष्ट हो गई है।

प्रश्न 10. धरा की बेटी मनुज की ब्याहता बन आ गई थी—

उत्तर—(1) राम की पत्नी सीता।

प्रश्न 11. "आज जन-जन में नहीं है ज्योति का कण"
इस पंक्ति में ज्योति शब्द का प्रासंगिक अर्थ क्या है?

उत्तर—(3) कर्त्तव्य-भावना।

10. अज्ञेय

कविता परिचय—अज्ञेय की संकलित प्रथम कविता 'बावरा अहेरी' में सूदित होते हुए सूर्य को बावला शिकारी का रूपक देकर उससे संसार की अन्य चीजों के साथ मन के कालुष्य को मिटाने के लिए कहा गया है। द्वितीय कविता 'नदी के द्वीप' में मानवीकरण शैली में नदी को माता और द्वीप को पुत्र बताकर सुन्दर भावों की अभिव्यक्ति की गई है।

बावरा अहेरी

(1) भोर का बावरा - - - - - - - - - हरा देगी। (पृ. 112)

शब्दार्थ—अहेरी=शिकारी। आलोक=प्रकाश। परे वे=पक्षी। पुष्पिता=खिली हुई। तन्वि=पतली।

व्याख्या—कवि प्रातःकालीन उदय होते हुए सूर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि प्रातःकाल का बावला शिकारी (सूर्य) पहले तो प्रकाश के लाल-लाल कणों या दोनों को फैलाता है और फिर अपने उस किरण-समूह रूपी जाल में सभी छोटी-बड़ी चिड़ियों को एक साथ खींचकर बाँध लेता है। आशय यह है कि शिकारी पहले तो जाल फैलाकर ऊपर से अनाज के दाने बिखेरता है तथा उसके बाद जाल को दूर से ही खींचकर उस पर बैठने वाली सभी छोटी-बड़ी चिड़ियों को फाँस लेता है। सूर्य रूपी शिकारी भी अपनी किरणों से इसी तरह का कार्य करता है। वह मध्यम आकार के पक्षियों को, बड़े-बड़े डैनों वाले पक्षियों को, विशाल आकार के डील-डौल एवं बेडौल उड़ते हुए जहाजों को चमकाने-फँसाने लगता है। वह बावला अहेरी (सूर्य) मन्दिर के ऊपरी शिखर पर लगे हुए कलश-त्रिशूल से लेकर तार घर की छोटी, मोटी एवं चिपटी तथा गोल आकार वाली उपयोग सुन्दरी रूपी चिमनी की खूबसूरत आकृति को अपने किरण-जाल में फाँस लेता है, अर्थात् इन सब वस्तुओं पर प्रातःकालीन सूर्य की किरणें प्रकाश बिखेरने लगती हैं। इस तरह सूर्य प्रातःकालीन वातावरण को, सन्ध्याकालीन धूल के समान उठने वाले रजकणों को, मोटरों से उठने वाले धुएँ को भी और दूर पार्क के किनारे पर फूलों से खिली हुई कर्णिकार की प्रकाश-पूर्ण पतली सी शरीराकृति को तथा दूर कचरा जलाने वाली खाद के कारखाने की धुएँ को शीघ्रता से उगलने वाली चिमनियों को भी अपनी किरणों से आलोकित कर देता है। उस समय

रखाने की चिमनियों का उठता हुआ धुआँ ऐसा प्रतीत होता है कि
। सूर्य रूपी बावले शिकारी को हराने के लिए ही इतनी शीघ्रता से
रें उठ रहा है।

विशेष—कवि ने सूर्य को शिकारी के रूप में प्रस्तुत कर प्रातःकाल के कृतिक दृश्य के लिए सुन्दर कल्पना की है। वह शिकारी बावला है, इस कारण हर किसी को अपने जाल में फाँसता रहता है। कविता की भाषा ल-प्रवाहपूर्ण, मुक्त छन्द की गेयता और नूतन प्रतीक-विधान प्रशस्य है।

(2) कुछ अवध्य - - - - - - - उमड़ आये। (पृ. 112-113)

शब्दार्थ—आखेट=शिकार। कलौंस=कालुष्य, मलिनता। शिरा=नश या नी। अनी=नोंक। दूह=मिट्टी का ढेर।

व्याख्या—कवि सूर्य को सम्बोधित कर कहता है कि अरे बावले शिकारी! लिए कुछ भी अवध्य नहीं है, अर्थात् तू सभी का वध कर सकता है। तेरे लिए सभी चीजें शिकार हैं। परन्तु मेरे हृदय में उमड़ने-घुमड़ने वाली एक कालिमा कालुष्य ऐसा है अर्थात् हृदय की मलिनता ऐसी है जो छिपी हुई रहती है। तू सका शिकार किये बिना क्या चला ही जायेगा? तुम इसका शिकार नहीं कर पा हो, इसलिए मैं अपने हृदय के सारे दरवाजे खोल देता हूँ, ले तू इसका भी कार कर ले। मेरे इस पीड़ित अतएव खण्डहर जैसे कृश शरीर की धमनियों को पनी किरण रूपी नुकीली छुरी से छेद दे और इस मलिनता के सारे गद को स्त करके इसे मिट्टी का ढेर बना दे। अरे शिकारी, तू मेरे विफल दिनों की लिख को साफ करके जा, मेरी दृष्टि अर्थात् विचार-धारा को शुद्ध करके जा, दि तुम ऐसा कर सको तो मैं तुम्हें निर्मल दृष्टि और पवित्र मन से देख सकूंगा र इस कार्य के लिए सदा ही तुम्हारी कृतज्ञता मानूँगा।

विशेष—कवि ने सूर्य से अपने हृदय की मलिनता दूर करने का निवेदन कर पनी कमजोरी प्रकट की है। वस्तुतः यह कवि की स्पष्टवादिता है। प्रतीक जना, रूपक, अप्रस्तुत-विधान एवं सरल शब्दावली प्रशस्य है।

नदी के द्वीप

(1) हम नदी के - - - - - - - - - - बने हैं। (पृ. 113)

शब्दार्थ—स्त्रोतस्विनी=नदी। सैकत कूल=रेतीला तट। **अन्तरीप**=जल से वृत्त भू-क्षेत्र।

व्याख्या—**कवि अज्ञेय** कहते हैं कि हम सभी मनुष्य नदी से निर्मित द्वीप हैं, र्थात् हमारा **निर्माण जीवनधारा** रूपी नदी से हुआ है। हम यह नहीं कर सकते थवा हम यह **नहीं चाहते हैं** कि नदी हमको छोड़कर बह जाये, क्योंकि नदी के वाह से ही द्वीप के **आकार** का निर्माण होता है, वही द्वीप को आकार देती है। प के कोण, जलावृत भू-भाग, उभार, रेतीले तट आदि तथा उसकी सब

गोलाइयाँ नदी की धारा ने ही गढ़ी हैं, इस कारण नदी द्वीप की माता है, उसको उत्पन्न करने वाली व बनाने वाली है। इसी से द्वीप का निर्माण हुआ है।

भाव यह है कि जीवन-धारा से मनुष्य का निर्माण होता है, प्रत्येक मानव जीवन-धारा से अलग होना नहीं चाहता है क्योंकि उससे ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जिस प्रकार द्वीप के निर्माण में नदी की धारा को प्रमुख माना जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को बनाने में, उसके व्यक्तित्व को निखारने में जीवन-धारा का अत्यधिक महत्व है।

विशेष—कवि का व्यक्तिवादी दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। रूपक, समासोक्ति तथा प्रतीक योजना के द्वारा जीवन-धारा का महत्व बतलाया है। भाषा सरल एवं भावानुकूल है।

(2) **किन्तु हम - - - - - - - - - - ही बनायेंगे।** (पृ. 113)

शब्दार्थ—प्लावन=तैरना, बहना। सलिल=पानी।

व्याख्या—इसी प्रसंग में कवि कहता है कि हम नदी के द्वीप हैं, हमारा जन्म नदी की धारा के कारण ही हुआ है, इसलिए हम नदी की धारा नहीं हैं, अर्थात् मनुष्य द्वीप है और जीवन धारा है, संसार में जीवन-धारा के कारण ही मानव का जन्म हुआ है। जीवन नदी की धारा की तरह सदा गतिशील है। उसके प्रवाह में मनुष्य ने स्थायी समर्पण किया है। मनुष्य स्थिर है और जीवन-धारा अस्थायी गतिशील है। हम इस धारा के द्वीप ही हैं। नदी बहती है, परन्तु हम बहते नहीं हैं, क्योंकि बहना रेत हो जाना है, अर्थात् मनुष्य का व्यक्तित्व स्थिर रहने से ही निखरता है, यदि व्यक्तित्व स्थिर न रहे; तो उसका जीवन-धारा के साथ लोप हो जायेगा। अतएव यदि हम रेत बनकर जीवन धारा में बह जावें, तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। रेत बनने से हमारे पैर धारा के सम्मुख उखड़ जायेंगे, हम बहने लगेंगे, ढह जायेंगे और निरन्तर धारा के साथ बहते रहेंगे। इससे हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व रेत की तरह चूर्ण-चूर्ण हो जायेगा।

कवि कहता है कि क्या सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के नष्ट हो जाने पर हम नदी की धारा बन सकते हैं? अर्थात् हम नदी की धारा नहीं बन सकते। हम तो नदी की धारा के मध्य में स्थित द्वीप ही हैं। यदि हम जीव-धारा की मार सहन नहीं करेंगे और रेत बनकर नदी के पानी को ही कुछ गंदला करते रहेंगे, तो हम उस पानी को अनुपयोगी ही बनायेंगे। आशय यह है कि मनुष्य रूपी द्वीप जीवन-धारा के प्रवाह मार्ग में आते-जाते रहते हैं। यदि मनुष्य जीव-धारा की मार सह नहीं सकेंगे, तो उनका अस्तित्व नहीं रहेगा तथा जीवन-धारा कलंकित हो जायेगी।

विशेष—(i) जीवन-धारा को नदी और मनुष्य को द्वीप का रूपक देकर यह बतलाया गया है कि जीवन-धारा से ही मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। वही हमें मानव-संस्कारों से युक्त करती है। यदि मनुष्य जीवन-धारा के सामने

स्थिर नहीं रहेगा, तो वह रेत बनकर बह जायेगा। तब उसका अस्तित्व नष्ट हो जायेगा। इसलिए द्वीप की तरह स्थिर रहने पर ही व्यक्ति निखरेगा।

(ii) सम्पूर्ण कविता प्रतीकात्मक है। भाषा-शैली या पद योजना भी प्रतीकात्मक है। व्यक्तिवादी विचारधारा का प्रतिपादन हुआ है।

(3) द्वीप है हम - - - - - - - - पितर है। (पृ. 113-114)

शब्दार्थ—नियति=भाग्य। क्रोड़=गोद।

व्याख्या—कवि अज्ञेय कहते हैं कि हम जीवन-धारा से निर्मित द्वीप हैं और द्वीप बनाना कोई शाप नहीं है, अपितु यह हमारी भाग्य की गति है। हमारा निर्माण एवं विध्वंस नदी की धारा की तरह ही होता है, यही हमारी नियति है, फिर भी हम नदी के पुत्र हैं और जैसे बच्चा माँ की गोद में बैठा रहता है, वैसे ही हम भी नदी की धारा के मध्य में स्थित रहते हैं। वह नदी की धारा हमें समीप के बड़े भूखण्ड से जब चाहे मिला लेती है। हमारी आकृति का निर्माण यद्यपि नदी द्वारा होता है, परन्तु समीप का बड़ा भूखण्ड हमारा अपना पितर अर्थात् वंश-परम्परा का पूर्व-पुरुष है।

आशय यह है कि जीवन-धारा से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्तित्व अच्छा हो या बुरा, यह जीवन धारा पर निर्भर करता है। फिर भी मानव-समाज जीवन धारा का पितर है।

विशेष—(i) जीवन-धारा के द्वारा व्यक्तित्व में जो परिवर्तन होते रहते हैं, उसे कवि ने उसकी नियति बतलाया है।

(ii) कविता में प्रतीकात्मक एवं अप्रस्तुत योजना अत्यन्त आकर्षक है।

(4) नदी तुम बहती - - - - - - - - - - - - - तुम। (पृ. 114)

शब्दार्थ—स्वैराचार=स्वच्छन्द आचरण। दाय=पैतृक सम्पत्ति का उत्तराधिकार। अतिचार=मर्यादा का उल्लंघन। काल-प्रवाहिनी=प्रलयकाल की नदी।

व्याख्या—कवि जीवन-धारा को माता बताकर उसके संस्कारों से व्यक्तित्व का निर्माण मानता है। इसी प्रसंग में नदी और द्वीप का रूपक लेकर कवि कहता है कि जीवन-धारारूपी नदी सदा बहती रहे और भूखण्डरूपी पिता से द्वीप को जो पैतृक सम्पत्ति मिली है, वह मिलती रहे। नदी सदा ही द्वीप का संस्कार करती रहे। परन्तु यदि कभी जीवनधारा रूपी नदी का उल्लास भावना से या दूसरों के किसी स्वच्छन्द आचरण से या दूसरों के अत्याचार-मर्यादा उल्लंघन से नदी में बाढ़ आ जावे और नदी का प्रवाह घरघराता हुआ बहने लगे तो द्वीपों के कर्मों और यश का नाश करता प्रलय का प्रवाह बन जाए, तो हमें द्वीपों की वह स्थिति भी स्वीकार है, क्योंकि उस प्रलय-काल में हमारा नाश हो जायेगा और हम रेत के रूप में बदल जायेंगे। फिर वही रेत धारा से छनकर एक जगह ढेर के रूप में जम जायेगी, जिससे कालान्तर में पुनः नये रूप में द्वीप का निर्माण होगा। अर्थात् जीवन-धारा के प्रवाह में मनुष्य बह भी जाये, तो आगे चलकर उसके व्यक्तित्व का नये ढंग से निर्माण हो जाता है। इसलिए जीवन-धारा व्यक्ति में नवीन संस्कारों को जन्म देती

है। अन्त में द्वीप कहता है कि हे नदी माता! तुम विपरीत स्थिति में भी हम नवीन व्यक्तित्व का संस्कार प्रदान करती रहना।

विशेष–(i) भूखण्ड को पिता और नदी को माता बताकर द्वीप को उन पुत्र की तरह निवेदन करते हुए चित्रित किया गया है। द्वीप का संस्कार नदी क धारा करती है; उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जमाती है। इसी तरह मानव के व्यक्तित्व का निर्माण जीवन-धारा करती है।

(ii) भूखण्ड, द्वीप, नदी आदि प्रतीकात्मक प्रयोगों से मानव-व्यक्तित्व को परिभाषित करने की चेष्टा की गई है। प्रतीकात्मक शैली में प्रतिपाद्य विषय का सूक्ष्मतम चित्रण किया गया है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्न शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

उत्तर–

कलौंस	–	कालुष्य
त्रिसूलें	–	त्रिशूल
धुआं	–	धूम्र
कलस	–	कलश
पितर	–	पितृ

प्रश्न 2. निम्न शब्दों के अर्थ बताइए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–**विवर**–छेद या बिल। बाँध की दीवार में एक विवर से जल रिस रहा था।

दूह–मिट्टी का ढेर। ध्वस्त खण्डहर कालान्तर में दूह बन जाते हैं।

अन्तरीप–जलावृत भू-भाग। गोवा अन्तरीप भारत का एक भाग है।

सैकत-कूल–रेतीला तट। गंगा का सैकत-कूल रमणीय लगता है।

कर्मनाशा–कर्मों का नाश करने वाली। जीवन-धारा कर्मनाशा होती है।

अतिचार–आचरण का उल्लंघन। सभ्य नागरिक अतिचार नहीं करते हैं।

प्रश्न 3. "बावरा अहेरी" कविता में कवि ने "उपयोग सुन्दरी" किसे कहा है और क्यों?

उत्तर–यहाँ तारघर की चिमनी या पत्र-पेटिका को 'उपयोग-सुन्दरी' कहा है, क्योंकि इससे जनता की सेवा की जाती है; अर्थात यह जनता के उपयोग की वस्तु है।

प्रश्न 4. कवि "बावरा अहेरी" का किसलिए कृतज्ञ होना चाहता है?

उत्तर–कवि अपने हृदय में छिपे हुए कालुष्य को मिटाने या नष्ट करने की प्रार्थना करके बावरा अहेरी से कहता है कि यदि तुम इसका शिकार कर दो, तो मैं तुम्हारा कृतज्ञ होऊँगा।

प्रश्न 5. "बावरा अहेरी" की उस पंक्ति को ढूँढकर लिखिए जिसका अर्थ है : फूलों से लदी, प्रकाश से नहाई कनेर की कृश काया को।"

उत्तर—पार्क के किनारे पुष्पिता कर्णिकार की आलोक-खची तन्वि रूप-रेखा को।

प्रश्न 6. स्त्रोतस्विनी को द्वीप अपनी माता क्यों मानता है?

उत्तर—द्वीप का निर्माण स्त्रोतस्विनी अर्थात् नदी के द्वारा होता है। जैसे माता पुत्र को जन्म देकर उसके व्यक्तित्व का निर्माण करती है वैसे ही नदी द्वीप को बनाकर उसे आकार-प्रकार देती है। इसलिए द्वीप नदी को अपनी माता मानता है।

प्रश्न 7. 'नदी के द्वीप' कविता का सन्देश क्या है?

उत्तर—प्रस्तुत कविता में अज्ञेय ने रूपक के द्वारा जीवन-धारा को नदी तथा मनुष्य को द्वीप बतलाकर यह सन्देश दिया है कि यद्यपि द्वीप की तरह व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण नदी रूपी जीवन-धारा से होता है, वही हमें अपने संस्कार देती है, परन्तु यदि हम जीवन-धारा के प्रवाह में स्थिर रहें, जीवन-धारा की मार सहन करते रहें, तो हमारा अस्तित्व भी बना रहेगा। लेकिन यदि हम जीवन-धारा की मार सहन नहीं करेंगे, तो हमारा व्यक्तित्व उसी प्रकार नष्ट हो जायेगा, जिस प्रकार नदी के प्रवाह को न सहने वाला द्वीप टूटकर रेत-मिट्टी बन जाता है और वह पानी के साथ बहकर उसे गन्दला करता है। इसलिए हमें द्वीप की तरह स्थिर रहकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए। हमें जीवन-धारा से अपने व्यक्तित्व के उत्कर्ष के लिए अच्छे संस्कार ग्रहण करने चाहिए।

प्रश्न 8. "किन्तु हम बहते नहीं हैं, क्योंकि बहना रेत होना है।" उक्ति के आशय को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—द्वीप कहता है कि हम नदी की धारा से बहते नहीं हैं, यदि हम बह जायेंगे तो रेत-मिट्टी बनकर बहेंगे। इससे हमारा अस्तित्व सदा के लिए समाप्त हो जायेगा, वह रेत की तरह चूर्ण-चूर्ण होकर बिखर जायेगा। इसलिए हम धारा के सम्मुख स्थिरता से डटे रहते हैं। मनुष्य भी अपने व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए तथा उसके अस्तित्व की रक्षा के लिए जीवन-धारा की मार सहता रहता है।

प्रश्न 9. 'नदी के द्वीप' कविता में नयी कविता के कौन-कौन से लक्षण पाये जाते हैं?

उत्तर—नयी कविता में व्यक्तिवादी चिन्तन, वर्तमान से मोह, जीवन से मोह एवं निराशा, व्यंग्यात्मकता एवं नवीन भाव-बोध का समावेश दिखाई देता है। प्रस्तुत कविता 'नदी के द्वीप' में भी व्यक्तिवादी स्वर प्रधान है और नवीन भावों के साथ जीवन के प्रति मोह प्रकट किया गया है। नयी कविता के शिल्प-विधान में कविता की भाषा गद्य की तरह होती है, छन्द का प्रयोग भी नहीं मिलता है, विषय अत्यन्त साधारण होता है परन्तु प्रतीक नये होते हैं।

प्रस्तुत कविता में मुक्त छन्द शैली अपनायी गई है, प्रतीक भी एकदम हैं और भाषा पूर्णतः गद्यात्मक है। इसमें द्वीप और नदी की धारा के लिए बिम्ब और नये शब्द लिये गये हैं। इसकी विषय-वस्तु सामान्य है। इस त प्रस्तुत कविता में नयी कविता की उक्त विशेषताएँ मिल जाती हैं।

प्रश्न 10. 'नदी के द्वीप' कविता के अन्तिम छन्द को ध्यान से पढ़िए बताइए कि क्या कवि ने द्वीपों का पुनर्जन्म माना है?

उत्तर–कवि ने द्वीपों का पुनर्जन्म माना है। नदी की तेज धारा कभी-कभी द्वीप टूटकर बह जाता है और फिर प्रवाह-मार्ग में आगे चलकर मिट्टी कहीं पर एकत्र हो जाती है, जिससे नये द्वीप का निर्माण होता है। इस दृ से देखा जाय तो नदी की धारा ही बने बनाये द्वीपों को बहा ले जाती है और व फिर नये द्वीपों का निर्माण करती है। अतः वह द्वीपों को पुर्नजन्म देती है।

प्रश्न 11.'ले, मैं खोल देता हूँ कपाट सारे'
इस पंक्ति का क्या भाव है?

उत्तर–(3) मैं हर तरह के पूर्वाग्रह से मुक्त हो जाता हूँ।

प्रश्न 12. 'माता उसे फिर संस्कार देना तुम'
इस पंक्ति में माता शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर–(1) नदी की धारा।

11. कन्हैयालाल सेठिया

कविता-परिचय–सेठियाजी की यहाँ तीन कविताएँ संकलित हैं। प्रथम कविता में समय की गतिशीलता का रूपक उपस्थित किया गया है और जीवन सफलता पाने के लिए समय के अनुकूल चलने का सन्देश दिया गया है। द्विती कविता 'इजगर री लीक' में घृणा एवं हिंसा के मार्ग का परित्याग करने तथा सच्चे मार्ग पर चलने का महत्व बतलाया गया है। तृतीय कविता में अकाल की भयंक स्थिति का सजीव चित्रण किया गया है।

समयो

(1) धरती री सांड - - - - - - - - - - चाले। (पृ. 117)

शब्दार्थ–सांड=बैल। आभे=आकाश। मजलाँ=मंजिल। बटाउड़ा=राहगीर।

व्याख्या–कवि समय का सजीव रूपक प्रस्तुत करते हुए बतलाता है कि पृथ्वी रूपी सांड की पीठ पर आकाश रूपी सूखी जीन डालकर समय उस पर सवार हो जाता है। वह सूर्य और चन्द्रमा रूपी पागड़ों में पाँव डालकर ऊँटनी पर चला जा रहा है। वह निरन्तर उसे टिचकारी देता हुआ आर्थात् हौंकता हुआ दिन के ढलने से और रात के समाप्त होने तक अर्थात् रात-दिन निरन्तर चलता ही रहता है। यह समय रूपी सवार कदम पर कदम तथा मंजिल पर मंजिल आगे बढ़ता रहता है और कभी भी विश्राम करने की आवश्यकता महसूस नहीं करता है,

र्थात् बिना थके वह चलता रहता है। सूर्योदय और सूर्यास्त का यह स्वर कारता रहता है कि हे बटोही, थोड़ा-सा रुक जाओ, तुम थोड़ा-सा विश्राम कर , स्वयं पानी पी लो और अपनी सवारी को भी पानी पिला लो परन्तु वह सुनता नहीं है। वह तो अपनी जवानी के मद में अपने रास्ते पर चलता रहता है और छे की आवाज को सुनकर भी अनसुनी कर देता है।

इसका व्यंग्यार्थ यह है कि यौवन के मद में मतवाले युवक समय की वाज नहीं सुनते हैं। वे सन्देश अपनी मनमर्जी से अर्थात् उच्छृंखलता से चलते ते हैं। समय की आवाज न सुनने से उन्हें सफलता नहीं मिलती है।

विशेष—समय को निरन्तर गतिशील बताने के लिए रूपक की योजना त्यन्त चमत्कारी है। अन्त में नव-युवकों को दिया गया सन्देश द्रष्टव्य है। जस्थानी भाषा की चित्रात्मकता श्रेष्ठ है।

इजगर री लीक

मारग को नी - - - - - - - - - - - - नी गेलो। (पृ. 118)

शब्दार्थ—लीक=लकीर या मर्यादा। टाबर=बच्चा। काल=मौत।

व्याख्या—कवि सेठिया घृणा और हिंसा जैसे गलत मार्ग पर चलने वालों सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जिसे तुम रास्ता समझ रहे हो, वह कोई ाला रास्ता नहीं है, यह तो मोटे अजगर की लीक है। अर्थात् अजगर के चलने मिट्टी में जो मोटा रगड़ का निशान पड़ जाता है, उसे तुम मार्ग मानने की भूल करो। इस तरह की भूल करने से तो तुम्हें बाद में विष ही प्राप्त होगा। यह क जहाँ तक गई है, उसके अन्तिम छोर पर बिल में अजगर बैठा हुआ है। ालिए इस लीक पर चलने से मौत ही मिलेगी। इसलिए अरे हिंसा और घृणा के र्ग पर चलने वालो, तुम अच्छी तरह यह सन्देश या आवाज सुन लो। इसलिए इस मार्ग को छोड़कर सच्चे मार्ग पर चलो। उतावलापन दिखाकर गलत रास्ते मत जाओ। अरे पथिक, इस तरह का उतावलापन कोई अच्छा मार्ग नहीं है।

विशेष—कवि ने 'अजगर की लीक' को व्यंग्यार्थ में चित्रित कर यह स्पष्ट या है कि लक्ष्य की प्रप्ति के लिए सही मार्ग का ज्ञान होना चाहिए। बिना वेक और ज्ञान के उतावलापन दिखाने पर संकट का सामना करना पड़ता है। ामें अजगर को हिंसा तथा मर्यादाहीनता का प्रतीक बताया गया है। सरल ब्दावली में भाव-गाम्भीर्य द्रष्टव्य है।

अघोरी काल

फिरे हांडतो - - - - - - - - - - - - ऊछब। (पृ. 118-119)

शब्दार्थ—अघोरी=भयंकर। सगपण=रिश्ते। छोड़ां=खाल। कलपे=दीन दृष्टि देखना, रोना। ऊछब=उत्सव।

व्याख्या—मानवीकरण की शैली में अघोरी अकाल का सजीव चित्रण करते कवि कहता है कि यह अघोरी अकाल सब ओर घूम फिर रहा है। इस अकाल विभीषिका को सुन-देखकर लोग अपने घरों को छोड़कर भाग गये हैं, खेत और व-गुवाड़ आदि सब सूने पड़ गये हैं। इस अकाल के कारण छोटे बालक अपने

माता-पिता से बिछुड़ गये है तथा लोगों के पारस्परिक रिश्ते या मानवीय सम्ब
टूट गये है। अकाल से पीड़ित लोग एक-एक मुट्ठी अनाज की खातिर करुण क्रन्
करते है और बच्चे एक-एक दाने की खातिर जमींदारों के दरवाजों पर भी
मांगने के लिए विवश हो जाते हैं। यह अकाल इतना विकट पड़ गया है कि लो
खेजड़े की छाल खाते हैं और रोते-कलपते अपना जीवन यापन करते है।

कवि कहता है कि इस अघोरी अकाल के कारण ज़ब एक भी अनाज क
दाना नहीं रह गया, तो पक्षी भी उस इलाके से उड़कर कहीं दूर चले गये हैं। घ
में बर्तन आलों में बिना इस्तेमाल किये पड़े रह गये हैं। जिन लोगों को अपने प्राण
से अधिक मोह था, जो मतलबी लोग थे, वे सब अकाल-ग्रस्त क्षेत्र को छोड़क
चले गये है परन्तु जो असमर्थ है वे कहाँ जा सकते है? बेचारे वहीं पड़े हु
अकाल से पीड़ित होकर बड़ी मुश्किल से जीवन यापन करते हैं। चारों ओर अकाल
से पीड़ित लोग निर्जीव से पड़े हैं तथा नंगी भूख का साम्राज्य फैल गया है। मौत के
घर में अकाल के कारण बहुत बड़ा उत्सव मनाया जा रहा है और अघोरी अकाल
सबको खाकर मस्त हो रहा है।

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. हिन्दी पर्याय बताइए।

उत्तर—

सांड	— बैल	पूंन	— ऊँट
बेमाण	— निरन्तर	चनेक	— घोड़ा
बिसांई	— विश्राम	बेंत	— सवारी
इजगर	— अजगर	हेल्यो	— पुकारना
कोनी	— कुछ नहीं	गेलो	— रास्ता
घंड़तो	— काफी	मां वां स्यूं	— माता-पिता से
रिरावे	— करुण पुकार लगावे	बिखो	— अकाल
जुंण	— जीव	अणहेज्या	— अनपयुक्त
लूंठी	— निर्दयी	ऊछब	— उत्सव

प्रश्न 2. 'समयो' कविता में किसके प्रति सम्बोधन है? आरम्भ की छह पंक्तियों के रूपक की व्याख्या करते हुए बताइए।

उत्तर—व्याख्या पहले की जा चुकी है। इसमें कवि ने अस्पष्ट या व्यंग्य रूप में मानव के लिए सम्बोधन किया है। वैसे इसमें समय और यौवन के मतवाले युवकों को स्पष्टतया सम्बोधित किया गया है।

प्रश्न 3. 'इजगर' की लीक का अन्योक्ति अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'इजगर री लीक' कविता में अजगर घृणा और हिंसा का प्रतीक है और उसकी लोक ऐसे मर्यादाहीन मार्ग का प्रतीक है, जिस पर चलने से व्यक्ति तथा समाज का अहित होता है तथा अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है। अजगर की लीक को ही रास्ता मान लेना बड़ी भारी भूल है। गलत रास्ते पर चलने से सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन तो होता ही है, साथ ही ऐसी गलत परम्परा का अनुसरण किया जाता है, जिससे घृणा, हिंसा एवं स्वार्थ का जहर

माज को कमजोर कर डालता है। इसलिए उतावलापन और अविवेक [illegible] रित्याग कर सही रास्ते पर चलने का प्रयत्न करना ही लाभदायक रहता है।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पंक्तियों का आशय व्याख्या भाग में देखिए।

प्रश्न 5. 'काल' को 'अघोरी' क्यों कहा गया है?

उत्तर—काल को इसलिए अघोरी कहा गया है कि इसमें चारो ओर भूख कारण अनेक मौतें हो जाती हैं, पशु-पक्षी भी इसकी चपेट में आ जाते हैं, छोटे च्चे अनाथ हो जाते हैं, वे भीख मांगकर अपनी प्राण रक्षा करते हैं। अकालग्रस्त त्र के लोग वहाँ से भाग जाते हैं, खेत सूख जाते हैं और सर्वत्र वीरानगी छा ाती है और मौत के भयानक दृश्य दिखाई देते हैं। ऐसे अकाल मे मानवीय म्बन्ध टूट जाते हैं। इन सभी कारणों से काल को अघोरी कहा गया है।

प्रश्न 6. दुष्काल का किस पर क्या-क्या प्रभाव चित्रित किया गया है?

उत्तर—प्रस्तुत कविता मे सेठियाजी ने अकाल का प्रभाव किस पर क्या ड़ता है, इसका सुन्दर चित्रण किया है। अकाल के प्रभाव से खेत सूखकर फसल ष्ट हो जाती है। लोग अकालग्रस्त क्षेत्रों से अन्यत्र चले जाते हैं, इसलिए ांव-गुवाड़ सब सूने पड़ जाते हैं। अपने-अपने प्राणो की चिन्ता के कारण मानव ापट स्वार्थी बन जाता है, इससे मानवीय सम्बन्ध टूट जाते हैं। पशु-पक्षी भी काल की चपेट मे आकर अन्यत्र चले जाते हैं। अनाथ बच्चे अपनी भूख को शान्त रने के लिए भीख मागने पर विवश होते हैं और लोग खेजड़े की छाल खाकर ीवित रहते हैं। रसोई घरों मे चूल्हें नही जल पाते हैं और सभी लोग दुष्काल से भावित रहते हैं।

प्रश्न 7. दुष्काल का सबसे अधिक घातक प्रभाव किन पर बताया गया है? ाप उस चित्रण पर क्या मत रखते हैं?

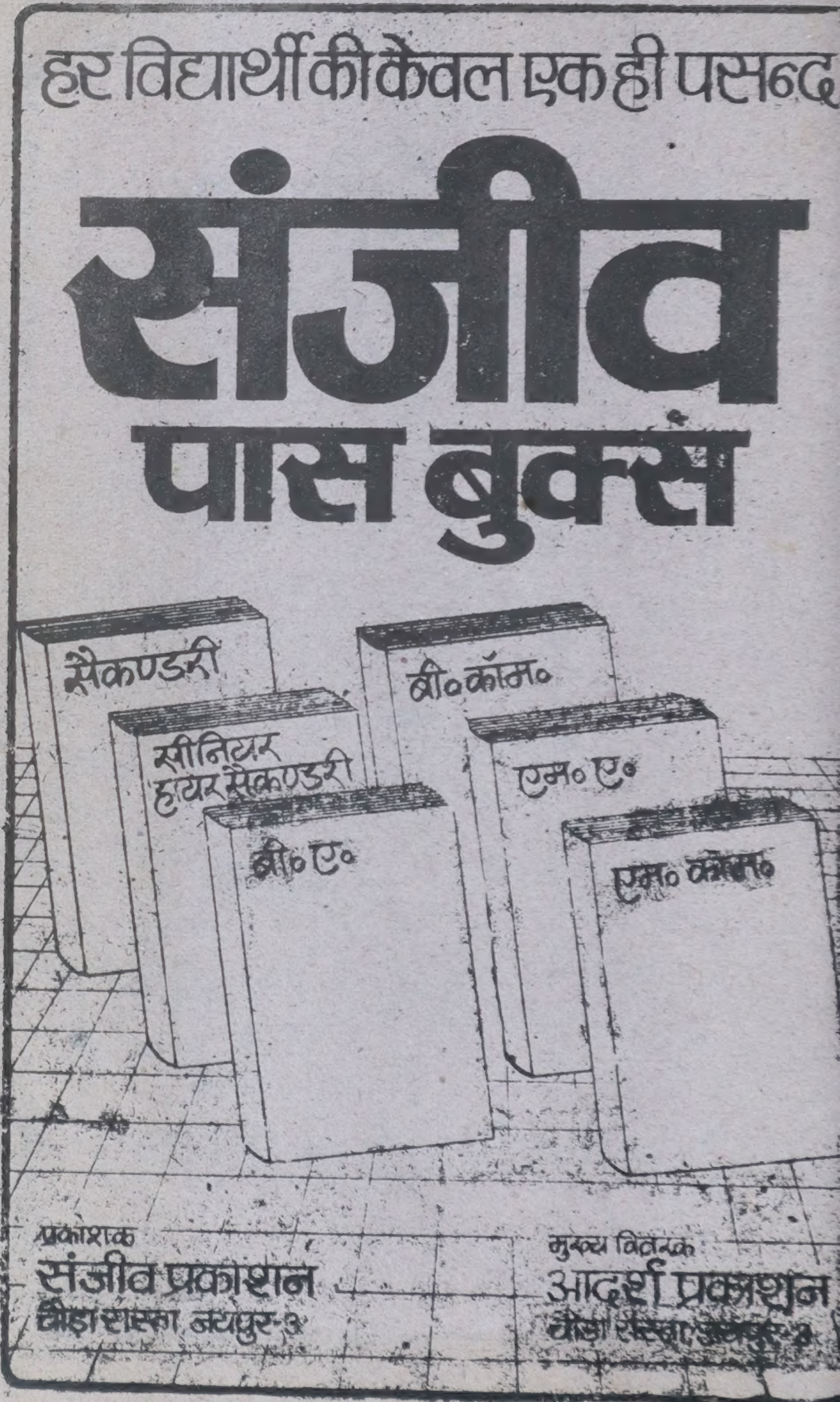
उत्तर—दुष्काल का सबसे अधिक प्रभाव मानवीय सम्बन्धों और छोटे च्चों पर बताया गया है। वस्तुतः अकाल के कारण अत्यधिक भूख से व्यक्ति वल अपने प्राणों की चिन्ता करने लगता है। तब वह निपट स्वार्थी बनकर ऐसे ाम करने लगता है, जिनसे मानवीय सम्बन्ध टूट जाते हैं। अकाल के कारण कई ोटे-छोटे बच्चे अपने माता-पिता से बिछुड़ जाते हैं, वे अपनी भूख मिटाने के ाए भीख मांगने को विवश हो जाते हैं। वे जमीदारों अर्थात् सम्पन्न लोगों के ामने रोते-कलपते हैं और अपनी दीनता प्रकट कर प्राण-रक्षा की याचना करते । इस तरह दुष्काल का सर्वाधिक प्रभाव मानव-सम्बन्धों पर पड़ता है। हम कवि इस मत से पूर्णतया सहमत हैं।

प्रश्न 8. "पण हठीले जोबन रा गैला"
इस पंक्ति में "गैला" शब्द का प्रासंगिक अर्थ क्या होगा?

उत्तर—(3) रास्ता।

प्रश्न 9. "जका बाजता अन्नदाता"
इस पंक्ति में अन्नदाता शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर—(4) जमींदार।


हर विद्यार्थी की केवल एक ही पसन्द
संजीव
पास बुक्स
सैकण्डरी
सीनियर हायर सैकण्डरी
बी० ए०
बी० कॉम०
एम० ए०
एम० कॉम०
प्रकाशक
संजीव प्रकाशन
चौड़ा रास्ता, जयपुर-3
मुख्य वितरक
आदर्श प्रकाशन
चौड़ा रास्ता, जयपुर-3